डॉ. प्रदीप कुमार राव का जन्म 1 मई, 1970 को देवरिया जनपद के नगवाखास गाँव में हुआ। उनकी संपूर्ण उच्च शिक्षा-दीक्षा गोरखपुर में संपन्न हुई। उनका अध्यापन अनुभव 27 वर्ष का है। उन्होंने 12 पुस्तकों का लेखन एवं 9 पुस्तकों का संपादन किया है। साथ ही 14 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में सत्र की अध्यक्षता; 78 राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रतिभाग किया है। 45 से अधिक शोध-पत्र प्रकाशित हुए हैं। सन् 2007 से 'विमर्श' (वार्षिकी) तथा सन् 2009 से 'मानविकी' (अर्द्ध वार्षिकी) शोध-पत्रिकाओं का संपादन कर रहे हैं। साप्ताहिक समाचार-पत्र 'हिंदवी' के संपादक रहे तथा श्री गोरखनाथ मंदिर द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'योगवाणी' के प्रबंध संपादक हैं।

डॉ. राव सात सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं के संस्थापक सदस्य हैं। वे उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारिणी सदस्य एवं दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर की कार्यपरिषद के सदस्य रहे हैं।वे पाँच इंटर कॉलेज, दो डिग्री कॉलेज की प्रबंध समिति के सदस्य तथा तीन सेवा संस्थाओं के प्रबंध कार्यकारिणी के सदस्य हैं। 2005 से महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर के संस्थापक प्राचार्य हैं। संप्रति कुलसचिव, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर, आरोग्य धाम, गोरखपुर।

कुंभ पर अन्य पुस्तकें

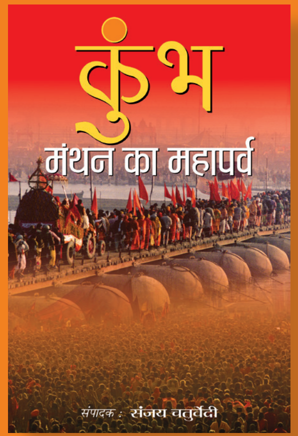

प्रभात प्रकाशन
www.prabhatbooks.com
ISBN 978-93-5562-988-3
₹ 300/-
eBook उपलब्ध
सूची-पत्रों के लिए QR CODE स्कैन करें।

नि:शुल्क सूची-पत्र के लिए 07827007777 पर नाम व पता SMS, WhatsApp करें।

Flat size: 17.5 in x 8.5 in | Finished width: 5.5 in | Spine: .39 in

सनातन परंपरा का महापर्व : महाकुंभ

संपादक : डॉ. प्रदीप कुमार राव

प्र

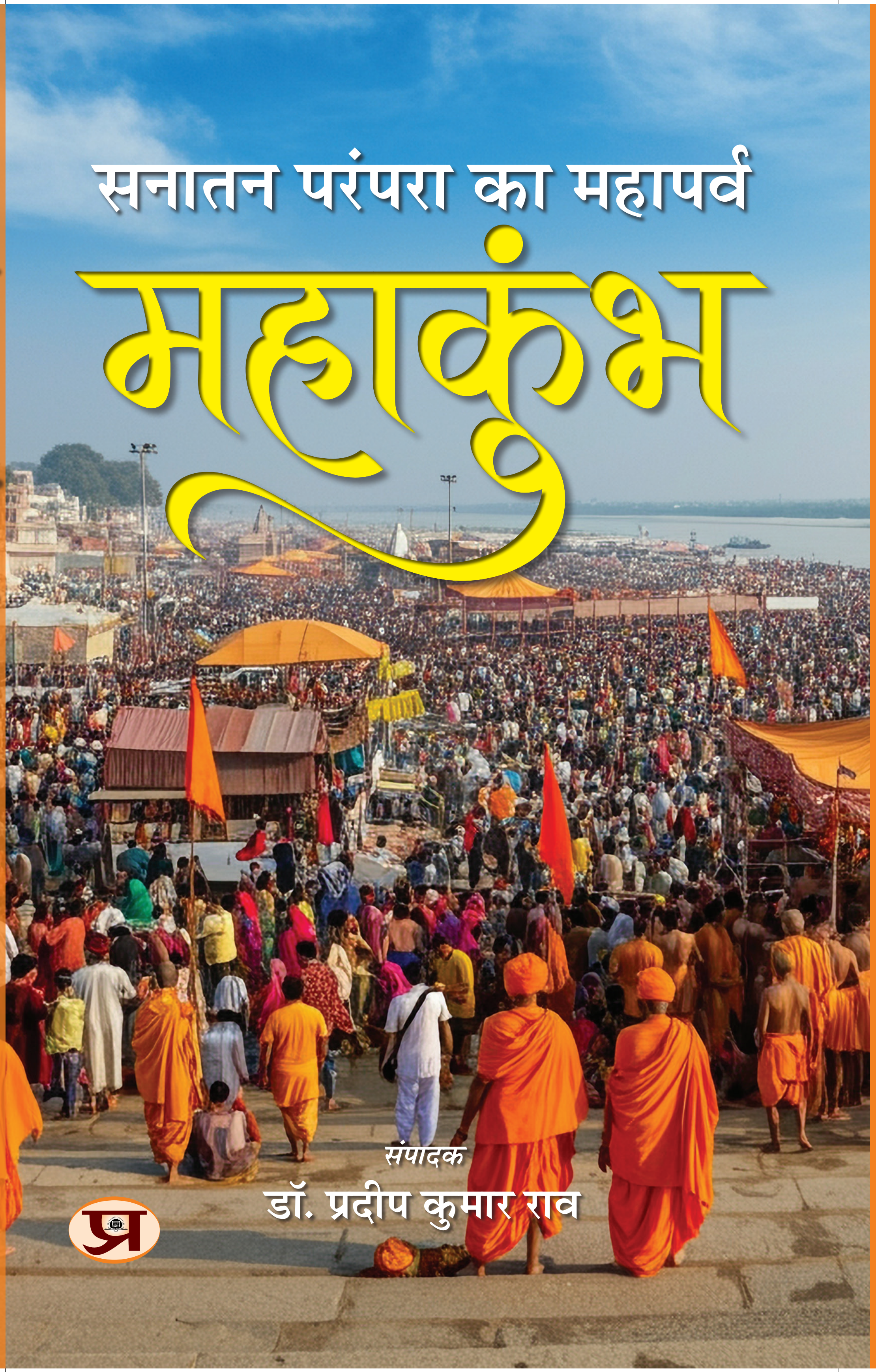

सनातन परंपरा का महापर्व
महाकुंभ

संपादक
डॉ. प्रदीप कुमार राव

महाकुंभ-2025 में अब तक लगभग 44 करोड़ श्रद्धालुओं की पावन डुबकी के साथ 50 करोड़ की संख्या पार करने के अद्यतन अनुमान ने इस महाकुंभ को दुनिया का सबसे बड़ा आयोजन सिद्ध कर दिया है। योगी आदित्यनाथजी महाराज की तपस्यारत योजनाओं, स्वच्छता, सुरक्षा, तकनीक और सुव्यवस्था के कारण महाकुंभ-2025 हमेशा याद किया जाएगा। दिव्य-नव्य-भव्य महाकुंभ सनातन-संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का प्रतीक बना है, किंतु महाकुंभ-2025 जितना अपनी दिव्यता-भव्यता एवं सुव्यवस्था के लिए याद किया जाएगा, उतना ही उत्तर प्रदेश के यशस्वी-तपस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी महाराज के रुँधे गले और उनके आँसुओं के कारण भी याद किया जाएगा। मौनी अमावस्या के अमृत-स्नान पर क्षण भर के लिए घटित उस अनहोनी रूपी विष को पीते हुए जब इस संन्यासी योगी के आँसुओं की दुनिया साक्षी बनी। दुनिया देख रही थी कि राष्ट्र-समाज और विश्व को सनातन-संस्कृति का अमृत-पान कराने में तपस्यारत एक संन्यासी-योगी दिन-रात एक किए हुए था, एक-एक श्रद्धालु की सुविधा की चिंता कर रहा था, संभवत: किंचित् षड्यंत्रों और श्रद्धालुओं की असावधानी से मुख्य अमृत स्नान पर घटित एक अनहोनी से उस संन्यासी-योगी को वह गरल पीना पड़ा, जो समुद्रमंथन की तरह अनायास निकल आया था और भगवान् शिव की तरह लोककल्याणार्थ पीना ही था। यद्यपि सनातन परंपरा के वाहक किसी भी सनातनी ने उसे अनहोनी ही माना और पूज्य योगी आदित्यनाथजी महाराज के आँसुओं को अमृत-बूँद मानकर उसे प्रसाद-स्वरूप ग्रहण कर लिया।

सनातन परंपरा का महापर्व

महाकुंभ

सनातन परंपरा का महापर्व
महाकुंभ

संपादक

डॉ. प्रदीप कुमार राव

कुलसचिव

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रभात प्रकाशन

प्रकाशक
प्रभात प्रकाशन प्रा. लि.
4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
फोन : 011–23289777 • हेल्पलाइन नं. : 7827007777
इ–मेल : prabhatbooks@gmail.com ❖ वेब ठिकाना : www.prabhatbooks.com

संस्करण
प्रथम, 2025

सर्वाधिकार
सुरक्षित

पेपरबैक मूल्य
तीन सौ रुपए

मुद्रक
आर–टेक ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

———— ★ ————

Sanatan Parampara ka Mahaparva MAHAKUMBH
Ed. Dr. Pradeep Kumar Rao

Published by **PRABHAT PRAKASHAN PVT. LTD.**
4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-110002

ISBN 978-93-5562-988-3

₹ 300.00 (PB)

संपादकीय

महाकुंभ 2025
मंथन में गरल और अमृत

15 अगस्त, 2022 को भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी द्वारा भारत के 75वें स्वतंत्रता दिवस पर भारत के अमृतकाल की अवधारणा की घोषणा के साथ 2047 के भारत का खाका खींच दिया गया। आजादी के सौवें वर्ष तक के 25 वर्ष को अमृत-काल के रूप में जब श्री नरेंद्र मोदीजी 'पंच प्रण' के साथ हम भारतीयों को भारतमाता के गरिमापूर्ण वैभव एवं सामर्थ्य युक्त भविष्य की रचना में हाथ बँटाने का आह्वान कर रहे थे, उसी समय से उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी महाराज 144 वर्षों बाद आनेवाले एक अद्वितीय महासंयोग के महापर्व महाकुंभ-2025 की तैयारी प्रारंभ कर चुके थे। 'महाकुंभ-2025' को भारत की अद्वितीय विकास-यात्रा का 'अमृत घट' बनाने की एक सुनियोजित, सुविचारित और दीर्घकालिक योजना का खाका योगी आदित्यनाथजी महाराज खींच रहे थे। समुद्रमंथन रूपी महाकुंभ-2025 से निकले 'विष' को पी लेने और 'अमृत' को लोककल्याणार्थ एवं राष्ट्रहित में बाँट देने का संकल्प लेकर सनातन-परंपरा का ध्वज विश्व में प्रतिष्ठित करने चल पड़े एक संन्यासी-योगी ने जो सिद्ध किया, वह जग-समक्ष प्रत्यक्ष है।

महाकुंभ-2025 में अब तक लगभग 44 करोड़ श्रद्धालुओं की पावन डुबकी के साथ 50 करोड़ की संख्या पार करने के अद्यतन अनुमान ने इस महाकुंभ को दुनिया का सबसे बड़ा आयोजन सिद्ध कर दिया है। योगी

आदित्यनाथजी महाराज की तपस्यारत योजनाओं, स्वच्छता, सुरक्षा, तकनीक और सुव्यवस्था के कारण महाकुंभ–2025 हमेशा याद किया जाएगा। दिव्य–नव्य–भव्य महाकुंभ सनातन–संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का प्रतीक बना है, किंतु महाकुंभ–2025 जितना अपनी दिव्यता–भव्यता एवं सुव्यवस्था के लिए याद किया जाएगा, उतना ही उत्तर प्रदेश के यशस्वी–तपस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी महाराज के रुँधे गले और उनके आँसुओं के कारण भी याद किया जाएगा। मौनी अमावस्या के अमृत–स्नान पर क्षण भर के लिए घटित उस अनहोनी रूपी विष को पीते हुए इस संन्यासी योगी के आँसुओं की दुनिया साक्षी बनी। दुनिया देख रही थी कि राष्ट्र–समाज और विश्व को सनातन–संस्कृति का अमृत–पान कराने में तपस्यारत एक संन्यासी–योगी दिन–रात एक किए हुए था, एक–एक श्रद्धालु की सुविधा की चिंता कर रहा था, संभवतः किंचित् षड्यंत्रों और श्रद्धालुओं की असावधानी से मुख्य अमृत स्नान पर घटित एक अनहोनी से उस संन्यासी–योगी को वह गरल पीना पड़ा, जो समुद्रमंथन की तरह अनायास निकल आया था और भगवान् शिव की तरह लोककल्याणार्थ पीना ही था। यद्यपि सनातन परंपरा के वाहक किसी भी सनातनी ने उसे अनहोनी ही माना और पूज्य योगी आदित्यनाथजी महाराज के आँसुओं को अमृत–बूँद मानकर उसे प्रसाद–स्वरूप ग्रहण कर लिया।

कुंभ के मूल में मंथन है। देवताओं और दैत्यों द्वारा किया गया समुद्र का मथना, जो कि मूलतः अमृत के लिए किया गया था। विष भी निकला और अमृत भी। विष पीकर भगवान् शिव नीलकंठ बने। अमृत कुंभ के लिए दोनों पक्षों में संघर्ष शुरू हो गया। इंद्र का पुत्र जयंत अमृत लेकर भाग रहा था और दैत्य उसे छीनने की कोशिश कर रहे थे। भाग–दौड़ में घड़े से अमृत ही क्यों न हो, छलकना तो स्वाभाविक है। चार जगहों पर छलका भी। आज उन्हीं स्थानों पर कुंभ स्नान पर्व आयोजित होते हैं। अमृत की खोज में। उसके लिए तो देवता तरसते थे, फिर हम मनुष्य क्यों न ढूँढ़ें ? इसलिए इन अवसरों पर सनातन धर्म के अनुयायी भारी संख्या में जुटते हैं और वहाँ के अमृत स्वरूप जल से स्नान एवं आचमन करते हैं।

उत्तर में हरिद्वार, दक्षिण में नासिक, मध्य में उज्जैन और प्रयागराज अर्थात् पूरे आर्यावर्त को एक सूत्र में बाँधने का काम कुंभ मेलों के माध्यम से होता है। सुदूर दक्षिण कुंभकोनम में पाँचवाँ कुंभ भी हर बारहवें साल आयोजित होता है। पूरे आर्यावर्त के आस्थावान इस समय कायिक अथवा मानसिक रूप से इन स्थानों के साथ जुड़ जाते हैं।

समुद्र-मंथन की सामर्थ्य तो मनुष्य में नहीं है, किंतु कुंभ अर्थात् घट और उसी के माध्यम से कुंभ मेले का मंथन तो किया ही जा सकता है। हमारे-आपके घरों में भी तो कुंभ या मटके में दही मथकर नवनीत निकाला जाता है। मस्तिष्क की मथानी से कुंभ-पर्वों का मंथन कर अन्य रत्नों के साथ अमृत निकालने का प्रयास किया जाना सनातन परंपरा की प्रगति का आधार है।

धर्म शाश्वत नियमों के अतिरिक्त समय और स्थान के संदर्भों पर भी आधारित होता है। इनमें समय और स्थान के अनुसार परिर्वतन आवश्यक है। शाश्वत नियमों में यदि समय के साथ विसंगति आ गई है तो उसका परिमार्जन भी करणीय है। कुंभ मेलों में धर्म संसद् का आयोजन होता है, जिसमें धर्म के सामने आ रही चुनौतियों पर धर्माचार्य विचार करते हैं तथा सम्यक् विचार-मंथन के बाद उचित समाधान से धर्मावलंबियों का मार्गदर्शन करते हैं। किसी भी धर्म के लिए यह आत्मशोधन अत्यंत आवश्यक है। सनातन ने इसे आदिकाल में ही जान लिया था, इसलिए तदनुसार हमारे ऋषि-मुनि तथा धर्माधिकारी धर्म में शोधन और प्रक्षालन करते रहे और आज भी कर रहे हैं। प्राचीन काल में नैमिषारण्य में शौनक ऋषि की महाशाला में आयोजित धर्म सभा और वर्तमान में कुंभ की धर्म संसदें धार्मिक पुनर्जागरण और संगठन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। यही कारण है कि समुद्र-मंथन के बाद कुंभ से छलका वह अमृत, प्रतीक रूप में ही सही, सनातन धर्म को अमरत्व के साथ-साथ निरंतर अजरता भी प्रदान किए हुए है।

हर धर्म को समय और स्थान के साथ आई हुई कुरीतियों में संशोधन की आवश्यकता होती है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। उसकी अवहेलना

संभव नहीं है। आज हम सारी यात्राएँ ऊँटों पर नहीं कर सकते। ग्लोबल गाँव के काल में समुद्र पार की यात्रा पर प्रतिबंध भी नहीं लगा सकते। इसलिए यदि कहीं ऐसे नियम हैं तो उनमें संशोधन आवश्यक हो जाता है।

आर्यावर्त एक बहुत विशाल भूभाग पर फैला हुआ है। सनातन धर्म इसकी मूल आत्मा है। धर्मग्रंथ सनातन धर्म और संस्कृति के वाहक हैं। आस्थावान इनसे राष्ट्र के विशाल भूभाग के विभिन्न स्थानों, तीर्थों के बारे जानकारी प्राप्त करते हैं। इससे इन स्थानों के बारे में उनकी जिज्ञासा बढ़ती है, उन्हें देखने और समझने की। कुंभ मेले उन्हें संपूर्ण देश को भौगोलिक एवं सांस्कृतिक रूप से जानने का अवसर देते हैं। प्रयागराज के वर्तमान कुंभ मेले में कश्मीर से कन्याकुमारी, आइजवाल से लेकर द्वारका तक के लोग आए हुए हैं। सभी धर्माधिकारी भी हैं। अर्थात् यहाँ सनातन धर्म के हर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व है। विदेशों का भी। हर क्षेत्र से आए लोग धर्म पर अपनी आस्था और ज्ञान का नवीनीकरण कर रहे हैं। राष्ट्र के भौगोलिक, धार्मिक और सांस्कृतिक तथा सामाजिक विविधताओं का अनुभव एवं अध्ययन कर रहे हैं। केवल मेला क्षेत्र ही नहीं, बल्कि अपने पूरे यात्रा मार्ग वाले भौगोलिक विस्तार के संदर्भ में भी।

कुंभ मेले, उनमें आने वालों की आस्था के साथ उनके धैर्य और संयम की भी परीक्षा लेते हैं। जहाँ एक अपार जनसमुदाय, जो इस बार एक दिन इटली आदि देशों की जनसंख्या से भी अधिक था, कुछ हेक्टेयर क्षेत्र में एकत्र हो एक ही दिन, वह भी सीमित अवधि में स्नान, ध्यान, पूजन आदि करने के लिए कुशल भीड़ प्रबंधन के साथ भीड़ का संयम भी आवश्यक है। यह कुशल व्यवस्था और आपदा प्रबंधन का ही प्रतिफल था कि प्रयागराज के वर्तमान कुंभ मेले में व्यवस्था को त्वरित गति से पटरी पर लाकर बड़ी जनहानि होने से बचाया जा सका।

मंथन अभी बाकी है। अमृत निकलना शेष है, पर जो रत्न अभी तक हाथ आए हैं, उनका संकलन तो कर ही लिया जाए। कुंभ से सनातन धर्म की भौगोलिक और सांस्कृतिक एकता के सुदृढ़ीकरण, धार्मिक एकरूपता

एवं शोधन के संवहन, अति विशाल जनसमुदाय के आतिथ्य एवं सुरक्षा की व्यवस्था की स्थानीय प्रशासकीय क्षमता तथा इस विशाल समूह के धैर्य और संयम की अपूर्व शक्ति रूपी रत्न अभी तक निकले हैं। इस मंथन में कुंभ से अमृत ही निकलेगा। विष को तो महादेव रूपी योगी ने अपने गले में कैद कर रखा है, इसलिए उसके निकलने की कोई संभावना नहीं है।

—डॉ. प्रदीप कुमार राव

माघ पूर्णिमा, 2081
12 फरवरी, 2025

अनुक्रम

संपादकीय—महाकुंभ 2025 : मंथन में गरल और अमृत *5*

1. सर्वसिद्धि प्रद:कुम्भ: ***—योगी आदित्यनाथ*** 13
2. महाकुंभ : परिचय एवं माहात्म्य 22
3. कुंभतीर्थ का माहात्म्य 37
4. महासंयोग का महाकुंभ ***—अजय सिंह • डॉ. प्रदीप कुमार राव*** 66
5. वेदों में कुंभ-पर्व का अस्तित्व एवं महत्त्व ***—डॉ. सोनल सिंह*** 109
6. महाकुंभ के आयोजन में सरकार और मीडिया की भूमिका ***—डॉ. प्रवीण कुमार चौबे*** 117
7. महाकुंभ और सुशासन ***—सुबोध कुमार मिश्र*** 124
8. महाकुंभ में परंपरागत शिक्षा ***—शिप्रा सिंह • प्रो. (डॉ.) शिवशरण शुक्ल*** 132
9. महाकुंभ 2025 : एहसास और अनुभूति ***—अश्विनी कुमार राय*** 145
10. दस नाम नागा संन्यासी परंपरा ***—डॉ. पद्मजा सिंह*** 166
11. महाकुंभ ***—माधव कृष्ण*** 173

सर्वसिद्धि प्रदःकुम्भः

—योगी आदित्यनाथ*

महाकुंभ, भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक चेतना का स्पंदन है। 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत-समावेशी भारत' की दिव्य और जीवंत झाँकी है। बहुपंथीय, बहुसांस्कृतिक, बहुभाषी भारत के ममतामयी अंक में पुष्पित और पल्लवित होने वाला कुंभ, एक मेला अथवा स्नान की डुबकी मात्र न होकर, भारतवर्ष की अनेकता में एकता का शाश्वत और समेकित जय-घोष है। वैभव और वैराग्य के मध्य आस्था का कलरव 'महाकुंभ' सनातन संस्कृति का एक ऐसा महान् पर्व है, जो आस्था एवं परंपरा के पावन प्रवाह में समस्त विभेदों, विवादों और मतांतरों को विसर्जित कर देता है। पृथ्वी पर लगने वाला यह सबसे बड़ा आध्यात्मिक मेला है।

इस बहुप्रतीक्षित मेले में मोक्ष व मुक्ति की कामना के साथ ही तन, मन तथा मति के दोषों की निवृत्ति के लिए करोड़ों श्रद्धालु अपने अहम् और वहम् को विस्मृत कर महान् सनातन संस्कृति की अमृत धारा में स्नान करते हैं। हम सभी को दिव्य-भव्य महाकुंभ प्रयागराज-2025 के साक्षी बनने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है, यह परम सौभाग्य की बात है। पौराणिक शास्त्रें में कुंभ-पर्व की महिमा का गुणगान करते हुए इसके स्नान को समस्त पापों का नाशक एवं अनंत पुण्यदायक बताया गया है। स्कंद पुराण में वर्णित है—

---

* मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश, महाकुंभ-पर्व की पावन तिथि से पूर्व लिखा गया आलेख

सहस्त्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानशतानि च।
वैशाखे नर्मदा कोटिः कुम्भस्नानेन तत्फलम्॥

अर्थात् एक हजार बार कार्तिक मास में गंगा-स्नान करने से, सौ बार माघ में संगम स्नान करने से, वैशाख में एक करोड़ बार नर्मदा-स्नान करने से जो पुण्यफल अर्जित होता है, वह कुंभ में केवल एक बार स्नान करने से प्राप्त होता है। विष्णु पुराण में भी कुंभ-स्नान की प्रशंसा में कहा गया है—

अश्वमेधसहस्त्राणि वाजपेयशतानि च।
लक्षप्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानेन तत्फलम्॥

अर्थात् हजार बार अश्वमेध यज्ञ करने से, सौ बार वाजपेय-यज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की परिक्रमा करने से जितनी पुण्यराशि संचित होती है, उतनी कुंभ में एक बार स्नान करने से प्राप्त होती है।

यह अद्भुत बात है कि न निमंत्रण-पत्र का प्रकाशन होता है, न ही किसी के पास बुलावा भेजा जाता है, न ही आगमन हेतु सामूहिक अनुरोध किया जाता है, लेकिन जब भी महाकुंभ का आयोजन होता है तो स्वतः स्वस्फूर्त भाव से श्रद्धा और भक्ति का जनसिंधु उमड़ पड़ता है। कुंभ का आयोजन हरिद्वार (गंगा तट), उज्जैन (क्षिप्रा तट) तथा नासिक (गोदावरी तट) पर भी होता है, किंतु प्रयागराज कुंभ की विशेष महत्ता है। श्रद्धालुओं को यहाँ तीन पवित्र नदियों के संगम में स्नान करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। वैसे भी प्रयागराज को तीर्थराज की उपमा प्रदान की गई है। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं—"को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ। कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ॥ अस तीरथपति देखि सुहावा। सुख सागर रघुबर सुख पावा॥" अर्थात्—प्रयागराज की महिमा कौन कह सकता है भला? यदि पाप रूपी मदमस्त हाथियों का समूह सबकुछ नष्ट करने पर तुला हो तो सिंह रूपी तीर्थराज प्रयाग उनका वध कर सकता है। ऐसे तीर्थराज का दर्शन कर स्वयं प्रभु श्रीरामचंद्रजी ने भी सुख पाया। ऐसे प्रयागराज में महाकुंभ के आयोजन का सौभाग्य बिना हरिकृपा के नहीं प्राप्त हो सकता है। मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर 'महाकुंभ' को आध्यात्मिकता और आधुनिकता के साथ ही राष्ट्रीय एकता, भारतीय दर्शन

और समस्त सृजन शक्तियों का अद्‌भुत संगम बनाने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। आस्था का अविराम प्रवाह लिये कुंभ मेला पूरी दुनिया के लिए आकर्षण का केंद्र है। आध्यात्मिकता की अनुभूति को प्रगाढ़ करता यह आयोजन ज्योतिष, खगोल विज्ञान, परंपरा, कर्मकांड, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि का संगम है। यह चारों वेदों और सनातन सभ्यता का संगम है। मानवता का अनंत प्रवाह और ऊर्जा का अक्षय स्रोत है।

ध्यान से देखिए, संगम की चमकती रेत पर 'वैभव और वैराग्य' साथ में अठखेलियाँ करते दिखाई पड़ेंगे। न्यूनतम सुविधाओं में रहकर भी अंतर्मन के आनंद को खोजा और संजोया जा सकता है, उससे जीवन की राह बनाई जा सकती है, ये कला कुंभ की पाठशाला में बड़ी सहजता से सीखी जा सकती है। ऐसे अनेकानेक दृष्टांत मिलते हैं, जब अनेक विदेशी श्रद्धालुओं ने यहाँ की आध्यात्मिक रजकणों से अभिभूत होकर अपनी भौतिक संपन्नता को त्याग दिया और भक्ति सागर में लीन हो गए हैं। इसके पीछे का कारण यह है कि भौतिकता हमें प्रभावित तो करती है, किंतु प्रेरित नहीं करती। इसलिए कहते हैं कि 'इंप्रेसिव वर्ल्ड' से 'इंस्पाइरिंग वर्ल्ड' के पथ के पथिक का गंतव्य है महाकुंभ।

भारतीय संस्कृति की समेकित अभिव्यक्ति 'अर्पण, तर्पण और समर्पण' का संगम 'महाकुंभ' स्पिरिचुअल इंस्परेशन के साथ ही सोशल रिफॉर्मेशन का मूवमेंट भी है। तभी तो लोक जीवन में कहा जाता है कि कुंभ सनातन संस्कृति की एकात्मता का अमृत रूपी प्रवाह है, जो अनंत काल से प्रवाहमान है, किंतु आज की आत्मकेंद्रित, सुविधाभोगी, समयाभाव वाली जीवनशैली हमें इसके वास्तविक अमृतपान से वंचित कर रही है। जबकि तीन-चार दशक पूर्व तक साधनों के अभाव में भी श्रद्धालुओं का बहुत बड़ा वर्ग पूरे कुंभ तक रुकता था। यहाँ पूज्य साधु-संत गण, सम्मानित संन्यासी गण, धर्माचार्यों, महामंडलेश्वरों, पूज्य शंकराचार्यों, मनीषी-चिंतकों, ऋषि-मुनियों, दार्शनिकों, वीतरागियों की गरिमामयी उपस्थिति में हमारे जीवन मूल्यों, आदर्शों का नीरक्षीर विवेचन, उनकी प्रासांगिकता पर चिंतन, सामाजिक समस्याओं पर

मंथन होता था। जिससे सामाजिक जीवन को सहज प्रवाह और नूतनता प्राप्त होती थी। चिंतन में जीवंतता बनी रहती थी, जड़ता तो कोसों दूर होती थी। यहाँ से लौटकर लोग अपने गाँव और समाज में कुंभ में हुए विमर्श को साझा करते थे। जिज्ञासु और आस्थावान जनों के आग्रह पर अनेक साधु-संत कुंभ से लौटते हुए उनके गाँवों में ठहरते और प्रवचन करते थे। इस अभ्यास से धर्मानुप्राणित भारतीय लोक चेतना के द्वारा लोकांचलों में निवास करने वाले पठित-अपठित साधारण जनों तक धर्म और संस्कृति के स्वर पहुँचते थे।

कुंभ की अनेक व्याख्याएँ हैं, जैसे भारतीय दर्शन में जीवात्मा को अमृत तथा शरीर को कुंभ कहा गया है। इस शरीर रूपी कुंभ में आत्मा रूपी अमृत-तत्त्व विद्यमान माना गया है। जो पाप-पुण्य, भेद-अभेद, अपना-पराया, मोह-माया से आच्छादित रहता है। आत्मतत्त्व के बोध के द्वारा ज्ञान के अमृतमयी जल से आचमन का सौभाग्य कुंभ है।

महाकुंभ-2025 में लगभग 40 करोड़ श्रद्धालुओं का संगम नगरी में आगमन अनुमानित है। उन्हें सभी संभव बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराना राज्य सरकार की प्राथमिकता है। 12 वर्षों के अंतराल के उपरांत इस वर्ष में आयोजित होने जा रहा प्रयागराज महाकुंभ अब तक के सभी कुंभ-पर्वों के सापेक्ष अधिक दिव्य और भव्य होगा। मानवता की यह अमूर्त सांस्कृतिक विरासत पूरी दुनिया को सनातन भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परंपरा, विविधतापूर्ण सामाजिक परिवेश और लोक आस्था का साक्षात्कार कराएगी।

वर्ष 2019 के कुंभ में कुल 5,721 संस्थाओं का सहयोग लिया गया था, जबकि महाकुंभ में लगभग 10 हजार संस्थाएँ एक उद्देश्य के साथ कार्य कर रही हैं। 4000 हेक्टेयर में विस्तीर्ण 25 सेक्टरों में बंटे महाकुंभ मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं की सुविधा के दृष्टिगत सभी आवश्यक प्रबंध किए जा रहे हैं। 12 किमी. लंबाई के घाट, 1850 हेक्टेयर में पार्किंग, 450 किमी. चकर्ड प्लेट, 30 पांटून पुल, 67 हजार स्ट्रीट लाईट, 1,50,000 शौचालय, 1,50,000 टेंट के साथ ही 25 हजार से अधिक पब्लिक एकोमडेशन की व्यवस्था की जा रही है। पौष पूर्णिमा, मकर संक्रांति, मौनी अमावस्या, बसंत

पंचमी, माघ पूर्णिमा और महाशिवरात्रि के विशेष स्नान पर्व पर सुरक्षा और सुविधा के लिए विशेष कार्ययोजना तैयार की गई है। महाकुंभ जैसे वृहद आयोजन को यादगार बनाने के लिए चार प्रमुख बिंदुओं, यथा—सूचना, स्वच्छता, संचार और सुरक्षा पर होलिस्टिक अप्रोच के साथ प्रदेश सरकार कार्य कर रही है। हर किसी को सही सूचना, पूरे क्षेत्र में बेहतर सैनिटेशन व्यवस्था, सुदृढ़ संचार-तंत्र और सबकी सुरक्षा की सुनिश्चितता हमारी शीर्ष प्राथमिकता है। प्रयागराज, प्रदेश और देश के बाहर से करोड़ों तीर्थयात्रियों का महाकुंभ में आगमन होगा। स्थान, मार्ग, स्थलों आदि से संबंधित सुविधा और मार्गदशर्न के लिए 'महाकुंभ मेला 2025' ऐप की व्यवस्था की गई है। यह ऐप प्रयागराज में घाटों, मंदिरों और प्रमुख धार्मिक स्थलों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान करेगा, ताकि श्रद्धालु और पर्यटक बिना किसी परेशानी के अपने गंतव्य तक पहुँच सकें।

धार्मिक आस्था एवं पर्यटन के लिहाज से महत्त्वपूर्ण प्रयागराज के विभिन्न मंदिरों और पौराणिक स्थलों जैसे अक्षयवट, सरस्वती कूप, पातालपुरी, बड़े हनुमान मंदिर, द्वादश माधव मंदिर, भरद्वाज आश्रम, नागवासुकी मंदिर और श्रृंगवेरपुर धाम का सौंदर्यीकरण और जीर्णोद्धार अंतिम चरण में है। इन धार्मिक स्थलों के सुदृढ़ीकरण के माध्यम से प्रयागराज का पुरातन वैभव भी पुनर्स्थापित होगा। महाकुंभ के पौराणिक महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इस बार मेला क्षेत्र में अमृत कलश की स्थापना की जाएगी। करीब 12 हजार वर्ग फीट भूमि पर अमृत कलश से टपकती बूँद के दृश्य को प्रतिकृति के रूप में प्रदर्शित किया जाएगा। इस भव्य आयोजन को अविस्मरणीय बनाने के लिए नगर की सड़कों, चौराहों, दीवारों के साथ मंदिरों और सेतुओं को भी युद्ध स्तर पर सजाया-सँवारा जा रहा है। इसी क्रम में कुंभ नगरी के पाँच पौराणिक मंदिर माँ अलोप शंकरी देवी मंदिर, श्री शंकर विमान मंडपम् मंदिर, सिविल लाइंस का श्री हनुमंत निकेतन मंदिर, शृंगवेरपुर धाम का शृंगी ऋषि मंदिर और नागवासुकी मंदिर को फसाड लाइटिंग से जगमगाने के लिए व्यवस्था की गई है। पर्यटक और श्रद्धालु रात्रि के समय इन मंदिरों

को कलात्मक, सुसज्जित और भव्य रूप में देख सकेंगे। इससे नाईट टूरिज्म को बढ़ावा मिलेगा। इसके अलावा यमुना किनारे स्थित किले और शास्त्री पुल में भी फसाड लाइटिंग का कार्य हो रहा है। पर्यटन को बढ़ावा देने के दृष्टिगत टेंट सिटी, त्रिवेणी पुष्प, फ्लोटिंग रेस्टोरेंट, वॉटर स्पोर्ट एवं स्पोर्टस कॉम्प्लेक्स आदि भी निर्माणाधीन हैं। रेल भारत की जीवन रेखा है। सुगम, सस्ती, सुविधायुक्त, सुरक्षित यात्र के लिए यात्रियों की प्रथम पसंद है। प्रयागराज महाकुंभ में भी लगभग 10 करोड़ यात्रियों और श्रद्धालुओं के रेलगाड़ियों के माध्यम से पहुँचने का अनुमान है। प्रयागराज के सभी रेलवे स्टेशनों पर लगभग 25,000 यात्रियों के ठहरने के लिए 10 आश्रय स्थलों का निर्माण अंतिम दौर में है। क्राउड मैनेजमेंट को लेकर महाकुंभ रेलवे नोडल डिविजन प्रयागराज मंडल ने रोडमैप तैयार कर लिया है।

प्रदेश सरकार ने श्रद्धालुओं के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए भी पुख्ता इंतजाम किए हैं। विश्व के सबसे बड़े आध्यात्मिक आयोजन में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए 10 लाख ओ.पी.डी. और 10 हजार आई.पी.डी. पूरी तरह तैयार कर ली गई हैं। श्रद्धालुओं के स्वास्थ्य की जाँच के लिए हाईटेक अस्थाई अस्पताल बनाए जा रहे हैं, जिसमें रायबरेली एम्स के चिकित्सकों की टीम भी देखभाल के लिए मौजूद रहेगी। इसी क्रम में प्रयागराज के सभी प्रमुख अस्पतालों को अपग्रेड किया जा रहा है। महाकुंभ में श्रद्धालुओं और पर्यटकों के सुगम आवागमन के लिए शहर की प्रमुख सड़कों का चौड़ीकरण का कार्य अपने अंतिम चरण में है। प्रयागराज शहर की कनेक्टविटी को सुदृढ़ किए जाने हेतु भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग द्वारा प्रयागराज रिंग रोड एवं कई अन्य राजमार्ग तथा रोडवेज एवं ट्रांसपोर्ट हाईवे मंत्रालय द्वारा गंगा नदी में 6 लेन पुल का निर्माण कार्य भी प्रगति पर है। प्रयागराज शहर स्थित बमरौली एयरपोर्ट कनेक्टविटी को सुगम किए जाने हेतु सूबेदारगंज में आर.ओ.बी. एवं फ्लाईओवर तथा एयरपोर्ट रोड का सौंदर्याकरण/सुदृढ़ीकरण किया जा रहा है। सड़कों का चौड़ीकरण, ड्रेनेज सिस्टम, लाइटिंग, और अन्य बुनियादी सुविधाओं का सुदृढ़ीकरण से यातायात सुगम होगा और आने वाले

श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। प्रयागराज महाकुंभ 2025 में आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं और पर्यटकों की सुविधा को देखते हुए कुंभ मेले में कार्यरत ड्राइवर, नाविक, गाईड और ठेला संचालक आदि विशेष तरह के ट्रैक सूट पहने नजर आएँगे। प्रत्येक ट्रैक सूट पर कुंभ और पर्यटन विभाग का प्रतीक चिह्न अंकित होगा। यह संबंधित व्यक्ति की पहचान को दरशाएगा, जिससे किसी भी प्रकार की जानकारी या सहायता में पारदर्शिता बनी रहेगी। इस नई व्यवस्था से मेले में किसी भी प्रकार की अव्यवस्था और यात्री समस्याओं को नियंत्रित किया जा सकेगा। लगभग 2,300 कैमरों द्वारा क्राउड मॉनिटरिंग, क्राउड डेंसिटी एनालिसिस, इंसीडेंट रिपोर्टिंग और स्वच्छता की निगरानी एवं सुरक्षा के दृष्टिगत निगरानी आदि हेतु उपयोग लाया जा रहा है। गत कुंभ मेला 2019 में 1100 कैमरे स्थापित किए गए थे।

अमृतकाल में आयोजित होने जा रहा यह अध्यात्म और आत्म-साक्षात्कार का विशाल महोत्सव, अर्थव्यवस्था के लिए भी 'अमृत' है। महोत्सव से जुड़ी आर्थिक गतिविधियों से विभिन्न क्षेत्रें में लगभग 6,00,000 से अधिक श्रमिकों के लिए रोजगार का सृजन होने की संभावना है। कुंभ में ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, मोरीशस, सिंगापुर, अमरीका, यू.के., श्रीलंका समेत विश्व के अनेक राष्ट्रों से राजनयिक, पर्यटक और श्रद्धालु आते हैं, इसलिए आतिथ्य के क्षेत्र, एयरलाइंस, हवाई अड्डों और ट्रैवेल्स, चिकित्सा और इको-टूरिज्म आदि के क्षेत्र में बड़ी संख्या में रोजगार सृजित होने लगा है। इसके अलावा अनौपचारिक क्षेत्र में हजारों रोजगारों के सृजित होने की आशा है। प्रयागराज महाकुंभ जैसे विशाल जनसमागम से न सिर्फ वेंडर्स, टैक्सी चालक, टूर गाइड, दुभाषिए और पर्यटकों के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर संपर्क में आने वाले सेवा प्रदाताओं की आय बढ़ेगी, बल्कि 45 हजार से अधिक परिवारों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार भी मिलेगा। इसके साथ ही समस्त धार्मिक पर्यटन स्थलों के आसपास भी रोजगार के नए स्रोत विकसित होंगे। निश्चित रूप से प्रधानमंत्रीजी के मार्गदर्शन में

केंद्र सरकार के सहयोग से भव्य-दिव्य प्रयागराज महाकुंभ सुरक्षा, सुविधा और सुव्यवस्था का वैश्विक मानक बनेगा। श्रद्धालुओं तथा पर्यटकों की सुविधा और कुंभ जैसे विहंगम आयोजन की गरिमा के लिए विश्वस्तरीय आधारभूत ढाँचे, सुंदर भवन, उत्कृष्ट तकनीकी सेवाएँ इत्यादि आवश्यक हैं, किंतु महाकुंभ के महात्म्य को जानने के लिए आपको पावन त्रिवेणी के प्रवाहमान जल से साक्षात्कार करना होगा, जिसने बदलते युगों की हर करवट को देखा है। जो सभ्यताओं और इतिहास के उत्त्थान-पतन का साक्षी है।

महाकुंभ की परंपरा हमारी महान् आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत से पुष्पित और पल्लवित हुई है। कुंभ मेला 'सेल्फ डिस्कवरी' का एक बड़ा माध्यम है। यहाँ पधारने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अलग-अलग अनुभूति होती है। यहाँ किसी को अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं तो किसी को जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति का मार्ग मिल जाता है। कोई संस्कृतियों के समुच्चय को देखकर लाहालोट हो जाता है तो कोई सत्य से साक्षात्कार कर उसे प्राणों में प्रतिष्ठित करने लगता है। यहाँ के दिव्य परिवेश के आलोक में कोई अपने सीमित 'स्व' से निकलकर समष्टि के प्रति समर्पित हो जाता है तो कोई आत्म-तत्त्व का बोध कर नारायण रूपी महासागर में व्याप्त अमृत-तत्त्व का पान करता है। विश्व में चल रहे व्यक्तिवाद, उपभोक्तावाद, भौतिकवाद के तेज अंधड़ के मध्य यहाँ सनातन दर्शन 'कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥' का लोक मंगलकारी संदेश 'सहयोग, सहजीवन और सहअस्तित्व' की कालजयी भावना को मजबूती प्रदान करता है।

महाकुंभ इस बात का द्योतक है कि प्राचीनता मात्र संगृहीत ही न हो, अपितु उसका पुर्नसंधान भी हो। प्राचीन काल का केवल गुणगान ही न हो, बल्कि उसकी रचना प्रक्रिया और विचारों को आधुनिक स्वरूप में ढालने की तकनीक पर भी ध्यान हो। दर्शन और विचारों का लोकमंगल के साथ ही लोकरंजक स्वरूप भी हो। समुद्र-मंथन के समय से सभ्यता की अमृत-पान की चिर अभिलाषा कब पूर्ण होगी, यह तो समय ही बताएगा, किंतु सनातन संस्कृति की संपूर्णता, उसकी संप्रभुता और उसकी सार्वभौमिकता के लिए

महाकुंभ एक अमृत रूपी वरदान के समान है। तीर्थराज प्रयाग में महाकुंभ-2025 उसी अमृत-धारा में सराबोर होने के लिए आपका आह्वान कर रहा है। संन्यासियों के सबसे बड़े जूना अखाड़े के संत गणों के शाही अंदाज में संगम नगरी में प्रवेश के साथ ही महाकुंभ-2025 का श्रीगणेश हो गया है।

13 जनवरी, 2025 से 26 फरवरी, 2025 तक कुल 45 दिन चलने वाला यह अध्यात्म और संस्कृति का महाकुंभ मानवता के लिए, विश्व-ग्राम के लिए शांति और सद्भाव का एक नया भोर लेकर आयेगा, इसलिए आध्यात्मिक यात्रा के अनिर्वचनीय अनुभव के लिए, सांस्कृतिक एकता की आनंदमयी अनुभूति के लिए, अतुल्य परंपराओं और युगांतरकारी प्रेरणाओं से साक्षात्कार के लिए, भक्ति, शक्ति और मुक्ति-प्राप्ति की युक्ति के लिए, आस्था, अस्मिता और आनंद के संगम के लिए, साधना, उपासना और आराधना में लीन होने के लिए, सकारात्मकता और आत्मीयता से ओत-प्रोत होने के लिए, स्वयं से संवाद के लिए और पृथ्वी पर सबसे विराट मानव समागम का साक्षी बनने के लिए 'सर्वसिद्धिप्रदः कुंभः', यानी 'सभी प्रकार की सिद्धि प्रदान करने वाला कुंभ' में अवश्य पधारें।

□

महाकुंभ : परिचय एवं माहात्म्य

कुंभ-पर्व के संबंध में भारतीय धर्मग्रंथों में विस्तार से वर्णन मिलता है। वेद, पुराण, उपनिषद् सहित भारतीय धर्मग्रंथ का अनुशीलन महाकुंभ को जानने-समझने के लिए आवश्यक है। ऋग्वेद में कहा गया है—

जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव रुरोज पुरो अरदन्न सिन्धून्।
बिभेद गिरिं नवभिन्न कुम्भभा गा इन्द्रो अकृणुत स्वयुग्भिः॥

(ऋग्वेद 10/89/7)

'कुंभ-पर्व में जानेवाला मनुष्य स्वयं दान-होमादि सत्कर्मों के फलस्वरूप अपने पापों को वैसे ही नष्ट करता है, जैसे कुठार वन को काट देता है। जिस प्रकार गंगा नदी अपने तटों को काटती हुई प्रवाहित होती है, उसी प्रकार कुंभ-पर्व मनुष्य के पूर्व संचित कर्मों से प्राप्त हुए शारीरिक पापों को नष्ट करता है और नूतन (कच्चे) घड़े की तरह बादल को नष्ट-भ्रष्ट कर संसार में सुवृष्टि करता है।'

कुम्भी वेद्यां मा व्यथिष्ठा यज्ञायुधैराज्येनातिषिक्ता।

'हे कुंभ-पर्व! तुम यज्ञीय वेदी में यज्ञीय आयुधों से घृत द्वारा तृप्त होने के कारण कष्टानुभव मत करो।'

युवं नरा स्तुवते पज्रियाय कक्षीवते अरदतं पुरंधिम्।
कारोतराच्छफादश्वस्य वृष्णः शतं कुम्भां असिंञ्चतं सुरायाः॥

(ऋग्वेद 1/116/7)

कुम्भो वनिष्टुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो अन्तः।
प्लाशिर्व्यक्तः शतधारउत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः॥

(शुक्लयजुर्वेद 19/87)

'कुंभ-पर्व सत्कर्म के द्वारा मनुष्य को इहलोक में शारीरिक सुख देने वाला और जन्मांतरों में उत्कृष्ट सुखों को देने वाला है।'

आविशन्कलशँ् सुतो विश्वा अर्षन्नभिश्रियः।इन्दुरिन्द्राय धीयते॥

(सामवेद, पृ. 6/3)

पूर्णः कुम्भोऽधि काल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः।
स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ्कालं तमाहुः परमे व्योमन्॥

(अथर्ववेद 19/53/3)

'पूर्णकुंभ बारह वर्ष के बाद आया करता है, जिसे हम अनेक बार प्रयागादि तीर्थों में देखा करते हैं। कुंभ उस समय को कहते हैं, जो महान् आकाश में ग्रह-राशि आदि के योग से होता है।'

और भी कहा है—

(क) 'चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि।' *(अथर्व. 4/34/7)*

ब्रह्मा कहते हैं—'हे मनुष्यो! मैं तुम्हें ऐहिक तथा आमुष्मिक सुखों को देने वाले चार कुंभ-पर्वों का निर्माण कर चार स्थानों (हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक) में प्रदान करता हूँ।'

(ख) 'कुम्भीका दूषीकाः पीयकान्।' *(अथर्व. 16/6/8)*

भारत के हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक—इन चार स्थानों में कुंभ-पर्व मनाया जाता है। वैसे 'कुंभ' शब्द का अर्थ साधारणतः घड़ा ही है, किंतु इसके पीछे जनसमुदाय में पात्रता के निर्माण की रचनात्मक शुभभावना, मंगलकामना एवं जन-मानस के उद्धार की प्रेरणा निहित है। यथार्थतः 'कुंभ' शब्द समग्र सृष्टि के कल्याणकारी अर्थ को अपने आप में समेटे हुए है—

कुं पृथ्वीं भावयन्ति संकेतयन्ति भविष्यत्कल्याणादिकाय महत्याकाशे स्थिताः बृहस्पत्यादयो ग्रहाः संयुज्य हरिद्वारप्रयागा दितत्तत्पुण्यस्थान-विशेषानुद्दिश्य यस्मिन् सः कुम्भः।

'पृथ्वी को कल्याण की आगामी सूचना देने के लिए या शुभ भविष्य के संकेत के लिए हरिद्वर, प्रयाग आदि पुण्य-स्थानविशेष के उद्देश्य से निर्मल महाकाश में बृहस्पति आदि ग्रहराशि उपस्थित हों जिसमें, उसे 'कुंभ' कहते हैं।' इसके अतिरिक्त अन्यान्य जन-कल्याणकारी भावों को भी 'कुंभ' शब्द के शब्दार्थ में देखा जा सकता है।

पुराणों में कुंभ-पर्व की स्थापना बारह की संख्या में की गई है, जिनमें से चार मृत्युलोक के लिए और आठ देवलोकों के लिए हैं—

देवानां द्वादशाहोभिर्मर्त्यैर्द्वादशवत्सरैः।
जायन्ते कुम्भपर्वाणि तथा द्वादश संख्यया॥
पापापनुत्तये नृणां चत्वारि भुवि भारते।
अष्टौ लोकान्तरे प्रोक्ता देवैर्गम्या न चेतरैः॥

भूमंडल के मनुष्यमात्र के पाप को दूर करना ही कुंभ की उत्पत्ति का हेतु है। यह पर्व प्रत्येक बारहवें वर्ष हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक—इन चारों स्थानों में होता रहता है। इन पर्वों में भारत के सभी प्रांतों से समस्त संप्रदायवादी स्नान, ध्यान, पूजा-पाठादि करने के लिए आते हैं।

क्षार-समुद्र से पर्यवेष्टित भारतभूमि स्वभावत: मलिनता के कलंक-पंक से युक्त है। यह पुण्यप्रक्षालित भूमि है। भौगोलिक दृष्टि से इसके चार पवित्र स्थानों में उस अमृत-कुंभ की प्रतिष्ठा हुई थी, जो उस समुद्र-मंथन से उद्भूत हुआ था।

कालिक दृष्टि से ऐसे ग्रहयोग जो खगोल में लुप्त-सुप्त अमृतत्व को प्रत्यक्ष और प्रबुद्ध कर देते हैं, चारों स्थानों में बारह-बारह वर्ष पर अर्थात् द्वादश वर्षात्मक कालयोग से प्रकट होते हैं। तब गंगा (हरिद्वार), त्रिवेणीजी (प्रयाग), शिप्रा (उज्जैन) और गोदावरी (नासिक)—ये पतितपावनी नदियाँ अपनी जलधारा में अमृतत्व को प्रवाहित करती हैं। अर्थात् देश, काल एवं

वस्तु तीनों अमृत के प्रादुर्भाव के योग्य हो जाते हैं। फलस्वरूप अमृतघट या कुंभ का अवतरण होता है।

कालचक्र न केवल जीवन के क्रिया-कलाप का मूलाधार है अपितु समस्त यज्ञकर्म, अनुष्ठान एवं संस्कार आदि भी कालचक्र पर आधारित है। कालचक्र में सूर्य, चंद्रमा एवं देवगुरु बृहस्पति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन तीनों का योग ही कुंभ-पर्व का प्रमुख आधार है। जब बृहस्पति मेष राशि पर तथा चंद्रमा-सूर्य मकर राशि पर स्थित हों, तब प्रयाग में अमावस्या तिथि को अति दुर्लभ कुंभ होता है। इस स्थिति में सभी ग्रह मित्रतापूर्ण और श्रेष्ठ होते हैं।

अमृत-कुंभ का स्वरूप एवं प्रार्थना-मंत्र

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्थिताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलषं तु समाश्रिताः।

'कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र, मूल भाग में ब्रह्मा, मध्य भाग में मातृगण, कुक्षि में समस्त समुद्र, पहाड़ और पृथ्वी रहते हैं और अंगों के सहित ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद भी रहते हैं।'

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः॥

'हे कुंभ! देव-दानव के विवादरूप में समुद्र के मथे जाने पर तुम्हारी

उत्पत्ति हुई, जिसे साक्षात् भगवान् विष्णु ने धारण किया। उस तुम्हारे जल में समस्त तीर्थ, समस्त देवता, समस्त प्राणी, प्राण आदि स्थित रहते हैं। तुम साक्षात् शिव, विष्णु और ब्रह्मा हो। आदित्य, वसु, रुद्र, सपैतृक विश्वेदेव आदि समस्त कार्यों के फलप्रद देवता तुम्हारे में सर्वदा स्थित रहते हैं।'

कुंभोत्पत्ति की अमरकथा

एक समय की बात है, दैत्यों और दानवों ने बड़ी भारी सेना लेकर देवताओं पर चढ़ाई की। उस युद्ध में दैत्यों के सामने देवता परास्त हो गए, तब इंद्र आदि संपूर्ण देवता अग्नि को आगे करके ब्रह्माजी की शरण में गए। वहाँ उन्होंने अपना सारा हाल ठीक-ठीक कह सुनाया। ब्रह्माजी ने कहा, 'तुम लोग मेरे साथ भगवान् की शरण में चलो।' यह कहकर वे संपूर्ण देवताओं को साथ ले क्षीरसागर के उत्तर-तट पर गए और भगवान् वासुदेव को संबोधित करके बोले, 'विष्णो! शीघ्र उठिए और इन देवताओं का कल्याण कीजिए। आपकी सहायता न मिलने से दानव इन्हें बारंबार परास्त करते हैं।' उनके ऐसा कहने पर कमल के समान नेत्र वाले भगवान् अंतर्यामी पुरुषोत्तम ने देवताओं के शरीर की अवस्था देखकर कहा, 'देवगण! मैं तुम्हारे तेज की वृद्धि करूँगा। मैं जो उपाय बतलाता हूँ, उसे तुम लोग करो। दैत्यों के साथ मिलकर सब प्रकार की औषधियाँ ले आओ और उन्हें क्षीरसागर में डाल दो। फिर मंदराचल को मथानी और वासुकि नाग को नेती (रस्सी) बनाकर समुद्र का मंथन करते हुए उससे अमृत निकालो। इस कार्य में मैं तुम लोगों की सहायता करूँगा। समुद्र का मंथन करने पर जो अमृत निकलेगा, उसका पान करने से तुम लोग बलवान और अमर हो जाओगे।'

देवाधिदेव भगवान् के ऐसा कहने पर संपूर्ण देवता दैत्यों के साथ संधि करके अमृत निकालने के यत्न में लग गए—

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि कलशोत्पत्तिमुत्तमाम्।
उत्तरे हिमवत्पार्श्वे क्षीरोदो नाम सागरः॥

आरब्धं मन्थनं तत्र देवैर्दानवपूर्वकैः।
मन्थानं मन्दरं कृत्वा नेत्रं कृत्वा तु वासुकिम्॥

मूले कूर्मन्तु संस्थाप्य विष्णोर्बाहू च मन्दरे।
एकत्र देवताः सर्वे बलिमुख्यास्तथैकतः॥

मथ्यमाने तदा तस्मिन् क्षीरोदे सागरोत्तमे।
उत्पन्नं गरलं पूर्वं शम्भुना भक्षितं च तत्॥

अथ स्वास्थ्यं गते लोके प्रकथ्यन्तेऽद्य तानि हि।
उत्पन्नानि च रत्नानि यानि तत्र महान्ति च॥

विमानं पुष्पकं पूर्वमुत्तमं हंसवाहनम्।
नाग ऐरावतश्चैव पादपः पारिजातकः॥

वीणावाद्यान्तरं चैव रम्भा नृत्यगुणान्विता।
मणिरत्नं कौस्तुभाख्यं बालचन्द्रस्तथैव च॥

कुण्डलानि धनुश्चैव गावः पञ्च शिवास्तथा।
लक्ष्मीः सुरूपा यमुना सुशीला सुरभिस्तथा॥

उच्चैःश्रवाः समुत्पन्नो लक्ष्मीश्च वरवर्णिनी।
तथा धन्वन्तरिर्देवो विश्वकर्मा कलाविदः॥

कलशश्च समुद्भूतो धन्वन्तरिकरोल्लसन्।
मुखान्तं सुधया पूर्णः सर्वेषां हि मनोहरः॥

अजितस्य पदाम्भोजकृपयैव समुद्गतम्।
क्षीराब्धिलोडनोद्भूतं कलशान्तेन्द्ररत्नकम्॥

दृष्ट्वा तु तत्क्षणादेव महाबलपराक्रमः।
जयन्तोऽमृतमादाय गतो देवप्रचोदितः॥

देवकर्मसमालोच्य तदा दैत्यपुरोधसा।
नागोच्छ्वासप्रव्यथिता दैत्याः शुक्रेण सूचिताः॥

जग्मुस्ते पृष्ठतो लग्ना भीतः सोऽपि पलायितः।
दिशो दश दिवारात्रं द्वादशाहं प्रपीडितः॥

दैत्यैर्गृहीतस्तद्धस्तात् तेनापि पुनरेव सः।
अहं पिबेयं पूर्वं तु न त्वञ्चेति विचुक्रुधुः॥

एवं विवदमानेषु काश्यपेषु सुधाग्रहे।
भगवान् मोहयित्वा तान् मोहिन्या विभजत् सुधाम्॥

विवादे काश्यपेयानां यत्र यत्रावनिस्थले।
कलशो न्यपतत्तत्र कुम्भपर्व तदोच्यते॥

गुर्वीन्द्वर्कस्वपुत्रैश्च कुम्भोऽरक्षि निपातितः।
कलहाक्रान्तचेतोभिर्दैत्यैः शुक्रप्रचोदितैः॥

चन्द्रः प्रस्त्रवणाद्रक्षां सूर्यो विस्फोटनाद्दधौ।
दैत्येभ्यश्च गुरू रक्षां शौरिदेवेन्द्रजाद् भयात्॥

सूर्येन्दुगुरुसंयोगस्तद्राशौ यत्र वत्सरे।
सुधाकुम्भप्लवे भूमौ कुम्भो भवति नान्यथा॥

देवानां द्वादशाहोभिर्मर्त्यैर्द्वादशवत्सरैः।
जायन्ते कुम्भपर्वाणि तथा द्वादश संख्यया॥

तत्राघनुत्तये नृणां चत्वारो भुवि भारते।
अष्टौ लोकान्तरे प्रोक्ता देवैर्गम्या न चेतरैः॥

तान्येति यः पुमान् योगे सोऽमृतत्वाय कल्पते।
देवा नमन्ति तत्रस्थान् यथा रङ्का धनाधिपान्॥

पृथिव्यां कुम्भयोगस्य चतुर्धा भेद उच्यते।
विष्णुद्वारे तीर्थराजेऽवन्त्यां गोदावरीतटे॥

सुधाविन्दुविनिक्षेपात् कुम्भपर्वेति विश्रुतम्॥

(स्कंदपुराण)

'तत्पश्चात् देवता और दानवों ने पृथ्वी के उत्तर भाग में हिमालय के समीप क्षीरोदसिंधु में मंथन किया, जिसमें मंदराचल 'मंथनदंड' था, वासुकि 'नेती' थे, कच्छपरूपधारी भगवान् मंदराचल के पृष्ठभाग थे और भगवान् विष्णु उक्त मंथन-दंड को पकड़े हुए थे, तदनंतर उस क्षीरसागर से चौदह रत्न—लक्ष्मी, कौस्तुभ, पारिजात, सुरा, धन्वंतरि, चंद्रमा, गरल, पुष्पक, ऐरावत, पांचजन्य शंख, रंभा, कामधेनु, उच्चैःश्रवा और अमृत-कुंभ निकले। उन्हीं रत्नों में से अमृत-कुंभ के निकलते ही देवताओं के इशारे से इंद्रपुत्र 'जयंत' अमृत-कलश को लेकर आकाश में उड़ गया। उसके बाद दैत्यगुरु शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत को वापस लेने के लिए जयंत का पीछा किया और घोर परिश्रम के बाद उन्होंने बीच रास्ते में ही जयंत को पकड़ा। तत्पश्चात् अमृत-कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव-दानवों में बारह दिन तक अविराम युद्ध होता रहा। परस्पर इस मार-काट के समय में पृथिवी के चार स्थानों (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पर कलश गिरा था, उस समय चंद्रमा ने घट से प्रस्रवण होने से, सूर्य ने घट फूटने से, गुरु ने दैत्यों के अपहरण से एवं शनि ने देवेंद्र के भय से घट की रक्षा की। कलह शांत करने के लिए भगवान् ने मोहिनी रूप धारण कर यथाधिकार सबको अमृत बाँटकर पिला दिया। इस प्रकार देव-दानव-युद्ध का अंत किया गया।

अमृत-प्राप्ति के लिए देव-दानवों में परस्पर बारह दिनपर्यंत निरंतर युद्ध हुआ था। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के तुल्य होते हैं। अतएव कुंभ भी बारह होते हैं। उनमें से चार कुंभ पृथ्वी पर होते हैं और अवशिष्ट आठ कुंभ देवलोक में होते हैं, जिन्हें देवगण ही प्राप्त कर सकते हैं, मनुष्यों की वहाँ पहुँच नहीं है। जिस समय में चंद्रादिकों ने कलश की रक्षा

की थी, उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चंद्र-सूर्यादिक ग्रह जब आते हैं, उस समय कुंभ का योग होता है, अर्थात् जिस वर्ष, जिस राशि पर सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति का संयोग होता है उसी वर्ष, उसी राशि के योग में जहाँ-जहाँ अमृत-कुंभ-सुधा-विंदु गिरा था, वहाँ-वहाँ कुंभ-पर्व होता है।'

हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक—इन चार कुंभ-पर्व के निर्णीत स्थानों में कुंभयोग के समय तत्तत्संप्रदाय, सम्मानित साधु-महात्माओं के समवाय द्वारा संसार के सर्वविध कष्टों के निवृत्यर्थ देश, समाज, राष्ट्र और धर्म आदि समस्त विश्व के कल्याण-संपादनार्थ निष्काम-भावनापुरस्सर वेदादि शास्त्रानुकूल अमूल्य दिव्य उपदेशों से जगत्कल्याण करना ही 'कुंभ-पर्व' का महान् उद्देश्य है।

पूर्णकुंभ तथा अर्धकुंभ-पर्व मनाने का एक लाभ यह है कि हम लोग इस पर्व पर दूर-दूर से अनेक स्थानों से हरिद्वार, प्रयाग आदि पवित्र तीर्थों में आकर गंगास्नान से पवित्र होकर श्रेष्ठ विद्वानों के उपदेश द्वारा ज्ञान प्राप्त करें तथा तप, सत्य, दान, यज्ञ आदि शुभ कर्मों का यथाधिकार, यथारुचि आचरण करें, जिससे मृत्यु के बाद हमें सर्वोत्तम, उत्तम या मध्यम गति प्राप्त हो और अधम गति कदापि न मिले।

कुंभ का पर्व हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक—इन चार तीर्थस्थानों में मनाया जाता है। ये चारों ही एक से बढ़कर एक परम पवित्र तीर्थ हैं। इन चारों तीर्थों में प्रत्येक बारह वर्ष के बाद कुंभ-पर्व होता है—

गङ्गाद्वारे प्रयागे च धारागोदावरीतटे।
कुम्भाख्येयस्तु योगोऽयं प्रोच्यते शङ्करादिभिः॥

'गंगाद्वार (हरिद्वार), प्रयाग, धारानगरी (उज्जैन) और गोदावरी (नासिक) में शंकरादि देवगण ने 'कुंभयोग' कहा है।'

कुंभ भगवान् का मंदिर है। इसकी झाँकी उक्त चारों स्थानों में प्रत्येक बारहवें वर्ष में होती है। हरिद्वार आदि चारों स्थानों के कुंभ-पर्व का अलग-अलग समय तथा महत्त्व आदि विषयों का संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार प्रस्तुत है—

(1) हरिद्वार

पद्मिनीनायके मेषे कुम्भराशिगते गुरौ।
गङ्गाद्वारे भवेद्योगः कुम्भनामा तदोत्तमः॥

(स्कंदपुराण)

'जिस समय बृहस्पति कुंभ राशि पर स्थित हो और सूर्य मेष राशि पर रहे, उस समय गंगाद्वार (हरिद्वार) में कुंभ-योग होता है।'

अथवा

वसन्ते विषुवे चैव घटे देवपुरोहिते।
गंङ्गाद्वारे च कुम्भाख्यः सुधामेति नरो यतः॥

हरिद्वार में कुंभ के तीन स्नान होते हैं। यहाँ कुंभ का प्रथम स्नान शिवरात्रि से प्रारंभ होता है। द्वितीय स्नान चैत्र की अमावस्या को होता है। तृतीय स्नान (प्रधान स्नान) चैत्र के अंत में अथवा वैशाख के प्रथम दिन में अर्थात् जिस दिन बृहस्पति कुंभ राशि पर और सूर्य मेष राशि पर हो उस दिन कुंभ-स्नान होता है।

(2) प्रयाग

मेषराशिं गते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ।
अमावस्या तदा योगः कुम्भाख्यस्तीर्थनायके॥

(स्कंदपुराण)

'जिस समय बृहस्पति मेष राशि पर स्थित हो तथा चंद्रमा और सूर्य मकर राशि पर हो तो उस समय तीर्थराज प्रयाग में कुंभ-योग होता है।'

अथवा

मकरे च दिवानाथे ह्यजगे च बृहस्पतौ।
कुम्भयोगो भवेत्तत्र प्रयागे ह्यतिदुर्लभः॥

प्रयाग में कुंभ के तीन स्नान होते हैं। यहाँ कुंभ का प्रथम स्नान मकरसंक्रांति (मेष राशि पर बृहस्पति का संयोग होने) से प्रारंभ होता है।

द्वितीय स्नान (प्रधान स्नान) माघ कृष्णा मौनी अमावस्या को होता है। तृतीय स्नान माघ शुक्ला वसंत पंचमी को होता है।

(3) उज्जैन (अवंतिका)

मेषराषिं गते सूर्ये सिंहराषौ बृहस्पतौ।
उज्जयिन्यां भवेत् कुम्भः सदा मुक्तिप्रदायकः॥

'जिस समय सूर्य मेष राशि पर हो और बृहस्पति सिंह राशि पर हो तो उस समय उज्जैन में कुंभ-योग होता है।'

(4) सिंहस्थ कुम्भ, नासिक-त्र्यम्बकेश्वर

सिंहराशिं गते सूर्ये सिंहराशौ बृहस्पतौ।
गोदावर्यां भवेत्कुम्भो भक्तिमुक्तिप्रदायकः॥

'जिस समय सूर्य तथा बृहस्पति सिंह राशि पर हों तो उस समय नासिक में मुक्तिप्रद कुंभ होता है।'

गोदावरी के रम्य तट पर स्थित नासिक में कुंभ-मेला लगता है। इसके लिए सिंह राशि का बृहस्पति एवं सिंह राशि का सूर्य आवश्यक है। इस पर्व का स्नान भाद्रपद में अमावस्या-तिथि को होता है। देवगुरु बृहस्पति जब तक विश्वात्मा सूर्यनारायण के साथ सिंह राशि में रहते हैं, तब तक का समय सिंहस्थ कहलाता है। इस सिंहस्थ काल में श्रीनासिक तीर्थ की यात्रा, पवित्र गोदावरी नदी में स्नान एवं त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन-लाभ का बड़ा माहात्म्य है। यहीं पंचवटी में भगवान् श्रीराम ने वनवास का दीर्घकाल व्यतीत किया था।

हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा नासिक में कुंभ-स्नान का महत्त्व इस प्रकार है—

1. हरिद्वार-स्नान की महिमा

कुम्भराशिं गते जीवे तथा मेषे गते रवौ।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्तिवर्जनम्॥

'कुंभ राशि में बृहस्पति हो तथा मेष राशि पर सूर्य हो तो हरिद्वार के कुंभ में स्नान करने से मनुष्य पुनर्जन्म से रहित हो जाता है।'

2. प्रयाग-स्नान की महिमा

सहस्त्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानषतानि च।
वैषाखे नर्मदा कोटिः कुम्भस्नानेन तत्फलम्॥

(स्कंदपुराण)

'कार्तिक महीने में एक हजार बार गंगा में स्नान करने से, माघ में सौ बार गंगा में स्नान करने से और वैशाख में करोड़ बार नर्मदा में स्नान करने से जो फल होता है, वह प्रयाग में कुंभ-पर्व पर केवल एक ही बार स्नान करने से प्राप्त होता है।'

विष्णुपुराण में भी कहा गया है—

अश्वमेधसहस्त्राणि वाजपेयशतानि च।
लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानेन तत्फलम्॥

'हजार अश्वमेध-यज्ञ करने से, सौ वाजपेय-यज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से जो फल प्राप्त होता है, वह फल केवल प्रयाग के कुंभ स्नान से प्राप्त होता है।'

3. उज्जैन-स्नान की महिमा

कुशस्थलीमहाक्षेत्रं योगिनां स्थानदुर्लभम्।
माधवे धवले पक्षे सिंहे जीवे अजे रवौ॥
तुलाराशौ निशानाथे पूर्णायां पूर्णिमातिथौ।
व्यतीपाते तु सञ्जाते चन्द्रवासरसंयुते।
उज्जयिन्यां महायोगे स्नाने मोक्षमवाप्नुयात्॥

(स्कंदपुराण, अवंतीखंड)

अन्यत्र भी आया है—

धारायां च तदा कुम्भो जायते खलु मुक्तिदः।

4. नासिक-स्नान की महिमा

षष्टिवर्षसहस्राणि भागीरथ्यवगाहनम्।
सकृद् गोदावरीस्नानं सिंहस्थे च बृहस्पतौ॥

'जिस समय बृहस्पति सिंह राशि पर हो, उस समय गोदावरी में केवल एक बार स्नान करने से मनुष्य साठ हजार वर्षों तक गंगा-स्नान करने के सदृश पुण्य प्राप्त करता है।'

ब्रह्मवैवर्तपुराण में लिखा गया है—

अश्वमेधफलं चैव लक्षगोदानजं फलम्।
प्राप्नोति स्नानमात्रेण गोदायां सिंहगे गुरौ॥

'जिस समय बृहस्पति सिंह राशि पर स्थित हो, उस समय गोदावरी में केवल स्नानमात्र से ही मनुष्य अश्वमेध-यज्ञ करने का तथा एक लक्ष गोदान करने का पुण्य प्राप्त करता है।'

ब्रह्मांडपुराण में कहा गया है—

यस्मिन् दिने गुरुर्याति सिंहराशौ महामते।
तस्मिन् दिने महापुण्यं नरः स्नानं समाचरेत्॥
यस्मिन् दिने सुरगुरुः सिंहराषिगतो भवेत्।
तस्मिंस्तु गौतमीस्नानं कोटिजन्माघनाशनम्॥

तीर्थानि नद्यश्च तथा समुद्राः
क्षेत्राण्यरण्यानि तथाऽऽश्रमाष्च।
वसन्ति सर्वाणि च वर्षमेकं
गोदातटे सिंहगते सुरेज्ये॥

कुंभ-स्नान की विधि एवं दान का महत्त्व

प्रातःकाल उठकर सर्वप्रथम देवस्मरण करना चाहिए। उसके पश्चात् शौचादि क्रियाओं से निवृत्त होकर कुंभ-पर्व-महत्त्वसूचक श्लोकों का स्मरण करे। तदनंतर यथासमय कुंभ-स्नानार्थ गंगा आदि पवित्र नदी में जाकर अपने दोनों हाथों द्वारा कुंभ-मुद्रा (कलश-मुद्रा) दिखलाकर और उसमें अमृत की भावना कर निम्नलिखित श्लोकों को पढ़ता हुआ स्नान करें—

देवदानवसम्वादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥

शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं स्नानं कर्तुमीहे जलोद्भव॥

सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।

स्नान करने के बाद संध्या-तर्पणादि से निवृत्त होकर गणपति-पूजनपूर्वक कुंभ (कलश)-स्थापन करे। तदनंतर श्रद्धा-भक्ति से कुंभ का षोडशोपचारपूर्वक पूजन करे। तत्पश्चात् एक, चार, ग्यारह, इक्कीस अथवा यथाशक्ति सुवर्ण, रजत, ताम्र या पीतल के कलशों में घृत भरकर सुपात्र-योग्य विद्वानों को 'घृतकुंभ' दान करे।

कुंभ-पर्व के समय यथाविधि घृतपूर्ण कुंभ (कलश) का पूजन कर उसे वस्त्रालंकार, आभूषण तथा सुवर्ण-खंडसहित सदाचारी विद्वान् को देने से सैकड़ों गोदान करने का फल मिलता है तथा मनुष्य के पितरों की आत्मा संतुष्ट होती है।

इसी प्रकार प्रत्येक कुंभ-पर्व के तीर्थस्थानों में अनेकविध अन्न, द्रव्यादि के दान करने से करोड़ों तीर्थों में जाने का तथा सैकड़ों 'अश्वमेध-यज्ञ' करने का फल प्राप्त होता है।

(गीताप्रेस से प्रकाशित महाकुंभ-पर्व से साभार)

□

कुंभतीर्थ का माहात्म्य

हरिद्वार-माहात्म्य

सात पुरियों में से मायापुरी हरिद्वार के विस्तार के भीतर आ जाती है। यहाँ प्रति बारहवें वर्ष कुंभ का मेला लगता है। उसके छठे वर्ष अर्धकुंभ पड़ता है। इस तीर्थ के कई नाम हैं—हरद्वार, हरिद्वार, गंगाद्वार, कुशावर्त। मायापुरी, हरिद्वार, कनखल, ज्वालापुर और भीमगोड़ा—इन पाँचों पुरियों को मिलाकर 'हरिद्वार' कहा जाता है।

राजा भगीरथ के पीछे चलने वाली अलकनंदा गंगा सहस्रों पर्वतों को विदीर्ण करती हुई जहाँ भूमि पर उतरी है, जहाँ पूर्वकाल में दक्षप्रजापति ने यज्ञेश्वर भगवान् विष्णु का यजन किया है, वह पुण्यदायक क्षेत्र (हरिद्वार) ही गंगाद्वार है, जो मनुष्यों के समस्त पातकों का नाश करने वाला है। प्रजापति दक्ष के यज्ञ में इंद्रादि सब देवता बुलाए गए थे और वे सब अपने-अपने गणों के साथ यज्ञ में भाग लेने की इच्छा से वहाँ आए थे। उसमें देवर्षि, शिष्य-प्रशिष्यों सहित शुद्ध अंत:करण वाले ब्रह्मर्षि तथा राजर्षि भी पधारे थे। पिनकपाणि भगवान् शंकर को छोड़कर अन्य सभी देवताओं को निमंत्रित किया गया था। वे सभी देवता विमानों पर बैठकर अपनी प्रिय पत्नियों के साथ दक्षप्रजापति के यज्ञोत्सव में जा रहे थे और प्रसन्नतापूर्वक आपस में उस उत्सव का वर्णन भी करते जा रहे थे। कैलास पर रहने वाली देवी सती ने उनकी बातें सुनीं। देवताओं की बातें सुनकर वे पिता का यज्ञोत्सव देखने के लिए उत्सुक हुईं। उस समय सती ने महादेवजी से उस उत्सव में चलने की प्रार्थना की। उनकी

बात सुनकर भगवान् शिव ने कहा, 'देवि! वहाँ जाना कल्याणकर नहीं होगा।' किंतु सतीजी अपने पिता का यज्ञोत्सव देखने के लिए चल दीं। सती देवी वहाँ पहुँच तो गईं, किंतु किसी ने उनका स्वागत-सत्कार नहीं किया। तब सती ने वहाँ अपने प्राण त्याग दिए। अत: वह स्थान एक उत्तम क्षेत्र बन गया। जो उस तीर्थ में स्नान करके देवताओं तथा पितरों का तर्पण करते हैं, वे देवी के अत्यंत प्रिय होते हैं। वे भोग और मोक्ष के प्रधान अधिकारी हो जाते हैं।

तदनंतर देवर्षि नारद से अपनी प्रिया सतीजी के प्राण-त्याग का समाचार सुनकर भगवान् शंकर ने वीरभद्र को उत्पन्न किया। वीरभद्र ने संपूर्ण प्रमथगणों के साथ जाकर उस यज्ञ का नाश कर दिया। फिर ब्रह्माजी की प्रार्थना पर तुरंत प्रसन्न होकर भगवान् शंकर ने उस विकृत यज्ञ को पुन: संपन्न किया। तबसे वह अनुपम तीर्थ संपूर्ण पातकों का नाश करने वाला हुआ। उस तीर्थ में विधिपूर्वक स्नान करके मनुष्य जिस-जिस कामना का चिंतन करता है, उसे अवश्य प्राप्त कर लेता है। जहाँ दक्ष तथा देवताओं ने यज्ञों के स्वामी साक्षात् अविनाशी भगवान् विष्णु का स्तवन किया था, वह स्थान हरितीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। जो मनुष्य उस हरिपदतीर्थ (हरि की पैड़ी) में विधिपूर्वक स्नान करता है, वह भगवान् विष्णु का प्रिय और भोग तथा मोक्ष का प्रधान अधिकारी होता है। उससे पूर्व दिशा में 'त्रिगंग' नाम से विख्यात क्षेत्र है, जहाँ सब लोग त्रिपथगा गंगा का साक्षात् दर्शन करते हैं। वहाँ स्नान करके देवताओं, ऋषियों, पितरों और मनुष्यों का श्रद्धापूर्वक तर्पण करने वाले पुरुष स्वर्गलोक में देवता की भाँति आनंदित होते हैं। वहाँ से दक्षिण दिशा में कनखल तीर्थ है, जहाँ पर दिन-रात उपवास और स्नान करके मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है। जो वहाँ वेदों में पारंगत विद्वान् ब्राह्मण को गोदान देता है, वह कभी वैतरणी नदी और यमराज को नहीं देखता है। वहाँ किए गए जप, होम, तप और दान अक्षय होते हैं।

वहाँ से पश्चिम दिशा में कोटितीर्थ है, जहाँ भगवान् कोटीश्वर का दर्शन करने से कोटि गुना पुण्य प्राप्त होता है और एक रात वहाँ निवास करने से पुंडरीक-यज्ञ का फल मिलता है। इसी प्रकार वहाँ से उत्तर दिशा में सप्तगंग

(सप्त सरोवर) नाम से विख्यात उत्तम तीर्थ है। वह संपूर्ण पातकों का नाश करने वाला है। वहाँ सप्तर्षियों के पवित्र आश्रम हैं, उन सबमें पृथक्-पृथक् स्नान और देवताओं एवं पितरों का तर्पण करके मनुष्य ऋषिलोक को प्राप्त होता है। राजा भगीरथ जब देवनदी गंगा को ले आए, उस समय उन सप्तर्षियों की प्रसन्नता के लिए वे सात धाराओं में विभक्त हो गईं। तब से पृथ्वी पर वह सप्तगंग नामक तीर्थ विख्यात हो गया। वहाँ से परम उत्तम 'कपिलाह्रद' नामक तीर्थ में जाकर जो श्रेष्ठ ब्राह्मण को धेनु दान करता है, उसे सहस्र गोदान का फल मिलता है। तदनंतर 'शंतनुके ललित' नामक उत्तम तीर्थ में जाकर विधिवत् स्नान और देवता आदि का तर्पण करके मनुष्य उत्तम गति पाता है, जहाँ राजा शंतनु ने मनुष्य रूप में आई हुई गंगा को प्राप्त किया और जहाँ गंगा ने प्रतिवर्ष एक-एक वसु को जन्म देकर अपनी धारा में उनके शरीर को डलवा दिया था, उन वसुओं का शरीर जहाँ गिरा, वहाँ वृक्ष पैदा हो गया। जो मनुष्य वहाँ स्नान करता है, वह गंगादेवी के प्रसाद से कभी दुर्गति में नहीं पड़ता। वहाँ से भीमस्थल (भीमगोड़ा) में जाकर जो पुण्यात्मा पुरुष स्नान करता है, वह इस लोक में उत्तम भोग भोगकर शरीर का अंत होने पर स्वर्गलोक में जाता है।

किं बहुना इस तीर्थ का माहात्म्य वर्णनातीत है। पद्मपुराण और नारदादि पुराण हरिद्वार की महिमा से भरे पड़े हैं। पुराण का वचन है—

स्कंद उवाच:

श्रृणु नारद वक्ष्यामि लोकानां मुक्तिकारणम्।
सकृत्स्नानं तु यैर्मर्त्यैर्गङ्गाद्वारेषुभावहे॥
न तेषां पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि॥

स्कंद नारद से कहते हैं, 'हे नारद! मैं तुम्हें मनुष्यों की मुक्ति का एक उपाय बताता हूँ, जो लोग एक बार भी श्रीहरिद्वार में गंगा-स्नान करते हैं, वे फिर संसार में जन्म नहीं लेते, चाहे करोड़ों कल्प बीत जाएँ।'

तिस्रः कोट्योऽर्द्धकोटी च तीर्थानां मुनिसत्तम्।
भजन्ते सन्निधिं तत्र स्नातः सर्वत्र जायते॥

'हे मुने! साढ़े तीन करोड़ तीर्थ हरिद्वार तीर्थ में निवास करते हैं। जिसने हरिद्वार तीर्थ में स्नान किया, उसने समस्त तीर्थों में स्नान किया।'

कुशावर्तं महातीर्थं दक्षिणे ब्रह्मतीर्थतः।
स्नानं दानं जपो होमः स्वाध्यायः पितृतर्पणम्॥
यदत्र क्रियते कर्म तत्तत्स्यात्कोटिसंख्यकम्॥

'ब्रह्मकुंड से दक्षिण की ओर (एक फर्लांग की दूरी पर) कुशावर्त नामक महातीर्थ है। यहाँ स्नान, दान, जप, होम, वेदादि पाठ, श्राद्ध तथा तर्पण आदि जो कुछ किया जाता है, वह करोड़ों गुना अधिक होता है।'

गङ्गाद्वारे कुषावर्ते बिल्वके नीलपर्वते।
स्नात्वा च कनखले तीर्थे पुनर्जन्म न विद्यते॥

'हरिद्वार, कुशावर्त, बिल्वकेश, नीलपर्वत तथा कनखल तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य को पुनर्जन्म नहीं लेना पड़ता।'

धन्यानां पुरुषाणां हि गंगाद्वारस्य दर्षनम्।
विशेषतस्तु मेषार्के सङ्क्रमेऽतीव पुण्यदे॥

'पुण्यात्मा पुरुषों को श्रीहरिद्वार के दर्शन होते हैं, विशेषकर इस तीर्थ में स्नान-दानादि का माहात्म्य मेष-संक्रांति में होता है।'

योऽस्मिन्क्षेत्रे नरः स्नायात्कुम्भेज्येऽजगे रवौ॥
स तु स्याद्वाक्पतिः साक्षात्प्रभाकर इवापरः।

'जो इस क्षेत्र में बृहस्पति के कुंभ राशि पर और सूर्य के मेष राशि पर रहते समय स्नान करता है, वह साक्षात् बृहस्पति और दूसरे सूर्य के समान तेजस्वी होता है।'

सोमवारान्वितायां वा यस्यां कस्यामथापि वा।
अमायां च तथा माघे वैशाखे कार्त्तिकेऽपि वा॥

'सोमवती अमावस्या में अथवा अन्य किसी अमावस्या में एवं माघ, वैशाख तथा कार्तिक मास में इस हरिद्वार तीर्थ का दर्शन तथा स्नान आदि का बड़ा माहात्म्य है।'

ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां स्नानमात्रतः।
प्राप्यते परमं स्थानं दुर्लभं योगिनामपि॥

'ज्येष्ठ के महीने में शुक्ल पक्ष की दशमी (दशहरा, गंगाजन्म) के दिन केवल स्नान करने से परमधाम की प्राप्ति होती है, जो कि योगियों को भी दुर्लभ है।'

स्वर्गद्वारेण तत् तुल्यं गङ्गाद्वारं न संशयः।
तत्राभिषेकं कुर्वीत कोटितीर्थे समाहितः॥

लभते पुण्डरीकं च कुलं चैव समुद्धरेत्।
तत्रैकरात्रिवासेन गोसहस्रफलं लभेत्॥

सप्तगङ्गे त्रिगङ्गे च षक्रावर्ते च तर्पयन्।
देवान् पितृंश्च विधिवत् पुण्ये लोके महीयते॥

ततः कनखले स्नात्वा त्रिरात्रोपोषितो नरः।
अश्वमेधमवाप्नोति स्वर्गलोकं च गच्छति॥

'हरिद्वार स्वर्ग के द्वार के समान है। इसमें संशय नहीं है। वहाँ जो एकाग्र होकर कोटितीर्थ में स्नान करता है, उसे पुंडरीक-यज्ञ का फल मिलता है तथा वह अपने कुल का उद्धार कर देता है। वहाँ एक रात निवास करने से सहस्र गोदान का फल मिलता है। सप्तगंगा, त्रिगंगा और शक्रावर्त में विधिपूर्वक देवर्षि-पितृतर्पण करने वाला पुण्यलोक में प्रतिष्ठित होता है। तदनंतर कनखल में स्नान करके तीन रात उपवास करे। ऐसा करने वाला अश्वमेध-यज्ञ का फल पाता है और स्वर्गगामी होता है।'

इतना ही नहीं, जो मानव दूर रहकर भी गंगाद्वार का स्मरण करता है, वह उसी प्रकार सद्गति पाता है, जैसे अंतकाल में श्रीहरि को स्मरण करने वाला पुरुष। मनुष्य शुद्धचित्त होकर हरिद्वार में जिस देवता का पूजन करता है, वह देवता परम प्रसन्न होकर उसके मनोरथों को पूर्ण करता है। जहाँ

गंगा भूतल पर आई हैं, वही तपस्या का स्थान है। वही जप का स्थल है और वही होम का स्थान है। जो मनुष्य नियमपूर्वक रहकर तीनों समय स्नान करके वहाँ 'गंगासहस्रनाम' का पाठ करता है, वह अक्षय संतति पाता है। जो नियमपूर्वक भक्तिभाव से गंगाद्वार में पुराण सुनता है, वह अविनाशी पद को प्राप्त होता है। जो श्रेष्ठ मानव हरिद्वार का माहात्म्य सुनता है अथवा भक्तिभाव से उसका पाठ करता है, वह भी स्नान का फल पाता है।

पतितपावन तीर्थ हरिद्वार की महिमा अपार है। इसके विषय में पद्मपुराण का एक पुण्यमय उपाख्यान है—

एक समय की बात है, कुरुक्षेत्र में नगर से बाहर कालिंग नामक एक पापी चांडाल रहता था। एक बार सूर्यग्रहण के समय आए हुए एक धनी वैश्य के पीछे वह लग गया और कुरुक्षेत्र से उस वैश्य के लौटने के समय इसी हरिद्वार में आधी रात के वक्त उस पापी ने वैश्य के खेमे में चोरी करने की चेष्टा की और दो पहरेदारों को मार डाला। इसी समय वैश्य के एक सेवक ने दूर से बाण मारा, जिससे भागता हुआ वह पापी भी मर गया। तदनंतर चांडाल द्वारा मारे हुए वैश्य के दोनों पहरेदार और वह चांडाल—तीनों देवताओं के द्वारा लाए हुए विमान पर चढ़कर वैश्य से बोले, 'देखो इस तीर्थ का माहात्म्य! यह हरिद्वार पापियों का भी कल्याण करने वाला है।' ऐसा कहकर वे स्वर्ग को चले गए। दूसरे दिन वैश्य ने अपने दोनों पहरेदारों के शरीरों का दाह-संस्कार कराकर उनकी हड्डियाँ हरिद्वार तीर्थ में डलवा दीं। इसके परिणामस्वरूप वे दोनों भाग्यवान स्वर्ग से लौटकर भगवान् विष्णु के परमधाम में चले गए। तदनंतर बुद्धिमान वैश्य ने अपने घर जाकर सांसारिक कार्यों को धर्मपूर्वक करते हुए भगवान् की भक्ति में मन लगाया और अंत में इसी वैकुंठधाम की प्राप्ति कराने वाले तीर्थ में आकर मृत्यु को प्राप्त हुआ।

प्रयाग-माहात्म्य

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ। कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ॥

प्रयाग तीर्थराज कहे जाते हैं। समस्त तीर्थों के ये अधिपति हैं। सातों पुरियाँ इनकी रानियाँ कही गई हैं। गंगा-यमुना की धारा ने पूरे प्रयाग के क्षेत्र को तीन भागों में बाँट दिया है। ये तीनों भाग अग्निस्वरूप-यज्ञवेदी माने जाते हैं। इनमें गंगा-यमुना के मध्य का भाग गार्हपत्याग्नि, गंगापार का भाग (अलर्कपुर-अरैल) दक्षिणाग्नि माना जाता है। इन भागों में पवित्र होकर एक-एक रात्रि निवास करने से इन अग्नियों की उपासना का फल प्राप्त होता है।

प्रयाग में प्रतिवर्ष माघ मास में मेला लगता है। इसे कल्पवास करते हैं। बहुत से श्रद्धालु यात्री प्रतिवर्ष गंगा-यमुना के मध्य में कल्पवास करते हैं। कल्पवास कोई सौर मास की मकर-संक्रांति से कुंभ की संक्रांति तक मानते हैं और कोई चांद्रमास के अनुसार माघ महीने भर को मानते हैं। यहाँ प्रति बारहवें वर्ष कुंभ होता है। कुंभ से छठे वर्ष अर्धकुंभ पड़ता है। इस अवसर पर भी माघभर प्रयाग में भारी मेला रहता है। इतिहासकारों का कथन है कि पर्व के दिनों में सम्राट् हर्षवर्धन प्रयाग में आकर अपना सर्वस्व दान कर दिया करते थे।

प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम में स्नान करके प्राणी पापों से मुक्त होकर स्वर्ग का अधिकारी हो जाता है और इस क्षेत्र में देह त्यागने वाले प्राणी की मुक्ति हो जाती है, ऐसे वचन पुराणों में प्राप्त होते हैं।

प्रयाग के माहात्म्य से सारा वैदिक साहित्य भरा पड़ा है। पद्मपुराण का वचन है—

ग्रहाणां च यथा सूर्यो नक्षत्राणां यथा शशी।
तीर्थानामुत्तमं तीर्थं प्रयागाख्यमनुत्तमम्॥

'जैसे ग्रहों में सूर्य तथा तारों में चंद्रमा है, वैसे ही तीर्थों में प्रयाग सर्वोत्तम है।'

यत्र वटस्याक्षयस्य दर्शनं कुरुते नरः।
तेन दर्शनमात्रेण ब्रह्महत्या विनश्यति॥

'जो पुरुष यहाँ के अक्षयवट का दर्शन करता है, उसके दर्शनमात्र से ब्रह्महत्या नष्ट हो जाती है।'

आदिवटः समाख्यातः कल्पान्तेऽपि च दृश्यते।
शेते विष्णुर्यस्य पत्रे अतोऽयमव्ययः स्मृतः॥

'यह अक्षयवट आदिवट कहलाता है और कल्पांत में भी देखा जाता है। इसके पत्ते पर भगवान् विष्णु शयन करते हैं, अतः यह वट अव्यय समझा जाता है।'

माधवाख्यस्तत्र देवः सुखं तिष्ठति नित्यशः।
तस्य वै दर्शनं कार्यं महापापैः प्रमुच्यते॥

'वहाँ भगवान् माधव नाम से सुखपूर्वक नित्य विराजते हैं, उनका दर्शन करना चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य महापापों से मुक्त हो जाता है।'

गोघ्नो वापि च चाण्डालो दुष्टो वा दुष्टचेतनः।
बालघाती तथाविद्वान् म्रियते तत्र वै यदा॥
स वै चतुर्भुजो भूत्वा वैकुण्ठे वसते चिरम्।

'गोघाती, चांडाल, शठ, दुष्टचित्त, बालघाती तथा मूर्ख—जो भी यहाँ मरता है, वह चतुर्भुज होकर अनंतकाल तक वैकुंठ में वास करता है।'

प्रयागे तु नरो यस्तु माघस्नानं करोति च।
न तस्य फलसंख्यास्ति शृणु देवर्षिसत्तम्॥

'देवर्षे! प्रयाग में जो माघस्नान करता है, उसके पुण्यफल की कोई गणना नहीं।'

मत्स्यपुराण में आया है कि तीर्थराज प्रयाग की महिमा के विषय में महाराज युधिष्ठिर के द्वारा पूछने पर मार्कंडेय ऋषि ने बताया कि हे राजन्! प्रयाग-माहात्म्य का वर्णन सैकड़ों वर्षों में भी नहीं किया जा सकता है, फिर भी मैं संक्षेप में वर्णन कर रहा हूँ—

षष्टिर्धनुः सहस्त्राणि यानि रक्षन्ति जाह्नवीम्।
यमुनां रक्षति सदा सविता सप्तवाहनः॥

प्रयागं तु विशेषेण सदा रक्षति वासवः।
मण्डलं रक्षति हरिर्दैवतैः सह संगतः॥

तं वटं रक्षति सदा शूलपाणिर्महेश्वरः।
स्थानं रक्षन्ति वै देवाः सर्वपापहरं शुभम्॥

अधर्मेणावृतो लोको नैव गच्छति तत्पदम्।
अल्पमल्पतरं पापं यदा तस्य नराधिप।
प्रयागं स्मरमाणस्य सर्वमायाति संक्षयम्॥

दर्शनात् तस्य तीर्थस्य नामसंकीर्तनादपि।
मृत्तिकालम्भनाद् वापि नरः पापात् प्रमुच्यते॥

'प्रयाग में साठ हजार धनुर्धर वीर गंगा की रक्षा करते हैं तथा सात घोड़ों से जुते हुए रथ पर चलने वाले सूर्य सदा यमुना की देखभाल करते रहते हैं। इंद्र विशेष रूप से सदा प्रयाग की रक्षा में तत्पर रहते हैं। श्रीहरि देवताओं को साथ लेकर पूरे प्रयाग-मंडल की रखवाली करते हैं। महेश्वर हाथ में त्रिशूल लेकर सदा वट-वृक्ष की रक्षा करते रहते हैं। देवगण इस सर्वपापहारी मंगलमय स्थान की रक्षा में तत्पर रहते हैं। इसलिए इस लोक में अधर्म से घिरा हुआ मनुष्य प्रयाग क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर सकता। नरेश्वर! यदि किसी का स्वल्प अथवा उससे भी थोड़ा पाप होगा तो वह सारा-का-सारा प्रयाग का स्मरण करने से नष्ट हो जाएगा; क्योंकि (ऐसा विधान है कि) प्रयागतीर्थ के दर्शन, नाम-संकीर्तन अथवा मृत्तिका का स्पर्श करने से मनुष्य पाप से मुक्त हो जाता है।'

पञ्च कुण्डानि राजेन्द्र येषां मध्ये तु जाह्नवी।
प्रयागस्य प्रवेशे तु पापं नश्यति तत्क्षणात्॥

योजनानां सहस्रेषु गङ्गायाः स्मरणान्नरः।
अपि दुष्कृतकर्मा तु लभते परमां गतिम्॥

कीर्तनान्मुच्यते पापाद् दृष्ट्वा भद्राणि पश्यति।
अवगाह्य च पीत्वा तु पुनात्यासप्तमं कुलम्॥

तपनस्य सुता देवी त्रिषु लोकेषु विश्रुता।
समागता महाभागा यमुना तत्र निम्नगा।
तत्र सन्निहितो नित्यं साक्षाद् देवो महेश्वरः॥

दुष्प्राप्यं मानुषैः पुण्यं प्रयागं तु युधिष्ठिर।
देवदानवगन्धर्वा ऋषयः सिद्धचारणाः।
तदुपस्पृश्य राजेन्द्र स्वर्गलोकमुपासते॥

'राजेंद्र! प्रयाग क्षेत्र में पाँच कुंड हैं, उन्हीं के मध्य में गंगा बहती है, इसलिए प्रयाग में प्रवेश करते ही उसी क्षण पाप नष्ट हो जाता है। मनुष्य कितना ही बड़ा पापी क्यों न हो, यदि वह हजारों योजन दूर से भी गंगा का स्मरण करता है तो उसे परम गति की प्राप्ति होती है। गंगा का नाम लेने से मनुष्य पाप से छूट जाता है, दर्शन करने से उसे जीवन में मांगलिक अवसर देखने को मिलते हैं तथा स्नान और जलपान करके तो वह अपनी सात पीढ़ियों को पावन बना देता है। वहाँ सूर्य-कन्या महाभागा यमुनादेवी, जो तीनों लोकों में विख्यात हैं, नदी रूप में आई हुई हैं और साक्षात् भगवान् शंकर वहाँ नित्य निवास करते हैं। इसलिए युधिष्ठिर! यह पुण्यप्रद प्रयाग मनुष्यों के लिए दुर्लभ है। राजेंद्र! देव, दानव, गंधर्व, ऋषि, सिद्ध, चारण आदि गंगाजल का स्पर्श कर स्वर्गलोक में विराजमान होते हैं।'

आर्तानां हि दरिद्राणां निश्चितव्यवसायिनाम्।
स्थानमुक्तं प्रयागं तु नाख्येयं तु कदाचन॥

व्याधितो यदि वा दीनो वृद्धो वापि भवेन्नरः।
गङ्गायमुनयोर्मध्ये यस्तु प्राणान् परित्यजेत्॥

दीप्तकाञ्चनवर्णाभैर्विमानैः सूर्यवर्चसैः।
गन्धर्वाप्सरसां मध्ये स्वर्गे मोदति मानवः।
ईप्सिताँल्लभते कामान् वदन्ति ऋषिपुङ्गवाः॥

सर्वरत्नमयैर्दिव्यैर्नानाध्वजसमाकुलैः।
वराङ्गनासमाकीर्णैर्मोदते शुभलक्षणैः॥

गीतवाद्यविनिर्घोषैः प्रसुप्तः प्रतिबुध्यते।
यावन्न स्मरेज्जन्म तावत् स्वर्गे महीयते॥

ततः स्वर्गात् परिभ्रष्टः क्षीणकर्मा दिवश्च्युतः।
हिरण्यरत्नसंपूर्णे समृद्धे जायते कुले।
तदेव स्मरते तीर्थं स्मरणात् तत्र गच्छति॥

देशस्थो यदि वारण्ये विदेषस्थोऽथवा गृहे।
प्रयागं स्मरमाणोऽपि यस्तु प्राणान् परित्यजेत्।
ब्रह्मलोकमवाप्नोति वदन्ति ऋषिपुङ्गवाः॥

'दु:खियों, दरिद्रों और निश्चित व्यवसाय करने वालों के कल्याण के लिए प्रयाग क्षेत्र ही प्रशस्त कहा गया है। इसे कभी (कहीं) प्रकट नहीं करना चाहिए। श्रेष्ठ ऋषियों का कथन है कि जो मनुष्य रोगग्रस्त, दीन अथवा वृद्ध होकर गंगा और यमुना के संगम में प्राणों का त्याग करता है, वह तपाए हुए सुवर्ण की-सी कांति वाले एवं सूर्य-सदृश तेजस्वी विमानों द्वारा स्वर्ग में जाकर गंधर्वों और अप्सराओं के मध्य में आनंद का उपभोग करता है और अपने अभीष्ट मनोरथों को प्राप्त कर लेता है। वहाँ वह संपूर्ण रत्नों से सुशोभित, अनेक रंगों की ध्वजाओं से मंडित, अप्सराओं से खचाखच भरे हुए शुभ लक्षणसंपन्न दिव्य विमानों में बैठकर आनंद मनाता है तथा मांगलिक गीतों और बाजों के शब्दों द्वारा नींद से जगाया जाता है। इस प्रकार जब तक वह अपने जन्म का स्मरण नहीं करता, तब तक स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित होता

है। तत्पश्चात् पुण्य क्षीण होने पर उसका स्वर्ग से पतन हो जाता है। इस प्रकार स्वर्ग से भ्रष्ट हुआ वह जीव सुवर्ण-रत्न से परिपूर्ण एवं समृद्ध कुल में जन्म धारण करता है और समयानुसार पुनः उसी तीर्थ का स्मरण करता है तथा स्मरण आने से पुनः उस प्रयाग क्षेत्र की यात्रा करता है। ऋषिवरों का कथन है कि मनुष्य चाहे देश में हो अथवा विदेश में, घर में हो अथवा वन में, यदि वह प्रयाग का स्मरण करते हुए प्राणों का परित्याग करता है तो ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है।'

नारदपुराण में प्रयाग-माहात्म्य की चर्चा करते हुए कहा गया है कि गंगा में जहाँ कहीं भी स्नान किया जाए, वह कुरुक्षेत्र के समान पुण्यदायिनी है। उससे दस गुना पुण्य देने वाली गंगा वह बताई गई है, जहाँ वह विंध्यपर्वत से संयुक्त होती है। काशी की उत्तरवाहिनी गंगा विंध्यपर्वत के निकटवर्तिनी गंगा से सौ गुनी पुण्यदायिनी कही गई है। काशी से भी सौ गुना पुण्य वहाँ बताया गया है, जहाँ गंगा यमुना से मिलती है। वह भी जहाँ तक पश्चिमवाहिनी है, वहाँ उसमें सहस्त्र गुना पुण्य प्राप्त होता है। पश्चिमवाहिनी गंगा दर्शनमात्र से ही ब्रह्महत्या आदि पापों का निवारण करने वाली है। पश्चिमाभिमुखी गंगा यमुना के साथ मिली है। वह सौ कल्पों का पाप हर लेती है। माघ मास में तो वह और भी दुर्लभ है। पृथ्वी पर वह अमृतरूप कही जाती है। गंगा और यमुना के संगम का जल वेणी के नाम से प्रसिद्ध है, जिसमें माघ मास में दो घड़ी का स्नान देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। पृथ्वी पर जितने तीर्थ तथा जितनी पुरियाँ हैं, वे मकर राशि पर सूर्य के रहते हुए माघ मास में वेणी में स्नान करने के लिए आती हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, रुद्र, आदित्य, मरुद्गण, गंधर्व, लोकपाल, यक्ष, किन्नर, गुह्यक, अणिमादि गुणों से युक्त अन्यान्य तत्त्वदर्शी पुरुष, ब्रह्माणी, पार्वती, लक्ष्मी, शची, मेधा, अदिति, रति, समस्त देवपत्नियाँ, नागपत्नियाँ तथा समस्त पितृगण—ये सब-के-सब माघ मास में त्रिवेणी-स्नान के लिए आते हैं। सत्ययुग में तो उक्त सभी तीर्थ प्रत्यक्ष रूप धारण करके आते थे, किंतु कलियुग में वे छिपे रूप से आते हैं। पापियों के संगदोष से काले पड़े हुए संपूर्ण तीर्थ प्रयाग में माघ मास में स्नान करने से श्वेतवर्ण के हो जाते हैं।

मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव।
स्नानेनानेन मे देव यथोक्तफलदो भव॥

(ना., उत्तर. 63/13-14)

'गोविंद! अच्युत! मधव! देव! मकर राशि पर सूर्य के रहते हुए माघ मास में त्रिवेणी के जल में किए हुए मेरे इस स्नान से संतुष्ट हो आप शास्त्रोक्त फल देने वाले हैं।'

—इस मंत्र का उच्चारण करके मौनभाव से स्नान करें। 'वासुदेव, हरि, कृष्ण और माधव' आदि नामों का बार-बार स्मरण करें। मनुष्य अपने घर पर गरम जल से साठ वर्षों तक जो स्नान करता है, उसके समान फल की प्राप्ति सूर्य के मकर राशि पर रहते समय एक बार के स्नान से हो जाती है। बाहर बावड़ी आदि में किया हुआ स्नान बारह वर्षों के स्नान का फल देने वाला है। पोखरे में स्नान करने पर उससे दूना और नदी आदि में स्नान करने पर चौगुना फल प्राप्त होता है। देवकुंड में वही फल दस गुना और महानदी में सौ गुना होता है। दो महानदियों के संगम में स्नान करने पर चार सौ गुने फल की प्राप्ति होती है किंतु सूर्य के मकर राशि पर रहते समय प्रयाग की गंगा में स्नान करने मात्र से वह सारा फल सहस्त्र गुना होकर मिलता है।

प्रयागतीर्थ को पूर्वकाल में ब्रह्माजी ने प्रकट किया था, जिसके गर्भ में सरस्वती छिपी हैं, वह श्वेत और श्याम जल की धारा ब्रह्मलोक में जाने का मार्ग है। गंगा का जल यदि माघ मास में सुलभ हो तो वह पापरूपी ईंधन को जलाने के लिए दावानल, गर्भवास के कष्ट का नाश करने वाला तथा विष्णुलोक एवं मोक्ष की प्राप्ति कराने वाला बताया गया है।

इतना ही नहीं, स्वर्गवासी देवता सदा यह गाया करते हैं कि 'क्या प्रयाग में कभी माघमास हमें मिलेगा, जहाँ स्नान करने वाले मानव फिर कभी गर्भ की वेदना का अनुभव नहीं करते और भगवान् विष्णु के समीप स्थित होते हैं।' जल और वायु पीकर रहने, पत्ते चबाने, देह सुखाने, दीर्घकाल तक घोर

तपस्या करने और योग साधने से मनुष्य जिस गति को प्राप्त होते हैं, उसे प्रयाग के स्नानमात्र से ही पा लेते हैं।

प्रयागमंडल का विस्तार पाँच योजन है। वहाँ तीन कुंड हैं। उनके बीच में गंगा है। प्रयाग में प्रवेश करनेमात्र से पापों का तत्काल नाश हो जाता है। जो पवित्र है, वह मन और इंद्रियों को संयम में रखकर, हिंसा से दूर हो यदि श्रद्धापूर्वक स्नान करता है तो पापमुक्त होता है और परमपद को प्राप्त करता है। नैमिष, पुष्कर, गोतीर्थ, सिंधु-सागरसंगम, गया, धेनुक और गंगासागर संगम—ये तथा और भी जो बहुत से पुण्यमय पर्वत हैं, वे सब मिलकर तीन करोड़ दस हजार तीर्थ प्रयाग में विद्यमान हैं। सूर्यपुत्री यमुनादेवी तीनों लोकों में विख्यात हैं। वे लोकपावनी यमुना प्रयाग में गंगा से मिली हैं। गंगा और यमुना के बीच का भू-भाग पृथ्वी पर सर्वोत्तम माना गया है। तीनों लोकों में प्रयाग से बढ़कर परम पवित्र तीर्थ नहीं है। प्रयाग परमपदस्वरूप है। उसका दर्शन करके मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाते हैं।

संपूर्ण देवताओं से सुरक्षित प्रयागतीर्थ में जाकर जो ब्रह्मचर्य का पालन तथा देवता और पितरों का तर्पण करते हुए एक मास तक वहाँ निवास करता है, वह जहाँ कहीं भी रहकर संपूर्ण मनोवांछित कामनाओं को प्राप्त कर लेता है। गंगा और यमुना का संगम संपूर्ण लोकों में विख्यात है। वहाँ भक्तिपूर्वक स्नान करने से जिसके-जिसके मन में जो-जो कामना होती है, उसकी वह कामना अवश्य पूर्ण हो जाती है। हरिद्वार, प्रयाग और गंगासागर संगम में स्नान करने मात्र से मनुष्य अपनी रुचि के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के धाम में चला जाता है। माघ मास में सितासित संगम के जल में जो स्नान किया जाता है, वह सौ कोटि कल्पों में भी कभी पुनरावृत्ति का अवसर नहीं देता।

प्रयाग के ही अंतर्गत प्रतिष्ठानपुर (झूँसी) में एक अत्यंत विख्यात कूप है। वहाँ मन को संयम में रखकर स्नान करने के पश्चात् देवताओं और पितरों का तर्पण करे और ब्रह्मचर्य का पालने करते हुए क्रोध को जीतें। इस प्रकार जो तीन रात वहाँ निवास करता है, वह सब पापों से शुद्धचित्त हो अश्वमेध-

यज्ञ का फल पाता है। प्रतिष्ठान से उत्तर और भागीरथी से पूर्व हंसप्रतपन नामक लोकविख्यात तीर्थ है। वहाँ स्नान करने मात्र से अश्वमेध-यज्ञ का फल प्राप्त होता है और जब तक चंद्रमा और सूर्य रहते हैं, तब तक वह स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित होता है। तदनंतर वासुकि नाग से उत्तर भोगवती के पास जाकर दशाश्वमेध तीर्थ है। वह परम उत्तम माना गया है। वहाँ स्नान करके मनुष्य अश्वमेध-यज्ञ का फल पाता है और इहलोक में धनाढ्य, रूपवान, दक्ष, दाता एवं धार्मिक होता है, सत्यवादियों को जो फल मिलता है और अहिंसा के पालन से जो धर्म होता है, उन सबका फल दशाश्वमेध तीर्थ में जानेमात्र से मिल जाता है। पायसी के उत्तर और प्रयाग के दक्षिण तट पर ऋणमोचन नामक तीर्थ है, जो परम उत्तम माना गया है। वहाँ स्नान करके एक रात रहने से मनुष्य सब ऋणों से मुक्त हो जाता है और देवता होकर स्वर्गलोक में जाता है।

प्रयाग में मुंडन कराना अत्यावश्यक होता है, क्योंकि मनुष्यों के सब पाप केशों की जड़ का आश्रय लेकर टिके रहते हैं। अतः प्रयागतीर्थ में स्नान करने के पहले मुंडन करा लेना चाहिए। यदि पौष और माघ के महीने में श्रवण नक्षत्र, व्यतिपातयोग तथा रविवार से युक्त अमावस्या तिथि हो तो उसे अर्घोदयपर्व समझना चाहिए। इसका महत्त्व सौ सूर्यग्रहणों से भी अधिक होता है।

यदि प्रयागतीर्थ में अरुणोदय के समय माघ शुक्ला सप्तमी प्राप्त हो तो वह एक हजार सूर्यग्रहणों के समान है। यदि अयनारंभ के दिन प्रयाग का स्नान मिले तो कोटि गुना पुण्य होता है और विषुवयोग में लाख गुने फल की प्राप्ति होती है। षडतीति तथा विष्णुपदी में सहस्र गुना पुण्य प्राप्त होता है। अपने वैभव-विस्तार के अनुसार सबको प्रयाग में दान करना चाहिए, इससे तीर्थ का फल बढ़ता है।

जो गंगा और यमुना के संगम पर कन्यादान करता है, वह उस पुण्यकर्म के प्रभाव से कभी भयंकर नरक का दर्शन नहीं करता। प्रयाग-प्रतिष्ठान से लेकर वासुकि नाग के तालाब से आगे तक कंबल और अश्वतर नामक जो

दोनों नाग हैं, वहाँ से बहुमूलक नाग तक का जो भू-भाग है, यही प्रजापति-क्षेत्र है, जो तीनों लोकों में विख्यात है। इस क्षेत्र में जो स्नान करते हैं, वे स्वर्ग में जाते हैं और जो मर जाते हैं, उनका फिर जन्म नहीं होता। सन्मार्ग में स्थित बुद्धिमान योगी को जो गति प्राप्त होती है, वही गंगा-यमुना के संगम में प्राणत्याग करने वाले को भी मिलती है।

प्रयाग के दक्षिण यमुना-तट पर विख्यात अग्नितीर्थ है। पश्चिम में धर्मराज तीर्थ है। वहाँ जो स्नान करते हैं, वे स्वर्ग में जाते हैं और जो मरते हैं, उनका फिर संसार में जन्म नहीं होता। यमुना के उत्तर तट पर बहुत से पापनाशक तीर्थ हैं, जो बड़े-बड़े मुनीश्वरों से सेवित हैं, उनमें स्नान करने वाले स्वर्गलोक को जाते हैं और जो मर जाते हैं, उनका मोक्ष हो जाता है। गंगा और यमुना दोनों का पुण्यफल एक समान है। केवल जेठी होने से गंगा सर्वत्र पूजी जाती हैं।

पद्मपुराण में प्रयागतीर्थ की महिमा के विषय में एक बहुत ही सुंदर कथा आई है, जो इस प्रकार है—

नर्मदा नदी के किनारे माहिष्मतीपुरी में एक रूप-यौवन-संपन्ना, नाच-गान में निपुण मोहिनी नाम की वेश्या रहती थी। धन के लोभ में उसने अनेक महापाप किए थे। वृद्धावस्था आने पर उसको सुबुद्धि आई और उसने अपना धन बगीचे, पोखरे, बावली, कुआँ, देवमंदिर और धर्मशाला बनवाने में लगाया। यात्रियों के लिए भोजन और जगह-जगह जल की भी व्यवस्था की। एक बार वह बीमार पड़ी। अपना सारा धन ब्राह्मणों को देना चाहा, पर ब्राह्मणों के न लेने पर उसने एक भाग अपनी दासियों को और दूसरा परदेशी यात्रियों को दे दिया। स्वयं निर्धन हो गई। इस समय जरद्गवा नामक मोहिनी की एक सखी उसकी सेवा करती थी। भाग्यवश कुछ दिनों में वह अच्छी हो गई, पर निर्धनता की अवस्था में जरद्गवा के घर रहने में उसे बड़ा संकोच हुआ और वह घर से निकल गई।

एक दिन मोहिनी वन के मार्ग से जा रही थी। चोरों ने उसके पास धन समझकर लोभ से उसे मार दिया। पर जब धन नहीं मिला, तब वे उसे वन में

ही छोड़कर चल दिए। अभी मोहिनी की साँस चल रही थी, उसी समय एक वानप्रस्थी महात्मा इस प्रयाग के जल को कमंडलु में लिये वहाँ आ पहुँचे और तीर्थ की महिमा कहते हुए उन्होंने मोहिनी के मुख में वह जल डाल दिया। उस समय मोहिनी के मन में किसी राजा की महारानी बनने की इच्छा थी। मुँह में प्रयाग का जल पड़ते ही मोहिनी मर गई और दूसरे जन्म में वह द्रविड़ देश में राजा वीरवर्मा की हेमांगी नामक महारानी हुई। राजमंत्री की लड़की कला उसकी सखी थी। एक दिन हेमांगी कला के घर गई और कला ने एक सोने की पेटी में उसे एक विचित्र पुस्तक दिखाई, जिसमें अवतारों के चित्रों के साथ-साथ सारे भूगोल का मानचित्र था। मानचित्र देखते-देखते हेमांगी की दृष्टि इस प्रयागतीर्थ पर पड़ी और उसे तुरंत अपने पूर्वजन्म का स्मरण हो आया। तदनंतर उसने घर लौटकर अपने पति से पूर्वजन्म की सारी घटनाएँ सुनाकर प्रार्थना की कि 'नाथ! मैं उस तीर्थ-जल के प्रसाद से ही आपके घर की रानी बनी हूँ। इस समय आपके साथ चलकर तीर्थराज प्रयाग का दर्शन करना चाहती हूँ। जब मैं उस तीर्थराज के लिए चल पड़ूँगी, तभी अन्न-जल ग्रहण करूँगी।' राजा के पूरा विश्वास न करने पर उसी समय आकाशवाणी ने कहा, 'राजन्! तुम्हारी पत्नी का कथन सत्य है। परम पवित्र प्रयागतीर्थ में जाकर तुम स्नान करो। इससे तुम्हारी सारी इच्छाएँ पूर्ण हो जाएँगी।' तब तो राजा आकाशवाणी को नमस्कार करके मंत्री को सारा भार सौंप, हेमांगी के साथ चल पड़े और कुछ दिनों में प्रयाग में आ पहुँचे। 'इस प्रयाग-स्नान के पुण्य से हम पर भगवान् विष्णु प्रसन्न हों'—इस इच्छा से तीर्थ में स्नान करते ही भगवान् विष्णु और ब्रह्माजी क्रमश: गरुड़ और हंस पर बैठे हुए वहाँ आ पहुँचे। राजा वीरवर्मा ने मस्तक झुकाकर भगवान् के दोनों स्वरूपों को प्रणाम किया और एकाग्रचित्त से उनकी विलक्षण स्तुति की। फिर हेमांगी ने उनका स्तवन करके मनोरथ पूर्ण करने की प्रार्थना की। भगवान् विष्णु और ब्रह्माजी ने प्रसन्न होकर हेमांगी की बड़ी प्रशंसा की और फिर दोनों को अपने साथ सत्यलोक में ले गए।

अवंतिका-माहात्म्य

आधुनिक लोग अवंतिकापुरी को उज्जैन कहते हैं। उज्जैन का दूसरा नाम महाकालपुरी भी है। महाकालपुरी का नाम प्रत्येक युग में परिवर्तित होता रहता है। इसके संबंध में कहा गया है—

कल्पे कल्पेऽखिलं विश्वं कालयेद्यः स्वलीलया।
तं कालं कलयित्वा यो महाकालोऽभवत्किल॥

(स्क.,का. ख. 7/91)

इस स्थान को पृथ्वी का 'नाभिदेश' कहा गया है। द्वादश ज्योतिर्लिंगों में महाकाल लिंग यहीं है और इक्यावन शक्तिपीठों में यहाँ एक शक्तिपीठ भी है। द्वापर में श्रीकृष्ण-बलराम यहीं महर्षि संदीपनि के आश्रम में अध्ययन करने आए थे। महाराज विक्रमादित्य के समय में उज्जयिनी भारत की राजधानी थी। भारतीय ज्योतिषशास्त्र में देशांतर की शून्य रेखा उज्जयिनी से प्रारंभ हुई मानी जाती थी। यह सप्तपुरियों में एक पुरी है। यहाँ बारहवें वर्ष में कुंभ का मेला लगता है।

नारदपुराण का कथन है कि अवंतीतीर्थ का तथा देववंद्य भगवान् का माहात्म्य अपार है। महाकाल वन परम पवित्र एवं परम उत्तम तपोभूमि है। महाकाल वन से बढ़कर दूसरा कोई क्षेत्र इस पृथ्वी पर नहीं है। यहाँ कपालयोग नामक तीर्थ है, जिसमें भक्तिपूर्वक स्नान करने से ब्रह्महत्यारा मनुष्य भी शुद्ध हो जाता है।

अवंती के प्रत्येक कल्प में भिन्न-भिन्न नाम होते हैं। यथा—कनकशृंगा, कुशस्थली, अवंतिका, पद्मावती, कुमुदवती, उज्जयिनी, विशाला और अमरावती। जो मनुष्य शिप्रा नदी में स्नान करके भगवान् महेश्वर का पूजन करता है, वह महादेवजी तथा महादेवी की कृपा से संपूर्ण कामनाओं को पा लेता है।

शिप्रा नदी सर्वत्र पुण्यदायिनी, अतिशय पवित्र तथा पापहारिणी है, परंतु अवंतीपुरी में उसका महत्त्व बहुत बढ़ जाता है। पूर्वकाल में भगवान् विष्णु

के जय और विजय नाम वाले दो द्वारपाल थे। वे दोनों सदा वैकुंठ के द्वार पर खड़े रहते थे। एक समय ब्रह्माजी के मानसपुत्र सनकादि स्वेच्छा से विष्णु के परमधाम में पधारे। द्वार पर आते ही द्वारपालों ने सहसा रोक दिया। द्वारपालों के इस बरताव से सनकादिकों को बड़ा दु:ख हुआ। परिणामत: उन मुनिकुमारों ने जय-विजय को असुर होने का शाप दे दिया।

सनकादिकुमारों के द्वारा शापित होकर वे दोनों जय और विजय तत्काल आसुरी योनि में चले गए। वे दोनों प्रथम जन्म में हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष, दूसरे जन्म में कुंभकर्ण तथा रावण और तीसरे जन्म में दंतवक्र एवं शिशुपाल कहलाए। हिरण्याक्ष नामक दैत्य बड़ा बलवान् था। उसके अत्याचारों से चारों ओर हाहाकार मच गया। वह पृथ्वी को रसातल में लेकर चला गया।

संसार की ऐसी दुरवस्था देख भगवान् महाविष्णु ने वाराह रूप से प्रकट होकर पृथ्वी का उद्धार किया। फलस्वरूप चारों दिशाओं में जो कोलाहल होते रहते थे, वे सब शांत हो गए। उन्हीं भगवान् वाराह के हृदय से यह सनातन नदी शिप्रा प्रकट हुई है, जो आनंदमय जल से परिपूर्ण तथा आनंददायक वर देने वाली है। रमणीय महाकाल वन में एक परम सुंदर पद्मावतीपुरी है। उस पुरी में परम रम्य एक सुंदर कुंड है। उसमें स्नान करके सब मनुष्य सनातन शिवलोक को जाते हैं। उसी सुंदर वन में लोकपावनी शिप्रा लीन हुई है।

भगवान् वाराह ने समस्त दुष्ट राक्षसों का संहार करके जब देवताओं को निर्भय कर दिया, तब इंद्र आदि सब देवताओं ने हाथ जोड़कर उन महाविष्णु को नमस्कार किया और सामने खड़े होकर स्वर्ग-प्राप्ति का उपाय पूछा। देवताओं को आश्वस्त करते हुए भगवान् वाराह ने कहा, 'देवताओ! महाकाल वन में तुम्हारी मनोरथ-सिद्धि का कारणभूत गुह्य पुण्य-स्थान है। जहाँ मेरे शरीर से उत्पन्न हुई शिप्रा नदी लीन हुई है, वह स्थान लीनगंगा के नाम से विख्यात है। जहाँ सरिताओं में श्रेष्ठ लीनगंगा, प्राची, सरस्वती, पुष्कर, गयातीर्थ तथा शुभ पुरुषोत्तम सरोवर है, उस शिप्रा नदी को जाओ।

भगवान् वाराह का यह वचन सुनकर ब्रह्मा-इंद्रादि सब देवता परम सुंदर महाकाल वन में, जहाँ सरिताओं में श्रेष्ठ शिप्रा बहती है, गए। वहाँ

स्नान-दानादि शुभकर्म करके उस पुण्य के प्रभाव से वे अपने-अपने लोक को प्राप्त हुए। इस प्रकार शिप्रा नदी संपूर्ण लोकों को पवित्र करने वाली बताई गई है। स्कंदपुराण 'आवंत्यखंड-अवंती-क्षेत्र-माहात्म्य' में वर्णन आया है—

महाकालः सरिच्छिप्रा गतिश्चैव सुनिर्मला।
उज्जयिन्यां विशालाक्षि वासः कस्य न रोचयेत्॥

स्नानं कृत्वा नरो यस्तु महानद्यां हि दुर्लभम्।
महाकालं नमस्कृतय नरो मृत्युं न शोचयेत्॥
मृतः कीटः पतङ्गो वा रुद्रस्यानुचरो भवेत्॥

'जहाँ भगवान् महाकाल हैं, शिप्रा नदी है और सुनिर्मल गति मिलती है, उस उज्जयिनी में भला किसे रहना अच्छा न लगेगा। महानदी शिप्रा में स्नान करके, जो कठिनाई से मिलता है तथा महाकाल को नमस्कार कर लेने पर फिर मृत्यु की कोई चिंता नहीं रहती। कीट या पतंग भी मरने पर रुद्र का अनुचर होता है।'

अवंतिका-माहात्म्य के संबंध में स्कंदपुराण की स्पष्ट मान्यता है—

विपन्नो यत्र वै जन्तुः प्राप्यापि शवतां स्फुटम्।
न पूतिगन्धमाप्नोति समुच्छ्रयति न क्वचित्॥

यमदूता न यस्यां हि प्रविशन्ति कदाचन।
परः कोटीनि लिङ्गानि तस्यां सन्ति पदे पदे॥

हाटकेशो महाकालस्तारकेषस्तथैव च।
एकं लिङ्गं त्रिधा भूत्वा त्रिलोकीं व्याप्य संस्थितम्॥

ज्योतिः सिद्धवटे ज्योतिस्ते पश्यन्तीह ये द्विजाः।
अथवा श्रीमहाकालद्रष्टारः पुण्यराशयः॥

महाकालस्य तल्लिङ्गं यैर्दृष्टं कष्टिभिः क्वचित्।
न स्पृष्टास्ते महापापैर्न दृष्टास्ते यमोद्भटैः॥

महाकाल महाकाल महाकालेति सन्ततम्।
स्मरतः स्मरतो नित्यं स्मरकर्तृस्मरान्तकौ॥

(काशीखंड 7/93-97, 99)

'उज्जयिनी में प्राणी मरकर शव होने पर भी न तो दुर्गंध को प्राप्त होता है और न सड़ता ही है। वहाँ पर कभी भी यमदूत प्रवेश नहीं करते और वहाँ पर करोड़ों शिव पद-पद पर वर्तमान हैं। एक ही ज्योतिर्लिंग हाटकेश, महाकाल और तारकेश्वर—इन तीनों रूपों से त्रैलोक्य में व्याप्त होकर स्थित है। जो द्विजातिगण इस उज्जयिनी सिद्धवट में ज्योतिः स्वरूप ज्योतिर्लिंग अथवा श्रीमहाकालेश्वर के दर्शन करते हैं, वे पुण्यराशि परं ज्योति को देख लेते हैं। संसार के जिन दीन-दुःखियों ने कभी भी महाकालेश्वर के लिंग का दर्शन किया है, उन्हें न तो महापाप छूते हैं और न यमदूतगण ही सताते हैं। महाकाल, महाकाल, महाकाल—इस प्रकार सर्वदा स्मरण करने वाले को कामदेव के पिता (विष्णु) और शत्रु (शिव)—ये दोनों स्मरण करते रहते हैं।'

स्कंदपुराण में 'अवंतीक्षेत्र-माहात्म्य' के अंतर्गत शिप्रा-माहात्म्य की एक बहुत ही सुंदर कथा मिलती है। एक समय की बात है, भगवान् शिव हाथ में कपाल लेकर नागलोक की भोगवतीपुरी में भिक्षा के लिए गए और घर-घर घूमकर उन्होंने 'भिक्षां देहि' (भिक्षा दो) की रट लगाई, किंतु उन भूखे भगवान् शिव को किसी ने भी भिक्षा नहीं दी। तब वे पुरी से बाहर निकले और उस स्थान पर गए, जहाँ नागलोक के संरक्षण में अमृत के इक्कीस कुंड भरे हुए थे। वहाँ पहुँचकर सर्वांतर्यामी भगवान् शंकर ने अपने तृतीय नेत्र के मार्ग से अमृत के समस्त कुंडों को पी लिया और फिर वहाँ से उठकर चल दिए। यह सब देख-सुनकर समस्त नागलोक काँप उठा और सब एक-दूसरे से पूछने लगे, 'यह किसका कर्म है? किसने क्या कर दिया है, जिससे इन कुंडों का अमृत यहाँ से चला गया?'

परस्पर ऐसा कहकर वासुकि आदि सभी नाग किसी महात्मा का अपराध हो जाने की आशंका से नगर छोड़कर बाहर निकले और 'क्या करें, कहाँ जाएँ? अब हमारा जीवन-निर्वाह कैसे होगा?' इत्यादि रूप में चिंता प्रकट करते हुए स्त्री-बालकों के साथ वे मन-ही-मन भगवान् श्रीहरि की शरण में गए। तब उन पर अनुग्रह करने के लिए आकाशवाणी हुई—'नागगण! तुम लोगों ने घर पर आए हुए देवता का अपमान किया, अतिथि-सत्कार का समय जानकर हाथ में कपाल लिये भिक्षु के वेश में भिक्षा लेने के लिए साक्षात् भगवान् शंकर तुम्हारे द्वार पर आए थे। परंतु भोगवतीपुरी में किसी ने भी उनको भिक्षा नहीं दी, तब वे बाहर चले गए हैं। इसी व्यतिक्रम के कारण तुम्हारे कुंडों का संपूर्ण अमृत नष्ट हो गया है। अब तुम लोग पाताल से निकलकर उत्तम महाकाल वन में जाओ। वहाँ तीनों लोकों को पवित्र करने वाली श्रेष्ठ नदी शिप्रा बहती है, जो समस्त कामनाओं और फलों को देने वाली है। वहाँ जाकर तुम सब लोग विधिपूर्वक स्नान और देवाधिदेव भगवान् शिव का भजन करो। ऐसा करने पर नागलोक में तुम्हारी नष्ट हुई अमृतराशि पुनः प्राप्त हो जाएगी।'

इस आकाशवाणी को सुनकर सब नाग स्त्री-बालक और वृद्धों के साथ महाकाल वन में गए। उन्होंने उस त्रिभुवन-वंदिता शिप्रा नदी का दर्शन किया। इससे उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और वहाँ स्नान-दानादि करके उन्होंने महादेवजी की आराधना की। कभी मलिन न होने वाली कमलपुष्पों की माला, नाना प्रकार के फूल, अक्षत, वस्त्र, पुष्पहार, अनुलेपन, चंदन, गंध, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, दक्षिणा और कपूर की आरती आदि पूजन-सामग्री लेकर वे सब-के-सब महादेवजी की सेवा में उपस्थित हुए।

नासिक-माहात्म्य

नासिक को गोदावरी, पंचवटी और गौतमी आदि नामों से भी जाना जाता है। जहाँ लक्ष्मणजी ने रावण की बहिन शूर्पणखा की नाक काटी थी और जहाँ सीता-हरण हुआ था, वह स्थान नासिक पंचवटी के नाम से प्रसिद्ध है। नासिक पंचवटी से थोड़ी दूर भगवान् त्र्यंबकेश्वर का स्थान है। यहाँ के निकटवर्ती

ब्रह्मगिरि नामक पर्वत से पूतसलिला गोदावरी निकलती है। जो माहात्म्य उत्तर भारत में पाप-विमोचिनी गंगा का है, वही दक्षिण में गोदावरी का है। दक्षिण में यह गंगा नाम से ही प्रख्यात है। जैसे इस पृथ्वी पर गंगावतरण का श्रेय तपस्वी भगीरथ को है, वैसे ही गोदावरी का प्रवाह ऋषिश्रेष्ठ गौतम की घोर तपस्या का फल है, जो उन्हें भगवान् आशुतोष से प्राप्त हुआ था।

भगीरथ के प्रयत्न से भूतल पर अवतरित हुई माता गंगा जैसे भागीरथी कहलाती हैं, वैसे ही गौतम ऋषि की तपस्या के फलस्वरूप आई हुई गोदावरी का दूसरा नाम गौतमी है। इनकी भी महिमा बहुत अधिक है। बृहस्पति के सिंह राशि में आने पर यहाँ बड़ा भारी कुंभ का मेला लगता है। इस कुंभ के अवसर पर गोदावरी-स्नान का बड़ा माहात्म्य है। इन्हीं पुण्यतोया गोदावरी के उद्गम स्थान के समीप स्थित त्र्यंबकेश्वर भगवान् की भी बड़ी महिमा है। गौतम ऋषि तथा गोदावरी की प्रार्थनानुसार भगवान् शिव ने इस स्थान में निवास करने की कृपा की और त्र्यंबकेश्वर नाम से विख्यात हुए।

मंदिर के अंदर एक छोटे से गड्ढे में तीन छोटे-छोटे लिंग हैं, जो ब्रह्मा, विष्णु और शिव—इन तीनों देवों के प्रतीक माने जाते हैं। शिवपुराण के अनुसार त्र्यंबकेश्वर के दर्शन और पूजन करने वाले का इस लोक और परलोक में सदा आनंद रहता है। ब्रह्मगिरि पर्वत के ऊपर जाने के लिए चौड़ी-चौड़ी सात सौ सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इन सीढ़ियों पर चढ़ने के बाद 'रामकुंड' और 'लक्ष्मणकुंड' मिलते हैं; शिखर के ऊपर पहुँचने पर गोमुख से निकलती हुई भगवती गोदावरी के दर्शन होते हैं।

नासिक-माहात्म्य के वर्णन-प्रसंग में शिवपुराण, रुद्रसंहिता के अध्याय चौबीस में कहा गया है—

तद्दिनं हि समारभ्य सिंहस्थे च बृहस्पतौ।
आयान्ति सर्वतीर्थानि क्षेत्राणि दैवतानि च॥

सरांसि पुष्करादीनि गङ्गाद्यास्सरितस्तथा।
वासुदेवादयो देवाः सन्ति वै गौतमीतटे॥

इसका आशय है कि सिंह के बृहस्पति में संपूर्ण देवता तथा तीर्थ पुष्कर आदि सरोवर, गंगा आदि नदियाँ, वासुदेव आदि अनेक देवता गौतमी (नासिक) में निवास करते हैं।

गोदावरी में सिंहस्थ पर्व के समय देव, दानव, यक्ष और मनुष्यादि जो कोई गौतमी गंगा में स्नान तथा पान करेगा, वह समस्त संकटों से मुक्त होकर सर्वविजयी होगा। सिंहस्थ गुरु के समय गोदावरी में विधिपूर्वक स्नान, पूजा-पाठ तथा दान करने से मोक्षपद की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य गोदावरी में कुंभ-पर्व के समय 'इंद्रतीर्थ' में स्नान कर 'त्र्यंबकेश्वर' के दर्शन करता है, वह समस्त पापों से छुटकारा प्राप्त कर 'इंद्रलोक' में जाता है और जो कुंभ-पर्व पर इंद्रतीर्थ में स्नान-दानादि कर पितरों का श्राद्ध-तर्पण करता है, वह पितृऋण से मुक्त होकर अक्षयसुख की प्राप्ति करता है।

रुद्रसंहिता, अध्याय सत्ताईस में वर्णन आया है कि जो कोई कुंभ-पर्व के अवसर पर सिंहस्थ में गोदावरी में विधिपूर्वक स्नान तथा त्र्यंबक का दर्शन करता है, उसे समस्त तीर्थों के स्नान का तथा समस्त देवताओं की आराधना एवं दर्शन का पुण्यफल प्राप्त होता है। साथ ही उस मनुष्य के समस्त पापों की निवृत्ति भी हो जाती है।

वैसे तो तीनों लोकों में व्याप्त रहने वाली गोदावरी के स्नान, दर्शन एवं निवास का सर्वदा विशेष महत्त्व रहता है, किंतु सिंहस्थ कुंभकाल में उसका विशेष महत्त्व बढ़ जाता है। इसका कारण यह है कि गोदावरी सिंहस्थ कुंभ-काल में अपने समस्त अंगों को स्वर्ग और पाताल से खींचकर त्र्यंबकक्षेत्र-गोदावरी (नासिक) में निवास करती है। गोदावरी स्थित गौतमी गंगा के किनारे से चारों ओर दस-दस योजन के अंतर में जो मनुष्य जन्म लेता है, उसका पितरों सहित उद्धार हो जाता है।

शिवपुराण में तो गौतमी (गोदावरी) के प्राकट्यतथा माहात्म्य का बड़ा ही सुंदर आख्यान मिलता है, जिसकी संक्षिप्त कथा इस प्रकार है—

पूर्वकाल की बात है, गौतम नाम से विख्यात एक श्रेष्ठ ऋषि रहते थे, जिनकी परम धार्मिक पत्नी का नाम अहल्या था। दक्षिण दिशा में जो ब्रह्मगिरि

है, वहीं उन्होंने दस हजार वर्षों तक तपस्या की थी। एक समय वहाँ सौ वर्षों तक बड़ा भयानक अववर्षण हो गया। सब लोग महान् दु:ख में पड़ गए। इस भूतल पर कहीं गीला पत्ता भी नहीं दिखाई देता था। तब गौतम ऋषि ने छह महीने तक तप करके वरुण को प्रसन्न किया। वरुण ने प्रकट होकर वर माँगने को कहा, 'ऋषि ने वृष्टि के लिए प्रार्थना की।' वरुण ने कहा, 'देवताओं के विधान के विरुद्ध वृष्टि न करके मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार तुम्हें सदा अक्षय रहने वाला जल देता हूँ। तुम एक गड्ढा तैयार करो।'

उनके ऐसा कहने पर गौतम ने एक हाथ गहरा गड्ढा खोदा और वरुण ने उसे दिव्य जल से भर दिया तथा परोपकार से सुशोभित होने वाले मुनिश्रेष्ठ गौतम से कहा, 'महामुने! कभी क्षीण न होने वाला यह जल तुम्हारे लिए तीर्थरूप होगा और पृथ्वी पर तुम्हारे ही नाम से इसकी ख्याति होगी। यहाँ किए हुए दान, होम, तप, देवपूजन तथा पितरों का श्राद्ध—सभी अक्षय होंगे।'

उस जल के द्वारा दूसरों का उपकार करके महर्षि गौतम को भी बड़ा सुख मिला। गौतमजी के प्रभाव से उस वन में सब ओर आनंद छा गया।

एक बार वहाँ गौतम के आश्रम में जाकर बसे हुए ब्राह्मणों की स्त्रियाँ जल के प्रसंग को लेकर अहल्या पर नाराज हो गईं। उन्होंने अपने पतियों को उकसाया। उन लोगों ने गौतम का अनिष्ट करने के लिए गणेशजी की आराधना की। भक्तपराधीन गणेशजी ने प्रकट होकर वर माँगने के लिए कहा, तब वे बोले, 'भगवन्! यदि आप हमें वर देना चाहते हैं तो कोई ऐसा उपाय कीजिए, जिससे समस्त ऋषि डाँट-फटकारकर गौतम को आश्रम से बाहर निकाल दें।'

दुष्ट ब्राह्मणों की बात सुनकर गणेशजी ने उन्हें भाँति-भाँति से समझाते हुए कहा, ब्राह्मणो! इस समय तुम उचित कार्य नहीं कर रहे हो। बिना किसी अपराध के गौतमजी पर क्रोध करने के कारण तुम्हारी हानि ही होगी। जिन्होंने पहले उपकार किया हो, उन्हें यदि दु:ख दिया जाए तो वह अपने लिए हितकारक नहीं होता। पहले उपवास के कारण जब तुम लोगों को दु:ख भोगना पड़ता था, तब महर्षि गौतम ने जल की व्यवस्था करके तुम्हें सुख

दिया, परंतु इस समय तुम सब लोग उन्हें दुःख दे रहे हो। ऐसा करना उचित नहीं है। इसलिए तुम लोग कोई दूसरा वर माँगो, किंतु ब्राह्मणों ने गणेशजी की बात नहीं मानी, तब भक्तों के अधीन होने के कारण उन शिवकुमार ने कहा, 'तुम लोगों ने जिस वस्तु के लिए प्रार्थना की है, उसे मैं अवश्य करूँगा, पीछे जो होनहार होगी, होकर ही रहेगी।' ऐसा कहकर वे अंतर्धान हो गए।

उसके बाद उन दुष्ट ऋषियों के कुचक्र से तथा उन्हें प्राप्त हुए वर के कारण एक दिन गौतमजी के खेत में गणेशजी एक दुर्बल गाय बनकर गए। दिए हुए वर के कारण वह गौ काँपती हुई वहाँ जौ आदि चरने लगी। इसी समय दैववश गौतमजी वहाँ आ गए तथा मुट्ठी भर तिनके से उस गौ को हाँकने लगे। उन तिनकों का स्पर्श होते ही वह गौ पृथ्वी पर गिर पड़ी और ऋषि के देखते-देखते उसी क्षण मर गई।

वे द्वेषी ब्राह्मण और उनकी दुष्ट स्त्रियाँ वहाँ छिपकर सबकुछ देख रहे थे। उस गौ के गिरते ही वे सब बोल उठे, 'गौतम ने यह क्या कर डाला?' गौतम भी आश्चर्यचकित हो अहल्या को बुलाकर दुःखपूर्वक बोले, 'देवि! यह क्या हुआ, कैसे हुआ? जान पड़ता है भगवान् मुझ पर कुपित हो गए हैं। अब क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? मुझे हत्या लग गई।'

तत्पश्चात् ब्राह्मण बोले, 'अब तुम्हें अपना मुँह नहीं दिखाना चाहिए। गो-हत्यारे का मुँह देखने पर तत्काल वस्त्रसहित स्नान करना चाहिए। जब तक तुम इस आश्रम में रहोगे तब तक अग्निदेव और पितर हमारे दिए हुए किसी भी हव्य-कव्य को ग्रहण नहीं करेंगे। इसलिए पापी, गोहत्यारे! तुम परिवार सहित यहाँ से अन्यत्र चले जाओ। विलंब न करो।'

तदनंतर गौतम उस स्थान से तत्काल निकल गए और उन सबकी आज्ञा से एक कोस दूर जाकर उन्होंने अपने लिए आश्रम बनाया। वहाँ भी जाकर उन ब्राह्मणों ने कहा, 'जब तक तुम्हारे ऊपर हत्या लगी है, तब तक तुम्हें कोई यज्ञ-यागादि कर्म नहीं करना चाहिए। किसी भी वैदिक देवयज्ञ या पितृयज्ञ के अनुष्ठान का तुम्हें अधिकार नहीं रह गया है।' मुनिवर गौतम उनके कथनानुसार किसी तरह एक पक्ष बिताकर उस दुःख से दुःखी

हो बारंबार उन मुनियों से अपनी शुद्धि के लिए प्रार्थना करने लगे। उनके दीनभाव से प्रार्थना करने पर उन ब्राह्मणों ने कहा, 'गौतम! तुम अपने पाप को प्रकट करते हुए तीन बार सारी पृथ्वी की परिक्रमा करो। फिर लौटकर यहाँ एक महीने तक व्रत करो। उसके बाद इस ब्रह्मगिरि की एक सौ एक परिक्रमा करने के पश्चात् तुम्हारी शुद्धि होगी। अथवा यहाँ गंगाजी को ले आकर उन्हीं के जल से स्नान करो तथा एक करोड़ पार्थिव लिंग बनाकर महादेवजी की आराधना करो। फिर गंगा में स्नान करके इस पर्वत की ग्यारह बार परिक्रमा करो। तत्पश्चात् सौ घड़ों के जल से पार्थिव शिवलिंग को स्नान कराने पर तुम्हारा उद्धार होगा।'

तत्पश्चात् उन ब्राह्मणों की आज्ञा को शिरोधार्य कर महर्षि गौतम ने भगवान् शिव की उपासना प्रारंभ कर दी। पत्नीसहित गौतम ऋषि की आराधना से संतुष्ट हुए भगवान् शिव वहाँ शिवा और प्रमथगणों के साथ प्रकट होकर बोले, 'महामुने! मैं तुम्हारी उत्तम भक्ति से बहुत प्रसन्न हूँ। तुम कोई वर माँगो।' उस समय भगवान् शिव को प्रणाम करके मुनि ने दोनों हाथ जोड़कर कहा, 'देव! मुझे निष्पाप कर दीजिए।' इस पर भगवान् शिव ने कहा, 'मुने! तुम धन्य हो, कृतकृत्य हो और सदा ही निष्पाप हो। इन दुष्टों ने तुम्हारे साथ छल किया है। वे सब-के-सब कृतघ्न हैं। उनका कभी उद्धार नहीं हो सकता।'

महादेवजी की बात सुनकर महर्षि गौतम ने कहा, 'हे महेश्वर! उन ऋषियों ने मेरा बहुत बड़ा उपकार किया। यदि उन्होंने यह बरताव न किया होता तो मुझे आपका दर्शन कैसे होता। उनके इस दुराचार से मेरा महान् स्वार्थ सिद्ध हुआ है।' गौतमजी की यह बात सुनकर महेश्वर बड़े प्रसन्न हुए और बोले, 'विप्रवर! तुम धन्य हो, सभी ऋषियों में श्रेष्ठतर हो। मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ। तुम मुझसे कोई दूसरा उत्तम वर माँगो।' इस पर गौतमजी ने कहा, 'हे देवेश! यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे गंगा प्रदान कीजिए, जिससे लोक का महान् उपकार हो सके। ऐसा वर माँगकर गौतम ने शिव के दोनों चरणारविंद पकड़ लिया। तब शिव ने गंगा से कहा, 'हे देवि! तुम मुनि को पवित्र करो

और तुरंत वापस न जाकर वैवस्वत मनु के अठारहवें कलियुग तक यहीं रहो।' तब गंगाजी ने कहा, 'महेश्वर! यदि मेरा माहात्म्य सब नदियों से अधिक हो, अंबिका तथा गणों के साथ आप भी यहाँ रहें, तभी मैं इस धरातल पर रहूँगी।'

गंगाजी की बात सुनकर भगवान् शिव बोले, 'गंगे! तुम धन्य हो। मेरी बात सुनो। मैं तुमसे अलग नहीं हूँ, तथापि मैं तुम्हारे कथनानुसार यहाँ स्थित रहूँगा।'

भगवान् शिव की बात सुनकर गंगाजी मन-ही-मन प्रसन्न होकर उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगीं। इसी समय देवता, प्राचीन ऋषि, अनेक उत्तम तीर्थ और नाना प्रकार के क्षेत्र वहाँ आ पहुँचे। उन सबने बड़े आदर से जय-जयकार करते हुए गौतम, गंगा तथा शिव का पूजन किया। तदनंतर देवताओं ने मस्तक झुकाकर तथा हाथ जोड़कर उनकी प्रसन्नतापूर्वक स्तुति की। उस समय प्रसन्न हुई गंगा और गिरीश ने देवताओं को वर माँगने के लिए कहा। तब देवता बोले, 'देवेश्वर! यदि आप संतुष्ट हैं और सरिताओं में श्रेष्ठ गंगे! यदि आप भी प्रसन्न हैं तो हमारा तथा मनुष्यों का भला करने के लिए आप कृपापूर्वक यहाँ निवास करें।' इस पर गंगाजी ने कहा, 'देवताओ! फिर तो सबका प्रिय करने के लिए आप लोग स्वयं ही यहाँ क्यों नहीं रहते? मैं तो गौतमजी के पाप का प्रक्षालन करके जैसे आई हूँ, उसी तरह लौट जाऊँगी। आपके समाज में यहाँ मेरी कोई विशेषता समझी जाती है, इस बात का पता कैसे लगे? यदि आप यहाँ मेरी विशेषता सिद्ध कर सकें तो मैं अवश्य यहाँ रहूँगी—इसमें संशय नहीं है।'

गंगाजी की बात सुनकर सब देवताओं ने कहा, 'सरिताओं में श्रेष्ठ गंगे! सबके परम सुहृद बृहस्पतिजी जब-जब सिंह राशि पर स्थित होंगे, तब-तब हम सब लोग यहाँ आया करेंगे, इसमें संशय नहीं है। ग्यारह वर्षों तक लोगों का जो पातक यहाँ प्रक्षालित होगा, उससे मलिन हो जाने पर हम उसी पापराशि को धोने के लिए आदरपूर्वक तुम्हारे पास आएँगे। हमने यह सर्वथा सच्ची बात कही है। सरिद्वरे! महादेवि! अत: तुमको और भगवान् शंकर को समस्त लोकों पर अनुग्रह तथा हमारा प्रिय करने के लिए यहाँ नित्य निवास

करना चाहिए। गुरु (बृहस्पति) जब तक सिंह राशि पर रहेंगे, तभी तक हम यहाँ निवास करेंगे। उस समय तुम्हारे जल में त्रिकालस्नान और भगवान् शंकर का दर्शन करके हम शुद्ध होंगे। फिर तुम्हारी आज्ञा लेकर अपने स्थान को लौटेंगे।'

इस प्रकार उन देवताओं तथा महर्षि गौतम के प्रार्थना करने पर भगवान् शंकर और सरिताओं में श्रेष्ठ गंगा—दोनों वहाँ स्थित हो गए। वहाँ की गंगा गौतमी (गोदावरी) नाम से विख्यात हुईं और भगवान् शिव का ज्योतिर्मय लिंग त्र्यंबक कहलाया। यह ज्योतिर्लिंग महान् पातकों का नाश करने वाला है। उसी दिन से लेकर जब-जब बृहस्पति सिंह राशि में स्थित होते हैं, तब-तब सब तीर्थ, क्षेत्र, देवता, पुष्कर आदि सरोवर, गंगा आदि नदियाँ तथा श्रीविष्णु आदि देवगण अवश्य ही गौतमी के तट पर पधारते और वास करते हैं। वे जब तक गौतमी के किनारे रहते हैं, तब तक अपने स्थान पर उनका कोई फल नहीं होता। जब वे अपने लोक में लौट आते हैं, तभी वहाँ उनके सेवन का फल मिलता है। यह त्र्यंबक नाम से प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग गौतमी के तट पर स्थित है और बड़े-बड़े पातकों का नाश करने वाला है। जो भक्तिभाव से इस त्र्यंबक लिंग का दर्शन, पूजन, स्तवन एवं वंदन करता है, वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।

(गीताप्रेस से प्रकाशित महाकुंभ-पर्व से साभार)

□

महासंयोग का महाकुंभ

—अजय सिंह*

—डॉ. प्रदीप कुमार राव**

144 वर्षों में बाद प्रयागराज महाकुंभ में बने महासंयोग में माघ महीने के शुक्ल पक्ष की एकादशी तद्नुसार 8 फरवरी शाम छह बजे तक 42 करोड़ से अधिक श्रद्धालु गंगा, यमुना, सरस्वती की त्रिवेणी में स्नान कर पुण्य फल की प्राप्ति कर चुके थे। अनुमान है कि महाशिवरात्री तक यह आँकड़ा पचास करोड़ को पार कर जाएगा। जितनी उम्मीद थी, उससे कहीं अधिक आस्थावान स्त्री-पुरुष-बच्चे-बुजुर्ग और युवा महाकुंभ में पहुँच रहे हैं। अमृत कुंभ से छलकी बूँदों से हरिद्वार, उज्जैन और नासिक के साथ मोक्षदायिनी बने प्रयागराज में महाकुंभ के मौके पर सनातन की शक्ति देखकर संसार चकित रह गया है। दिव्य महाकुंभ का शुभारंभ भव्य अंदाज में हुआ। यह पूरी दुनिया में आकर्षण का केंद्र बन गया। पौष पूर्णिमा पर ही पौने दो करोड़ से अधिक लोगों ने पुण्य की डुबकी लगाई। स्नान के लिए लगभग 12 किलोमीटर का घाट तैयार था। पहले स्नान पर संगम किनारे आस्था की ऐसी अद्भुत आभा देखने को मिली कि प्रयागराज मेला प्राधिकरण के सारे अनुमान धरे के धरे रह गए। इससे पहले पौष पूर्णिमा पर इतनी संख्या में लोग पहले कभी नहीं जुटे थे। फिर जब सूर्यदेव का धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश हुआ और सूर्य देव उत्तरायण हुए तो मकर संक्रांति की वेला में 14 जनवरी को भी आस्था

* वरिष्ठ पत्रकार

** कुलसचिव, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर

का ऐसा सैलाब उमड़ा कि दुनिया देखती रह गई। प्रयागराज महाकुंभ में उस दिन 4 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने संगम स्नान किया। मौनी अमावस्या पर संख्या के सारे पुराने रिकॉर्ड टूट गए।

राज्य सरकार का अनुमान है कि आठ से 10 करोड़ की तादाद में श्रद्धालु पुण्य प्राप्ति की आकांक्षा लिये संगम में पवित्र डुबकी लगाने पहुँचे। यह महाकुंभ का मुख्य स्नान पर्व है। इसके दो दिन पहले से ही लाखों आस्थावान लोग संगम में डुबकी लगाने के लिए उमड़ पड़े थे। मौनी अमावस्या अमृत स्नान से पहले दो दिन (रविवार और सोमवार) को तीन करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं ने संगम, उससे सटे गंगा के घाटों पर स्नान किया और एक नया रिकॉर्ड बनाया। गणतंत्र दिवस पर जहाँ 1.74 करोड़ श्रद्धालुओं ने स्नान किया तो वहीं इसके अगले दिन सोमवार को रात आठ बजे तक 1.55 करोड़ श्रद्धालु संगम में डुबकी लगा चुके थे। इसमें दस लाख कल्पवासी भी शामिल हैं। मौनी अमावस्या के एक दिन पहले, यानी मंगलवार की शाम तक 17 करोड़ से अधिक श्रद्धालु संगम में डुबकी लगा चुके थे। महाकुंभ की विशालता का अंदाजा दिव्य-भव्य-नव्य कुंभ की व्यवस्था के सूत्रधार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी की इस बात से लगाया जा सकता है—'मेरा अनुमान है कि महाकुंभ क्षेत्र में दुनिया की तीसरी बड़ी आबादी के बराबर लोग यहाँ पर रहेंगे, यानी भारत और चीन के बाद जो सबसे बड़ी आबादी होगी, यहाँ अस्थाई शहर में होगी।'

संगम किनारे चार हजार हेक्टेयर में फैले महाकुंभ क्षेत्र में जिधर देखें, उधर श्रद्धालुओं का रेला ही रेला दिखता है। सिर पर गठरी बाँधे दूर-दूराज के इलाकों, दूसरे प्रदेशों और नेपाल जैसे पड़ोसी देशों से आए श्रद्धालुजन हों या सात समंदर पार दुनिया के अमीर देशों से समृद्धि का बोध कराती बड़ी से बड़ी शख्सियतें, महाकुंभ में आकर सब रच-बस जाते हैं। यहीं के हो जाते हैं। यह परंपरा सदियों से चली आ रही है। प्रयागराज में हर 12 साल पर महाकुंभ और छह साल पर अर्द्धकुंभ लगता है। ग्रहों की स्थिति बदलने से नदियाँ अपने आप अपना कायाकल्प करती हैं और उनका जल अमृत

के समान हो जाता है। यह संयोग 12 साल के बाद बनता है। वृष राशि में बृहस्पति का आगमन हुआ है और मकर राशि में सूर्य तथा चंद्र का एक साथ आगमन हुआ है। इसे अमृत योग कहते हैं और इस योग में स्नान को अमृत स्नान। अमृत योग के साथ ही इस बार महाकुंभ में 144 वर्ष का दुर्लभ संयोग पूरा हो रहा है। महाकुंभ हर 12 साल पर लगता है और 12-12 साल के 12 चरण पूरे होने पर जो कुंभ लगता है, उसे 'पूर्ण महाकुंभ' कहा जाता है। इस बार एक खास बात यह भी हुई कि मुगल काल की याद दिलाने वाले शाही नाम को बदलकर महाकुंभ मेले के दौरान विशेष स्नान पर्वों पर होने वाले संगम स्नान को 'अमृत स्नान' का नाम दिया गया है। दूसरा अमृत स्नान यानी मौनी अमावस्या (29 जनवरी, 2025) महाकुंभ का सबसे बड़ा स्नान पर्व रहा। इस दिन संगम पर अमृत स्नान करने से कई गुना फल की प्राप्ति होती है।

मौनी अमावस्या के दिन स्नान और दान का विशेष महत्त्व है। महाकुंभ के दौरान स्नान की तिथियाँ ज्योतिषीय गणना और ग्रहों की विशेष स्थितियों के आधार पर तय की जाती हैं। मौनी अमावस्या के बाद 3 फरवरी, 2025 को वसंत पंचमी, 12 फरवरी को माघ पूर्णिमा और 26 फरवरी को महाशिवरात्रि पर अमृत स्नान होंगे। इन तारीखों पर देश और विदेश से करोड़ों श्रद्धालु त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाने पहुँचेंगे। योगी आदित्यनाथ सरकार ने 2019 में जबसे अर्द्धकुंभ को कुंभ का नाम देते हुए दुनिया को इसकी नई दिव्यता, भव्यता और आधुनिकता से परिचित कराया है, तब से सनातन में आस्था या रुचि रखने वाले देश-विदेश हर कहीं के लोग जाति-धर्म और भौगोलिक सीमाओं को पार कर यहाँ आने को आतुर हैं। नई पीढ़ी कुंभ की दिव्यता-पवित्रता से परिचित हुई है। 2025 के महाकुंभ ने कल्पनाओं से परे न सिर्फ वैश्विक जनमानस का ध्यान खींचा है, बल्कि इस आयोजन को उत्तर प्रदेश की नई अर्थव्यवस्था का बूस्टर भी बना दिया। कहा जा रहा है कि महाकुंभ की तैयारियों पर 7500 करोड़ खर्च हुए हैं। एक निजी चैनल के इंटरव्यू में इसकी वास्तविकता बताते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जानकारी दी

कि 7500 करोड़ रुपए सिर्फ महाकुंभ में खर्च नहीं हुए हैं, बल्कि प्रयागराज सिटी को जोड़ने वाले जो मार्ग हैं, हाईवे, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट और शहर के व्यवस्थित विकास यानी रोड, ओवरब्रिज, अंडरपास, फ्लाईओवर इन सब पर मिलाकर इतना खर्च हुआ है और दुनिया महाकुंभ के 45 दिनों में जो समागम देखेगी, इससे उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था में कम-से-कम दो लाख करोड़ की ग्रोथ होने वाली है। उत्तर प्रदेश और भारत दुनिया को एक नई इकोनॉमिक्स देने जा रहा है। उन्होंने कहा कि आप जब भी अपनी परंपरा एवं पहचान की ताकत को पहचानेंगे तो ग्रोथ इसी प्रकार से आगे बढ़ेगी। योगीजी ने बताया कि उत्तर प्रदेश की जी.डी.पी. (सकल घरेलू उत्पाद) का 10 फीसदी अकेले प्रयागराज महाकुंभ-2025 देने जा रहा है।

इस महाकुंभ से बड़े-छोटे हर किसी को फायदा होगा। महाकुंभ धार्मिक और आध्यात्मिक के साथ ही आर्थिक दृष्टिकोण से भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। महाकुंभ में देश-विदेश के कई बड़े उद्योगपति आना चाहते हैं, वे चाहते हैं कि उनका विमान सीधे प्रयागराज में उतरे और स्नान कर वे वापस चले जाएँ। जानकर बताते हैं कि ऐसे बड़े लोग प्रयागराज आए तो यहाँ आने पर औसतन 20 लाख रुपए खर्च करेंगे। इसके अलावा ट्रेन, बस और अन्य निजी साधन से महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालु एक से लेकर 10 हजार रुपए तक खर्च करेंगे। यदि प्रति श्रद्धालु पाँच हजार रुपए का औसत खर्च भी मान लिया जाए तो महाकुंभ में आने वाले 40 करोड़ श्रद्धालुओं से दो लाख करोड़ और यदि 45 करोड़ आते हैं तो सवा दो लाख करोड़ की आमदनी होगी। यह रकम बड़े और मझोले व्यवसायियों के साथ ही फूल-माला, प्रसाद और खाने-पीने का सामान बेचने वाले छोटे व्यवसायियों को भी मिलेगी। इससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

महाकुंभ के अमृत स्नान पर्वों पर योगी आदित्यनाथ सरकार पावन त्रिवेणी में डुबकी लगा रहे संतों और श्रद्धालुओं पर विमान से पुष्प वर्षा भी करा रही है। पौष पूर्णिमा पर सबसे पहले यह दृश्य देखने को मिला, जब पूरा संगम क्षेत्र हर-हर गंगे और जय श्रीराम के उद्घोष से गुंजायमान

हो उठा था। पौष पूर्णिमा के साथ ही कायाकल्प के निमित्त संगम की रेती पर एक महीने का कठिन कल्पवास भी शुरू हो गया। करीब 10 लाख की संख्या में कल्पवासी अपने तीर्थ पुरोहितों के साथ शिविरों में पहुँचे। कल्पवास के दौरान तीन समय का स्नान और एक समय का सात्त्विक भोजन उनकी दिनचर्या में शामिल है। शिविरों के बाहर तुलसी का बिरवा और जौ बोकर कल्पवास कर रहे श्रद्धालुओं का पूरा दिन हरि भजन में गुजरता है। माघ के महीने में नक्षत्रों और ग्रहों की विशेष स्थिति में हर छह वर्ष पर कुंभ और 12 वर्ष पर महाकुंभ का आयोजन प्रयागराज में होता है। इसके अलावा कुंभ और महाकुंभ के बीच हर साल माघ के महीने में प्रयागराज में माघ मेला लगता है। ये आयोजन सदियों से भारतीय लोकमानस में रचे बसे हैं। त्रिवेणी संगम पर आकर किसी को भी अद्भुत आध्यात्मिक बोध होना, मन का प्रसन्नता से भर जाना स्वाभाविक है। यह वह स्थल है, जहाँ भूरे और हलके रंग की माँ गंगा एवं यमुना की दो जल धाराएँ अलग-अलग स्थानों से आकर मिलती हैं। खुली आँखों से इसे देखते श्रद्धालुओं के मन का कौतूहल छिपाए नहीं छिपता है।

गंगा और यमुना के इस मिलन को कुछ दूर तक जल में बनने वाली रेखा स्पष्टता प्रदान करती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यहाँ गंगा-यमुना के संगम के साथ ही सरस्वती नदी का मिलन भी होता है। यह बात और है कि माँ सरस्वती नदी की जलधारा यहाँ दृश्यमान नहीं है। फिर भी जन-आस्था ऐसी है कि कोई भी त्रिवेणी की कल्पना गंगा, यमुना, सरस्वती तीनों नदियों को ध्यान में रखकर ही करता है। सरस्वती नदी को अंत:सलिला भी कहा जाता है। दृश्यमान भले न हों, लेकिन कई तरह के शोध अब सरस्वती को भी कभी मूर्तिमान नदी के तौर पर रेखांकित करते हैं। तीन नदियों के इस मिलन स्थल पर स्नान को शास्त्रों में अति पावन कहा गया है। मनुष्य तो मनुष्य लाखों पक्षी भी कुंभ या महाकुंभ की शुरुआत के एक-दो महीने पहले से ही संगम के जल में अठखेलियाँ करते दिखते हैं। विशेषज्ञों का कहना है, ये श्वेत पक्षी साइबेरियाई हैं। इनका बसेरा करीब

चार हजार किलोमीटर दूर है, लेकिन जनवरी–फरवरी में होने वाले माघ मेला से पहले दिसंबर के महीने से ही इनका यहाँ आना शुरू हो जाता है। इन संगम की लहरों के ऊपर इन पक्षियों का स्वच्छंद विचरण आँखों को बेहद सुकून देने वाला होता है।

यह कथा तो सुनी होगी

कुंभ और महाकुंभ मनाए जाने के पीछे की कथा इतनी प्रचलित है कि देश ही नहीं दुनिया में भी शायद ही किसी ने इसे न सुना हो। फिर भी स्मरण के लिए यहाँ यह उल्लेख किया जा रहा है कि यह समुद्र–मंथन से जुड़ी सुंदर कथा है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार समुद्र–मंथन से विष और अमृत दोनों निकले थे। विष को तो लोकमंगल की दृष्टि से देवों के देव महादेव पी गए और उसे कंठ में धारण कर नीलकंठ कहलाए। फिर जब अमृत निकला तो देवताओं और असुरों के बीच संग्राम छिड़ गया। समुद्र–मंथन से निकले अमृत के कलश को असुरों से बचाते हुए इंद्र का पुत्र जयंत भाग रहा था। इसी भागने के दौरान रास्ते में कलश से अमृत की कुछ बूँदें धरती पर चार स्थानों पर छलककर गिरीं। इससे जुड़ी एक अन्य कथा यह भी सुनाई जाती है कि गरुड़ अमृत कुंभ लेकर उड़ चले और इस दौरान भागमभाग में अमृत कुंभ छलका और उसकी बूँदें इन चारों स्थानों हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयागराज में गिरीं। स्कंदपुराण में इसका उल्लेख मिलता है। इन चारों स्थानों पर गिरें अमृत की बूँदों से रससिक्त होने का उद्देश्य लेकर ही माघ के महीने में देश और दुनिया से करोड़ों लोग यहाँ खिंचे चले आते हैं।

हर तीर्थ का अपना अलग महत्त्व है। फिर भी यह कहना गलत नहीं होगा कि इन चारों स्थानों में भी प्रयागराज की स्थिति थोड़ी भिन्न है। इसी नाते से इसे तीर्थराज कहा गया है। वेद और पुराणों में तीर्थराज प्रयाग का माहात्म्य भरा पड़ा है। यह अद्‌भुत स्थान है। हरिद्वार में कुंभ जहाँ गंगा के तट पर आयोजित किया जाता है, वहीं नासिक में गोदावरी के तट पर कुंभ लगता है। उज्जैन में शिप्रा नदी के किनारे श्रद्धालुगण जुटते हैं। कहने का तात्पर्य यह

है कि अन्य तीनों स्थानों पर कुंभ किसी एक नदी के तट पर आयोजित किया जाता है, जबकि प्रयागराज में यह स्पष्ट और दृश्यमान रूप से गंगा-यमुना और आस्था में रची-बसी सरस्वती यानी तीन नदियों की मिलन स्थली पर आयोजित होता है। इन नदियों के संगम को त्रिवेणी इसी कारण से कहा जाता है और त्रिवेणी का स्थान यानी प्रयाग तीर्थराज कहलाता है। प्रयागराज कुंभ और महाकुंभ की एक विशेषता यह भी है कि यह पूरा नदियों के रेत से भरे क्षेत्र में आयोजित होता है।

दिव्यता और भव्यता

संगम नगरी में कुंभ और महाकुंभ पर देश और दुनिया से जुटने वाले करोड़ों श्रद्धालु तथा साधु-संन्यासी तप और त्याग की प्रतिमूर्ति हैं। यहाँ कल्पवासी कठोर नियमों का पालन करके पुण्य की प्राप्ति करते हैं। तथापि दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन होने के चलते कुंभ में देश ही नहीं, विदेशों की भी बेहद रुचि है। दुनिया के कोने-कोने से सामान्य और विशिष्ट लोग कुंभ, महाकुंभ के अचरज भरे नजारों को देखना चाहते हैं। गुलामी के कालखंड में मुगल और अंग्रेजी शासक वर्ग ने कुंभ और महाकुंभ के आयोजनों को लेकर जो दृष्टिकोण अपनाया, उसका विवरण ऐतिहासिक दस्तावेजों में खोजा जा सकता है, लेकिन 1947 में आजादी मिलने के बाद से लेकर अब तक के आयोजनों की जीवंत गवाहियाँ मिलना बहुत मुश्किल नहीं है। 2019 के पहले तक आयोजित होने वाले कुंभ और महाकुंभ के आयोजनों की सच्चाई को 82 वर्षीय श्रद्धालु रामअवध सिंह के दो वाक्यों से समझा जा सकता है। वे कहते हैं कि पहले की सरकारें मेले के इंतजामों की औपचारिकता निभाती थीं और सामान्य सी व्यवस्थाओं से भी श्रद्धालुओं को वंचित रखती थीं। अव्यवस्थाओं का आलम यह रहता था कि कुंभ के मेले में बिछड़ने की कहानियों पर फिल्में बना करती थीं। आज जब प्रदेश में एक संत, यानी गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथजी की सरकार है तो कुंभ बिछड़ने का नहीं, मिलने का मेला बन गया है। 2019 का कुंभ हो या 2025

का महाकुंभ, दोनों ही अवसरों पर न जाने कितने लोगों की वर्षों बाद एक-दूसरे से भेंट हो गई।

उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री घूम-घूमकर निमंत्रण बाँटते नजर आए तो मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बार-बार प्रयागराज में उपस्थित होकर साधु-संन्यासियों, कल्पवासियों और आम श्रद्धालुजनों का स्वागत करते। दिव्य और भव्य महाकुंभ की चर्चा पूरी दुनिया में जैसी हुई वैसी पहले कभी नहीं हुई थी। भव्यता और दिव्यता के साथ यह आयोजन अब डिजिटल भी हो चला। महाकुंभ-2025 की औपचारिक शुरुआत 13 जनवरी से हुई, लेकिन संसार भर से महाकुंभ की वेबसाइट पर हिट्स की झड़ी अक्तूबर-नवंबर से ही लग गई थी। पिछले साल छह अक्तूबर को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाकुंभ का लोगो, वेबसाइट और मोबाइल एप लाञ्च किया था। आयोजन से करीब दो महीने पहले ही ब्राजील, अमरीका, फ्रांस, इंग्लैंड, उरुग्वे और ऑस्ट्रेलिया सहित तमाम देशों से 80 हजार से अधिक लोग वेबसाइट पर महाकुंभ के बारे में जानकारी ले चुके थे। मोबाइल एप को भी लोग जमकर डाउनलोड कर रहे थे। वैश्विक स्तर के महाकुंभ की धमक तब ही से महसूस की जाने लगी। विदेशी संत भी महाकुंभ के प्रचार-प्रसार में पिछले साल से ही जुटे थे। प्रयागराज मेला प्राधिकरण से एन.आर.आई. विभाग को भेजा गया महाकुंभ का लोगो दुनिया के 194 देशों के दूतावासों में पहुँचा। विश्व स्तर पर इसकी ब्रांडिंग की गई। नवंबर-दिसंबर में विभिन्न देशों में भारतीय दूतावासों की ओर से रोड शो, रैली और सभाएँ कराकर भी महाकुंभ का प्रचार-प्रसार किया गया।

बड़े लक्ष्य की बड़ी तैयारी, महाकुंभ नगर ने ऐसे लिया आकार

योगी आदित्यनाथ सरकार ने 13 जनवरी, 2025 से 26 फरवरी, 2025 तक, यानी कुल 45 दिन के महाकुंभ में 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के आने की संभावना को ध्यान में रखते हुए युद्धस्तर पर बड़ी व्यवस्था की थी, लेकिन जब उम्मीद से कहीं अधिक बढ़कर श्रद्धालुओं का आना शुरू हो गया

तो यह संख्या 50 करोड़ के पार जाने की संभावना जताई जाने लगी। अब की स्थिति यह है कि महाकुंभ के साथ ही अयोध्या और वाराणसी भी श्रद्धालुओं से पूरी तरह पैक हैं, क्योंकि देश और दुनिया के कोने-कोने से आने वाले श्रद्धालु महाकुंभ के साथ ही रामलला और बाबा विश्वनाथ के भी दर्शन कर लेना चाहते हैं। उन्होंने उसी रूप में अपनी यात्रा की योजना बनाई है। राज्य सरकार को इसका आभास पहले से था, इसलिए अक्तूबर-नवंबर से ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाकुंभ को केंद्र में रखकर तैयारियों का जो सिलसिला शुरू किया, वह अभी तक लगातार जारी है और 26 फरवरी तक जारी रहने वाला है। लगातार समीक्षा बैठकों के जरिए वह एक-एक तैयारी के बारे में जानकारी लेते हैं और बारीक से बारीक व्यवस्थाओं को सुनिश्चित कराते रहते हैं।

यहाँ यह उल्लेख करना उचित मालूम पड़ता है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सक्रियता को देखते हुए विभिन्न विभागों के अधिकारियों, कर्मचारियों और श्रमिकों ने भी अपनी पूरी ऊर्जा महाकुंभ की तैयारियों में लगा दी। महाकुंभ की तैयारियों ने प्रयागराज की सूरत बदल डाली। महाकुंभ नगर की बात करें तो इस बार इसका दायरा कहीं अधिक बढ़ा दिया गया। यहाँ तक कि यह दुनिया के कई देशों से भी बड़ा है। चार हजार हेक्टेयर में महाकुंभ की बसावट की योजना में 1900 हेक्टेयर जमीन सिर्फ पार्किंग के लिए रखी गई। दायरा बढ़ने से सेक्टर और गंगा पर बनने वाले पांटून पुलों की संख्या भी बढ़ गई। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक बढ़े दायरे के चलते आस्था की महाकुंभ नगरी का क्षेत्रफल दुनिया के कई स्वशासित भूभागों से अधिक है। जैसे ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और न्यू कैलेडोनिया के बीच स्थित नॉरफाल्क आइसलैंड। नॉरफाल्क आइसलैंड ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रमंडल का हिस्सा है, लेकिन इसे उच्च स्तर का स्वशासन अधिकार प्राप्त है। इसका कुल क्षेत्रफल करीब 3600 हेक्टेयर है। ऐसे ही सिंट मार्टेन जो कैरिबियाई क्षेत्र में नीदरलैंड साम्राज्य का एक घटक देश है। इसका कुल क्षेत्रफल करीब 3400 हेक्टेयर है। इस सूची में सेंट बार्थलेमी (फ्रांस) 2200 हेक्टेयर,

टोकेल्यू (न्यूजीलैंड) 1200 हेक्टेयर, सेंट इयूस्टेटिस (नीदरलैंड) 2100 हेक्टेयर, कोकोस (ऑस्ट्रेलिया) 1400 हेक्टेयर, वेटिंकन सिटी 44 हेक्टेयर, नैरू 2100 हेक्टेयर सहित कई नाम लिये जा रहे हैं। 2019 के दिव्य और भव्य कुंभ की भी संसार भर में मुक्त कंठ से प्रशंसा हुई थी। तब कुंभ मेले का क्षेत्रफल 3200 हेक्टेयर था, जबकि 2013 के महाकुंभ (तब इसे कुंभ कहा जाता था) के दौरान कुल 1900 हेक्टेयर में मेला बसाया गया था। 2019 में 3200 हेक्टेयर से 800 हेक्टेयर की वृद्धि करते हुए योगी आदित्यनाथ सरकार ने इस बार चार हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में महाकुंभ मेले का आयोजन किया। अनुमान से कहीं अधिक संख्या में यहाँ कल्पवासी रह रहे और आम श्रद्धालु त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगा रहे हैं।

5 प्रमुख क्षेत्र और 25 सेक्टर

चार हजार हेक्टेयर में बसे महाकुंभ नगर के 5 प्रमुख क्षेत्र हैं। इन्हें 25 सेक्टरों में बाँटा गया है। सेक्टर एक और दो परेड ग्राउंड में है। सेक्टर तीन बड़े हनुमान मंदिर के पास संगम क्षेत्र में है। सेक्टर चार शास्त्री ब्रिज के नीचे दारागंज की ओर तो सेक्टर पाँच गंगा नदी के पार झूँसी इलाके में है। सेक्टर 6 से 10 नागवासुकि मंदिर से लेकर शिवकुटी तक हैं। सेक्टर 11 से लेकर 19 तक झूँसी उत्तरी तो सेक्टर 20 से 22 झूँसी दक्षिणी में है। सेक्टर 23 से 25 अरैल क्षेत्र में है, जहाँ टेंट सिटी बसाई गई है।

इस बार 31 पांटून पुल बनाए गए हैं। ये महाकुंभ नगर की लाइफ लाइन की तरह हैं। सबसे बड़ा पांटून पुल अरैल क्षेत्र में बना है, जिसे बल्लभाचार्य पुल के नाम से जाना जाता है। 925 मीटर लंबे इस पुल में 185 पीपे लगाए गए हैं। अरैल में इसके अलावा चार और पांटून पुल नागेश्वर, टेंट सिटी, सोमेश्वर और चक्र माधव मार्ग पर बनाए गए हैं। सबसे ज्यादा तीन-तीन पांटून पुल त्रिवेणी और काली मार्ग पर बनाए गए हैं। महावीर मार्ग, अक्षयवट मार्ग, भारद्वाज मार्ग, ओल्ड जीटी रोड पर दो-दो, जगदीश रैंप, मोरी मार्ग, गंगोत्तरी शिवाला मार्ग, हरिश्चंद्र मार्ग, नागवासुकि

मार्ग, अनंत माधव मार्ग, पद्म माधव मार्ग, बेणी माधव मार्ग, गंगेश्वर मार्ग, फाफामऊ जंक्शन, कैलाशपुरी मार्ग और बजरंग दास मार्ग पर एक-एक पांटून पुल बनाया गया है। पद्म माधव पुल सबसे छोटा सौ मीटर का है। इसमें 20 पीपे लगाए गए हैं।

प्रयागराज सनातन संस्कृति के उद्भव और विकास का गवाह रहा है। मान्यता है कि सृष्टि रचना की कामना के साथ पहला यज्ञ यहीं हुआ था। यहाँ शक्ति पीठ तो है ही अनादिकाल से अक्षयवट भी है। यह अकेला नगर है, जहाँ 11 धार्मिक कॉरिडोर हैं। ऐसी पवित्र स्थली पर बसे उत्तर प्रदेश के 76वें जिले (अस्थाई) महाकुंभ नगर में आस्था और आधुनिकता का अद्भुत संगम दिखता है। यहाँ करोड़ों की संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए रहने, खाने-पीने और अपनी आध्यात्मिक गतिविधियों को सुविधाजनक ढंग से संपन्न करने के लिए बड़े पैमाने पर इंतजाम किए गए हैं। महाकुंभनगर में चारों तरफ तंबुओं के बीच जहाँ लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने वाले नि:शुल्क जन आश्रय केंद्र उपलब्ध हैं तो एक से बढ़कर एक लग्जरी स्विस कॉटेज, महाराजा कॉटेज और डोम सिटी भी है। महाकुंभ नगर के 25 में से हर सेक्टर में कुछ-न-कुछ ऐसा खास है, जो लोगों का ध्यान खींच रहा है। जैसे सेक्टर एक में बड़े-बड़े झूले हैं तो सेक्टर दो में चूड़ी-बिंदी से लेकर चिमटा तक की दुकानें। सेक्टर तीन में संगम और चार कॉरिडोर (हनुमान मंदिर कॉरिडोर, अक्षयवट कॉरिडोर, पातालपुरी कॉरिडोर, सरस्वती कूप कॉरिडोर) हैं। सेक्टर चार में दशाश्वमेध मंदिर और घाट पर सेल्फी लेने वालों का ताँता दिखता है तो सेक्टर पाँच में नेत्र कुंभ के शिविर के अलावा और भी बहुत कुछ है। सेक्टर छह में रुद्राक्ष से बने 12 शिवलिंग हैं तो सेक्टर सात में माँ कामाख्या का विशाल रथ। सेक्टर आठ में तिरुपति बालाजी के दर्शन हो जाते हैं तो सेक्टर नौ में निरंजनी अखाड़े का शिविर है। सेक्टर 10 में कल्पवासियों का डेरा है तो सेक्टर 11 में गंगा नदी के तट पर सिद्धदाता आश्रम घाट के पास स्नान की सुविधा। तुलसी मार्ग पर बढ़ने के बाद सेक्टर 12 में जो चौराहा मिलेगा, वहीं पर रामजानकी थाना बना है। जबकि सेक्टर

13 में बड़े प्रवेश द्वार ध्यान खींचते हैं। सेक्टर 14 में सोमेश्वरानंद धाम है तो सेक्टर 15 में महिला संत अंजलि जोशी का प्रवचन सुना जा सकता है। सेक्टर 16 में किन्नर अखाड़े का शिविर है तो सेक्टर 17 में आचार्यबाड़ा, सेक्टर 18 में तिरंगा दिखाई देगा तो सेक्टर 19 में शंकराचार्य और प्रखर जी का शिविर है। सेक्टर 20 में नागा साधु-संतों का डेरा है तो सेक्टर 21 में सतुआ बाबा का शिविर, सेक्टर 22 में खालसों का समाज बसा है तो सेक्टर 23 में शिवालिक पार्क है। सेक्टर 24 में महर्षि महेश योगी का स्मारक है तो सेक्टर 25 में टेंट सिटी।

दिव्य-भव्य डिजिटल महाकुंभ

महाकुंभ 2025 को अपनी दिव्यता और भव्यता के साथ डिजिटल होने के लिए भी जाना जा रहा है। इसमें पहली बार एआई जेनरेटिव चैटबॉट 'कुंभ सहायक' विकसित किया गया है। यह भाषिणी ऐप की मदद से महाकुंभ में आने वाले देश-विदेश के श्रद्धालुओं को 11 भाषाओं में उनके महत्त्व की जानकारियाँ उपलब्ध करा रहा है। यह चैटबॉट गूगल नैविगेशन, इंटरैक्टिव कन्वर्सेशन और व्यक्तिगत जी.आई.एफ. की सुविधा से लैस है। इसके जरिए विभिन्न सेक्टरों, अखाड़ों, कल्पवास के टेंट, खान-पान के रास्तों का नेविगेशन भी मिल रहा है। यही नहीं एक किलोमीटर दायरे की पार्किंग, फूड कोर्ट और अस्पताल की जानकारी तीन नए फीचर के साथ महाकुंभ की सटीक मैपिंग, रियल टाइम पी.डी.एफ. से तैयार कर सुविधा का संक्षिप्त विवरण, क्यू.आर. कोड स्कैन करते ही शौचालय, प्रदर्शनियाँ और खोया पाया केंद्र की जानकारी, बैंकिंग समेत पब्लिक वाटर ए.टी.एम., इवेंट, अट्रैक्शन और ट्रांसपोर्ट सहित महाकुंभ से जुड़ी हर तरह की जानकारी उपलब्ध है। ए.आई. जेनरेटिव चैटबॉट 'कुंभ सहायक' हिंदी, अंग्रेजी और नौ अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। वाट्सएप और महाकुंभ वेबसाइट/ऐप पर उपलब्ध है। बोलकर और लिखकर सवाल पूछे जा सकते हैं। इस पर श्रद्धालुओं के लिए फोटो स्मृति-चिह्न भी उपलब्ध

हैं। यही नहीं, आसपास की सुविधाओं के लिए गूगल मैप एकीकरण और पी.डी.ए. और चित्रों से सुसज्जित मीडिया गैलरी भी है। यहाँ एक क्लिक पर पूरी जानकारी मिल जाती है।

पहली बार गूगल नेविगेशन की सुविधा

महाकुंभ 2025 में पहली बार गूगल नेविगेशन की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है। इसके जरिए महाकुंभ मेले के प्रमुख स्थलों, जैसे मंदिरों, स्नान घाटों, पांटून पुलों आदि को गूगल मैप पर ट्रैक किया जा सकता है। गूगल मैप से 'स्ट्रीट व्यू फीचर' को भी जोड़ा गया है। इस फीचर के जरिए कोई भी व्यक्ति मोबाइल पर ही किसी स्थान विशेष का नजारा 360 डिग्री व्यू में देख सकता है। महाकुंभ मेले से जुड़ी हर महत्त्वपूर्ण जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध है। घाट, अखाड़ों के साथ ही पूजा-पाठ, प्रवचन का विवरण भी ऑनलाइन मिल जा रहा है। यही नहीं महाकुंभ में बड़े संतों के प्रवचन, शिविरों की लोकेशन, मेले के अलग-अलग क्षेत्रों की लोकेशन आदि की जानकारी भी ऑनलाइन मिल जा रही है। इसके साथ ही मेले में शुरू की गई सुविधाओं, जैसे लेजर शो, वॉटर स्पोर्ट्स आदि का पूरा विवरण भी ऑनलाइन उपलब्ध कराया गया है।

ताकि तत्काल मिले इलाज

महाकुंभ 2025 के शुभारंभ से पहले ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्पष्ट कर दिया था कि यहाँ आने वाले सभी श्रद्धालुओं को सुविधा और सुरक्षा देना सरकार की जिम्मेदारी है। इसे ध्यान में रखते हुए महाकुंभ नगर में चिकित्सा सुविधाओं का भी विशाल नेटवर्क तैयार किया गया है। यहाँ 43 अस्थाई अस्पतालों का निर्माण किया गया है। महाकुंभ के अस्थाई अस्पताल में महाकुंभ की शुरुआत से पहले ही किलकारियाँ भी गूजने लगी थीं। यहाँ कई गर्भवती महिलाओं ने अच्छी चिकित्सकीय सुविधाओं के बीच अपने बच्चों को सुरक्षित रूप से जन्म दिया। महाकुंभ में आने वाले तमाम लोगों

को आवश्यकता पड़ने पर यहाँ चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। 43 अस्थाई अस्पतालों के साथ ही यहाँ 100 बेड का अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस केंद्रीय अस्पताल भी है। इसके अलावा झूँसी और अरैल में 25–25 बेड के दो उप केंद्रीय अस्पताल बनाए गए हैं। 20 बेड के आठ अस्पताल अलग–अलग सेक्टरों में बनाए गए हैं। महाकुंभ नगर में 381 डॉक्टरों, 380 फार्मासिस्टों, 182 स्टाफ नर्सों की तैनाती की गई है। इसके अलावा 115 बेसिक लाइफ स्पोर्ट एंबुलेंस और 125 एंबुलेंस उपलब्ध कराई गई हैं। यही नहीं, एस.आर.एन. अस्पताल में 200 बेड, काल्विन, बेली और डफरिन अस्पताल में 50–50 बेड आरक्षित रखे गए हैं। निजी अस्पतालों में 20 प्रतिशत बेड आरक्षित रखे गए हैं।

एयर एंबुलेंस, वह भी बिल्कुल मुफ्त

महाकुंभ नगर में प्रवास के दौरान यदि किसी मरीज की हालत अत्यंत गंभीर हो गई और उसे दिल्ली या लखनऊ शिफ्ट करने की जरूरत पड़ी तो उसके लिए एयर एंबुलेंस की व्यवस्था भी की गई है। यहाँ खास तौर पर यह जानने वाली बात है कि एयर एंबुलेंस की यह सुविधा बिल्कुल मुफ्त में उपलब्ध कराई जाएगी। यदि किसी श्रद्धालु को गंगा में डुबकी लगाते वक्त आकस्मिक इलाज की आवश्यकता पड़ी तो उसके लिए डॉक्टरों और जरूरी दवाओं से लैस सात एंबुलेंस तैनात की गई हैं।

ताकि श्रद्धालुओं को मिले पीने का साफ पानी

महाकुंभ 2025 में आने वाले श्रद्धालुओं को पीने का साफ पानी मिले, इसके लिए 1249 किलोमीटर पाइप लाइन बिछाई गई है। महाकुंभ नगर में 200 वाटर एटीएम, सात हजार पेयजल स्टैंडपोस्ट और 56 हजार कनेक्शन दिए गए हैं।

जगह-जगह बने हैं पूछताछ केंद्र

महाकुंभ नगर में जगह-जगह पूछताछ केंद्र बनाए गए हैं। इन केंद्रों पर महाकुंभ, प्रयागराज शहर और मेला क्षेत्र से जुड़ी सभी महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दी जा रही हैं। पुलिस थानों, चौकियों, फायर स्टेशनों, अस्पतालों, पोस्ट ऑफिस और प्रमुख अधिकारियों के कार्यालयों के बारे में भी जानकारी मिल रही है। इसके अलावा तीर्थस्थान, मंदिर, ऐतिहासिक स्थलों तक पहुँचने के साधन और मार्ग, अखाड़ों, महामंडलेश्वरों के शिविर, कल्पवासियों के शिविरों और स्नान-घाटों की भी जानकारी मिल रही है। बस और रेलवे स्टेशनों की स्थिति तथा ट्रेनों के समय के बारे में भी बताया जा रहा है। ट्रैफिक स्कीम और मेले में लागू ट्रैफिक प्रतिबंधों के बारे में भी जानकारी दी जा रही है। यही नहीं होटल और धर्मशालाओं की लिस्ट और दरें तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के बारे में भी जानकारी यहाँ मिल रही है।

महाकुंभ की हेल्पलाइन

महाकुंभ नगर में आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिहाज से कई हेल्पलाइन नंबर भी जारी किए गए हैं। जैसे 120 महाकुंभ मेला हेल्पलाइन, 1944 मेला पुलिस हेल्पलाइन, 1945 फायर सर्विस हेल्पलाइन, 1010 खाद्य एवं रसद हेल्पलाइन, 102, 108 एंबुलेंस सेवा हेल्पलाइन, 18004199130 रेलवे हेल्पलाइन।

महाकुंभ नगर पहुँचना यों हुआ आसान

श्रद्धालुओं की भारी संख्या के बावजूद महाकुंभ नगर पहुँचने में किसी को परेशानी न हो, इसके लिए जन-यातायात की बड़ी व्यवस्था की गई। महाकुंभ के लिए रेलवे ने 13 हजार से अधिक ट्रेनों का संचालन किया। 10 हजार से अधिक नियमित और 3300 विशेष ट्रेनें चलाई गईं। कम दूरी की 1869 ट्रेनें, लंबी दूरी की 70 ट्रेनें और 559 रिंग रेल चलाई गईं। मालगाड़ियों को डी.एफ.सी. पर शिफ्ट कर दिया गया। यात्रियों की सुविधा को देखते हुए

48 प्लेटफॉर्म, 21 फुट ओवर ब्रिज और एक लाख क्षमता के 23 यात्री शेड बनाए गए। यात्रियों को टिकट लेने में कोई दिक्कत न हो, इसके लिए 554 टिकटिंग काउंटर बनाए गए, जिसमें 151 मोबाइल यू.टी.एस. शामिल हैं। यात्रियों की सुगम आवाजाही के लिए 21 आर.ओ.वी. और आर.यू.बी. बनाए गए। बनारस-प्रयागराज और फाफामऊ-जुघई दोहरीकरण भी किया गया।

सामान्य और विशेष यातायात व्यवस्था

महाकुंभ के सामान्य दिनों और मुख्य पर्वों के लिए अलग-अलग यातायात व्यवस्था की गई। परेड, झूँसी और अरैल जोन के लिए अलग-अलग यातायात व्यवस्था की गई। रेल, बस और निजी वाहनों से आने-जाने वाले यात्रियों के लिए अलग-अलग मार्ग बनाया गया। सामान्य दिनों में शटल बस, सी.एन.जी. ऑटो और इ-रिक्शा की सुविधा उपलब्ध कराई गई। स्नान-घाटों से दो किलोमीटर तक की दूरी पर 24 पार्किंग स्थल बनाए गए। ये सभी 24 मूलभूत सुविधायुक्त सैटेलाइट टाउन पार्किंग स्थल बने। प्रयागराज के 10 सीमावर्ती जिलों से आने वाले मार्गों पर 102 पार्किंग स्थल बनाए गए। महिलाओं के लिए पिंक व्हीकल चलाए गए। 200 से अधिक इलेक्ट्रिक बसें संचालित की गईं। 1850 हेक्टेयर में पार्किंग बनाई गई। 550 शटल बसें चलाई गईं। 25 से अधिक शहरों से विमान सेवा उपलब्ध कराई गई। इसके अलावा मौनी अमावस्या पर्व के लिए आठ हजार बसों और 150 से अधिक स्पेशल ट्रेनों का संचालन किया गया।

साफ-सफाई पर विशेष ध्यान

महाकुंभ नगर में साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखा जा रहा है। इस पूरे परिसर को पॉलीथिन मुक्त बनाए रखने के लिए काफी पहले से अभियान चल रहा है। जागरूकता का आलम यह है कि करोड़ों की संख्या के बावजूद श्रद्धालुओं को कोई भीड़ कहने का साहस नहीं जुटा पा रहा है। सब महसूस कर रहे हैं कि एक-एक व्यक्ति सफाई को लेकर सतर्क और अनुशासित

है। सफाईकर्मियों की बड़ी फौज के बावजूद यदि आम श्रद्धालु इसमें रुचि नहीं लेते तो ऐसी साफ–सफाई मेंटेन कर पाना संभव नहीं हो पाता। स्वच्छता एक प्रतिमान बना है, सार्वजनिक स्थानों, संस्थानों और यहाँ तक कि निजी आवासों के लिए भी।

शौचालय–यूरीनल और ड्रेनेज सिस्टम

महाकुंभ नगर में डेढ़ लाख शौचालय–यूरीनल बनाए गए हैं। इनमें जेट स्प्रे से स्वच्छता बनाए रखने की व्यवस्था की गई है। करोड़ों श्रद्धालुओं को ध्यान में रखते हुए दो सौ प्लस ड्रेनेज लाइन बिछाई गई हैं और जल निकासी का पर्याप्त इंतजाम किया गया है। शौचालयों की स्वच्छता और कचरा प्रबंधन की आई.सी.टी. आधारित रीयल–टाइम मॉनिटरिंग की जा रही है। इसके अलावा 25 हजार डस्टबिन लगाए गए हैं। हर सौ मीटर पर एक डस्टबिन की सुविधा दी गई है। त्वरित और प्रभावी कचरा प्रबंधन की व्यवस्था के लिए 160 हॉपर टिपर/कॉम्पैक्टर, वैज्ञानिक विधि से अपशिष्ट निस्तारण के लिए तीन एफ.एस.टी.पी. और 11 स्थाई सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट, 81 नालों का इंटरसेप्शन, डायवर्जन और शोधन किया गया है। मेला परिसर में 15 हजार सफाईकर्मियों की फौज और 2500 गंगा सेवा दूत तैनात किए गए हैं। उच्च स्वच्छता मानकों को सुनिश्चित करने के लिए कुशल जनशक्ति का प्रबंधन किया जा रहा है।

श्रमिकों के बच्चों की स्मार्ट पढ़ाई का इंतजाम

महाकुंभ नगर में करीब छह लाख श्रमिकों को काम करने का मौका मिला है। 15 हजार सफाईकर्मियों की तैनाती की गई है। इस दौरान इनके बच्चों की पढ़ाई का नुकसान न हो, इसका भी इंतजाम सरकार ने किया है। श्रमिकों के बच्चों की स्मार्ट पढ़ाई के लिए मेला क्षेत्र में जगह–जगह 'विद्या कुंभ प्राथमिक विद्यालय' बनाए गए हैं। इन विद्यालयों में दो महीने तक बच्चों को शिक्षा दी जाएगी। इन विद्यालयों में सरकारी शिक्षकों और प्रिंसिपल की

तैनाती की गई है। बच्चों को सरकार की ओर से नि:शुल्क ड्रेस, जूते और किताबें भी दी गई हैं। बच्चों को फ्री एडमिशन दिया गया है।

गंगा की तीन धारा को एक प्रवाह में बदला गया

अपने पूर्वजों का उद्धार करने के लिए भारीरथ गंगा को धरती पर लाए थे। उन्हीं से प्रेरणा लेते हुए महाकुंभ 2025 से पहले संगम क्षेत्र में गंगा की तीन धाराओं को एक करने का भागीरथी प्रयास करके इसमें सफलता प्राप्त की गई। सिंचाई विभाग के बाढ़ खंड के इस काम से श्रद्धालुओं को स्नान के लिए तो पर्याप्त जल मिला ही, मेला बसाने के लिए 22 हेक्टेयर अतिरिक्त जमीन भी मिल गई। जानकार बताते हैं कि छह महीने पहले शास्त्री ब्रिज से संगम तक करीब दो किलोमीटर दायरे में गंगा की तीन धाराएँ मुश्किलें खड़ी कर रही थीं। तीन धाराएँ होतीं तो महाकुंभ के दौरान श्रद्धालुओं को स्नान के लिए जल कम मिलता और मेला बसाने के लिए 22 हेक्टेयर अतिरिक्त जमीन भी नहीं मिलती। इसी को ध्यान में रखते हुए तीनों धाराओं को मिलाकर एक करने का निर्णय लिया गया। इसके लिए आई.आई.टी. गुवाहाटी के विशेषज्ञों से मदद ली गई। गंगा की धाराओं का अध्ययन करने के बाद विशेषज्ञों ने योजना बनाई, जिसके आधार पर शास्त्री ब्रिज से संगम नोज तक गंगा की धारा की ड्रेजिंग कर गहराई बढ़ाई गई। दाहिनी और बाईं तरफ निकली धारा को गंगा से निकले बालू से पाट दिया गया। करीब एक महीने तक अथक कोशिशों के बाद सफलता मिली और गंगा की तीन धाराएँ मिलकर एक हो गईं। यह काम आसान नहीं था। बीच की धारा की गहराई बढ़ाने और पास की दोनों धाराओं को पाटने के दौरान गंगा का जलस्तर बढ़ गया। एक महीने बाद श्रमिक काम पर लौटे तो गंगा की जो धारा गहरी की गई थी, उसमें फिर बालू भर गया। ड्रेजिंग दोबारा करनी पड़ी! कठिन प्रयासों से ही सही पर सफलतापूर्वक किए गए इस काम की वजह से महाकुंभ में जाने वाले श्रद्धालुओं को स्नान के लिए

संगम में पर्याप्त पानी तो मिलता ही है, संगम की जलधारा देखकर चेहरे भी खिल जाते हैं। महाकुंभ नगर की एक खासियत यह भी है कि यहाँ कोई चेहरा मुरझाया हुआ नहीं दिखता है।

सुरक्षा का अभूतपूर्व इंतजाम

महाकुंभ-2025 के आयोजन की तैयारियाँ चल ही रही थीं कि खालिस्तानी आतंकी पन्नू और कुछ अन्य राष्ट्रविरोधी शक्तियों ने धमकियाँ देनी शुरू कर दीं। करोड़ों श्रद्धालुओं की जुटान और धर्म, राजनीति, उद्योग, मनोरंजन, साहित्य, ज्ञान-विज्ञान सहित हर क्षेत्र के सितारों की आवाजाही के बीच सुरक्षा एक बड़ा पहलू थी, लेकिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अगुवाई में निडर उत्तर प्रदेश पुलिस ने इसे चुनौती नहीं अवसर मानते हुए ऐसी तैयारी की कि नापाक मंसूबे धरे के धरे रह गए। महाकुंभ को लेकर पुलिस और सुरक्षा बलों के साथ खुफिया एजेंसियाँ हमेशा अलर्ट पर रहीं। मेला क्षेत्र के चप्पे-चप्पे पर निगरानी रखी गई। ए.टी.एस., बम निरोधक दस्ता और अन्य सुरक्षा एजेंसियों को सतर्क किया गया। जल, थल और वायु मार्ग से विशेष चौकसी बरती जा रही है। मेला क्षेत्र में प्रवेश करने वाले हर एक व्यक्ति की गहनता से जाँच की जाती रही। इसके अलावा ए.आई. कैमरों, ड्रोन और अन्य उपकरणों का भी भरपूर इस्तेमाल कर सुनिश्चित किया गया कि कोई भी संदिग्ध गतिविधि नजरअंदाज न होने पाए। करीब 3000 ए.आई. सी.सी.टी.वी. कैमरे पूरे महाकुंभ नगर और आस-पास के क्षेत्र में लगाए गए हैं। इससे संदिग्ध गतिविधियों की निरंतर निगरानी हो रही है। संतों और श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए 37 हजार पुलिसकर्मी और 14 हजार होमगार्ड के जवान तैनात किए गए हैं। पुलिस और पी.ए.सी. के अलावा एन.एस.जी. के कमांडो, ए.टी.एस., एस.टी.एफ., पी.ए.सी., आई.बी. और जल पुलिस की टीमों ने भी मोर्चा सँभाल रखा है। सेना के जवान भी सतर्क हैं। एन.एस.जी. के कमांडो भी तैनात हैं। हर टीम में 50-50 कमांडो हैं। वे अत्याधुनिक हथियारों से लैस हैं। उनके पास हेलीकॉप्टर

भी हैं। साथ ही खुफिया एजेंसियाँ भी निगरानी कर रही हैं। महाकुंभ मेला क्षेत्र में 123 वॉच टावर बनाए गए हैं। इन टावरों पर स्नाइपर, एन.एस.जी., ए.टी.एस. और सिविल पुलिस के जवान तैनात किए गए हैं। वॉच टावरों से दूरबीन की मदद से पूरे क्षेत्र की निगरानी की जा रही है। इसके अलावा जल पुलिस की भी संगम की निगरानी के साथ ही जल मार्ग से प्रयागराज में प्रवेश करने वालों पर पैनी नजर है। प्रयागराज जिले की सीमाओं पर लगातार कड़ी चौकसी बरती जा रही है। प्रमुख जगहों पर बैरिकेडिंग कर एक-एक वाहन की जाँच की जाती है। जाँच के बाद ही आगे बढ़ने दिया जाता है। प्रयागराज की सीमाओं से सटे लालगोपालगंज, बरौत, बुढ़िया का इनारा फूलपुर, मऊआइमा, नारीबारी, मांडा और पूरामुफ्ती में बैरीकेडिंग कर वाहनों को रोककर जाँच की जाती है। यात्रियों की पहचान भी सत्यापित की जाती है। इसके साथ ही होटलों, लाज और धर्मशालाओं में भी लगातार जाँच अभियान चलाया जा रहा है। रेलवे, बस स्टेशन समेत एयरपोर्ट की भी कड़ी चौकसी की जा रही है। महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं और अन्य यात्रियों की भीड़ पर नजर रखने के लिए रेलवे बोर्ड ने भी खास इंतजाम किए हैं। रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव ने रेलवे बोर्ड (नई दिल्ली) में कुंभ वार रूम का उद्घाटन किया था, जहाँ से दिल्ली में बैठे अफसर प्रयागराज जंक्शन समेत सभी नौ रेलवे स्टेशन पर श्रद्धालुओं की गतिविधियाँ लाइव देखते हैं।

महाकुंभ में मंत्रिपरिषद् की बैठक

कुंभ 2019 की तरह महाकुंभ-2025 में भी योगी आदित्यनाथ सरकार की मंत्रिपरिषद् की बैठक हुई। 22 जनवरी, 2025 को हुई इस बैठक में योगी सरकार ने पूर्वांचल को एक नई सौगात देते हुए 320 किमी. के विंध्य एक्सप्रेस वे का ऐलान किया। 22400 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाले इस एक्सप्रेस वे के चलते गंगा एक्सप्रेस वे काशी से भी जुड़ जाएगा। यह एक्सप्रेस वे प्रयागराज से शुरू होकर, मीरजापुर, वाराणसी, चंदौली और सोनभद्र तक जाएगा। वहाँ से छत्तीसगढ़ और झारखंड से भी जुड़ सकता है।

मंत्रिपरिषद् ने चंदौली से गाजीपुर तक 100 किलोमीटर लंबे विंध्य–पूर्वांचल लिंक एक्सप्रेस वे पर भी मुहर लगाई। इस तरह यू.पी. को 29400 करोड़ रुपए की लागत से 420 किलोमीटर के दो नए एक्सप्रेस वे मिल गए। इसके साथ ही निर्णय हुआ कि राज्य राजधानी क्षेत्र (एस.सी.आर.) की तर्ज पर प्रयागराज–चित्रकूट और वाराणसी–विंध्य को मिलाकर दो नए विकास क्षेत्र बनाए जाएँगे। मंत्रिपरिषद् ने राज्य में बेहतर कनेक्टिविटी के लिए कई बड़े फैसले लिये। बैठक के बाद हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा संचालित और निर्माणाधीन एक्सप्रेस वे के माध्यम से कनेक्टिविटी नेटवर्क विकास और क्षेत्र में औद्योगिक परियोजनाओं का विकास हो रहा है।

वर्तमान में उत्तर प्रदेश के पश्चिमांचल, मध्यांचल, पूर्वांचल और बुंदेलखंड क्षेत्र एक्सप्रेस वे से जुड़े हैं। अब दूरवर्ती दक्षिणी–पूर्वी विंध्य क्षेत्र में सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए एक्सप्रेस वे का निर्माण किया जाना जरूरी है। इस दृष्टि से प्रयागराज मीरजापुर, वाराणसी, चंदौली और सोनभद्र को जोड़ते हुए 320 किलोमीटर लंबाई वाले नए एक्सप्रेस वे का निर्माण किया जाना चाहिए। नए एक्सप्रेस वे का प्रारंभ बिंदु प्रयागराज में गंगा एक्सप्रेस वे होगा, जबकि सोनभद्र में एन.एच.–39 पर इसका समापन होगा। इस तरह गंगा एक्सप्रेस वे और विंध्य एक्सप्रेस वे की सीधी कनेक्टिविटी होगी। सात हजार करोड़ रुपए से नया लिंक एक्सप्रेस वे विंध्य एक्सप्रेस वे पर चंदौली से नया लिंक एक्सप्रेस वे प्रारंभ होकर पूर्वांचल एक्सप्रेस वे के अंतिम बिंदु गाजीपुर तक जुड़ेगा। इसे विंध्य पूर्वांचल लिंक एक्सप्रेस वे का निर्माण नाम दिया गया है। इसकी लंबाई लगभग 100 किलोमीटर होगी। इस पर सात हजार करोड़ रुपए की लागत आएगी। यह एक्सप्रेस वे छह लेन का होगा। इससे विंध्य, बुंदेलखंड का पूर्वांचल से सीधा संपर्क हो जाएगा। मंत्रिपरिषद् की बैठक के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ मंत्रिपरिषद् के सभी सदस्यों ने भी संगम की पवित्र डुबकी लगाई।

संतों-संस्थाओं और कल्पवासियों को सस्ते में राशन

महाकुंभ-2025 में अखाड़े के संतों, संस्थाओं और कल्पवासियों के लिए सस्ते राशन की भी व्यवस्था की गई है। पाँच रुपए में एक किलोग्राम आटा और छह रुपए में एक किलोग्राम चावल उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके लिए मेला क्षेत्र में 138 उचित मूल्य की दुकानें स्थापित की गई हैं। यही नहीं, मेला क्षेत्र में कल्पवासियों के लिए 1.20 लाख सफेद राशन कार्ड बनाए गए हैं। कल्पवासियों, अखाड़ों और संस्थाओं को 18 रुपए प्रति किलोग्राम की दर से चीनी भी उपलब्ध कराई जा रही है। महाकुंभ में रसोई गैस सिलेंडर की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सभी 25 सेक्टरों में एजेंसियाँ निर्धारित की गई हैं। एजेंसियों ने कल्पवासियों, अखाड़ों और संस्थाओं को नया गैस कनेक्शन दिया है। इसके साथ ही उन्हें रीफिल करने का भी पूरा इंतजाम किया गया है। जिन कल्पवासियों के पास अपना खुद का खाली गैस सिलेंडर है, उन्हें भी यहाँ पर रीफिल करा सकते हैं। 5 किलोग्राम, 14.2 किलोग्राम और 19 किलोग्राम, यानी तीन विशेष प्रकार के सिलेंडरों को भरने की व्यवस्था महाकुंभ में की गई है। अन्न भंडारण के लिए महाकुंभ मेला परिसर में 5 गोदाम स्थापित किए गए हैं। अखाड़ों-कल्पवासियों और संस्थाओं को भोजन के लिए किसी प्रकार की समस्या न आने पाए, इसके लिए 138 दुकानों पर विशेष इंतजाम किया गया है। अन्न के गोदामों पर छह हजार मीट्रिक टन आटा और चार हजार मीट्रिक टन चावल तथा दो हजार मीट्रिक टन चीनी उपलब्ध कराई गई थी। मेला क्षेत्र में रहने वाले हर कल्पवासी को तीन किलोग्राम आटा, दो किलोग्राम चावल और एक किलोग्राम चीनी उपलब्ध कराए जाने की व्यवस्था की गई है। यह सुविधा जनवरी से फरवरी के अंत तक उपलब्ध कराई जानी है।

मौनी अमावस्या के लिए लागू हुआ जोनल प्लान

महाकुंभ के सबसे महत्त्वपूर्ण मौनी अमावस्या स्नान पर्व के लिए जोनल प्लान लागू किया गया है। यह प्लान मौनी अमावस्या पर श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या के मद्देनजर बनाया गया था, लेकिन अनुमान के कहीं अधिक बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुँचने के चलते प्रयागराज मेला प्राधिकरण ने मजबूरन दो दिन पहले ही इस प्लान को लागू कर दिया। इसके मुताबिक पूरे मेला क्षेत्र को 'नो व्हीकल जोन' घोषित करते हुए मेला क्षेत्र में गाड़ियों के प्रवेश को पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया गया है। ट्रेन, बस, निजी साधन या फिर हवाई मार्ग से आने वाले श्रद्धालुओं के स्नान का प्रबंध उसी दिशा की ओर के घाटों पर किया गया है, जिस ओर से वे आएँगे।

महाकुंभ के रंग हजार, संदेश एक

महाकुंभ–2025 में हजारों रंग देखने को मिल रहे हैं। यहाँ त्याग–तपस्या की एक से बढ़कर एक मिसालें पेश करते संन्यासी और अध्यात्म के साथ शौर्य के प्रतीक नागा साधु हैं तो राजनीति, उद्योग, व्यापार, मीडिया और मनोरंजन से लगायत साहित्य–ज्ञान–विज्ञान सहित विभिन्न क्षेत्रों के चमकते सितारे भी हैं। इन सबके बीच करोड़ों की संख्या में हैं आम श्रद्धालु। वे श्रद्धालु जो बिना किसी आमंत्रण और बिना किसी सुविधा को सुनिश्चित किए बेफिक्र होकर यहाँ आते हैं, इस विश्वास के साथ कि सनातन की गोद में संगम की रेती पर उनके लिए कभी किसी चीज की कमी नहीं हो सकती। इन आम श्रद्धालुओं में न जाति का भेद दिखता है, न गरीबी और अमीरी का। ये सिर्फ श्रद्धालु हैं। पूरी तरह अनुशासित और सनातन को समर्पित। इनके बीच से इस महाकुंभ में बार–बार सिर्फ एक ही संदेश निकल रहा है। वह संदेश है एकता का। महाकुंभ की एक ही आवाज है एकता की आवाज⋯कि हम सब सनातनी एक हैं और हमें कोई भी जाति–पाँति, ऊँच–नीच और संप्रदायों में नहीं बाँट सकता। एकता के इसी संदेश के साथ 45 दिनों का यह महाकुंभ पूरा होगा और हम सबको राष्ट्र निर्माण के लिए एक नई ऊर्जा से भर जाएगा।

महाकुंभ 2025 : हादसा न तोड़ पाया हौसला, षड्यंत्रों पर भारी पड़ी आस्था

महाकुंभ–2025 में 40 से 45 करोड़ श्रद्धालुओं के पहुँचने की संभावना थी, उत्तर प्रदेश के मुखिया के तौर पर गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ ने इस अनुरूप तैयारियाँ कराई थीं। भव्य, दिव्य और विहंगम महाकुंभ की चहुँओर प्रशंसा हो रही है। दुनिया उत्तर प्रदेश और भारत की इस आध्यात्मिक चमक से चकित थी। वहीं कुछ ऐसी आँखें भी थीं और हैं, जिनसे ये चमक देखी नहीं जाती। उनका वश चले तो सनातन और सनातनी भारत को विश्व पटल पर कहीं खड़ा ही न होने दें। प्रतिदिन सनातनियों को कोसने से उनके दिन की शुरुआत होती है। धर्म और राष्ट्र को नीचा दिखाने की कोशिशों में वे सुबह–शाम लगे रहे हैं। मौनी अमावस्या के प्रथम अमृत स्नान से पहले ऐसी ही बुरी नजरें महाकुंभ को लग गईं। एन.डी.आर.एफ., एस.डी.आर.एफ., पुलिस, अर्द्धसैनिक बल सभी मुस्तैद थे। जितनी और जो भी व्यवस्थाएँ हो सकती थीं, वे सब की गई थीं, लेकिन जो होनी थी, वे हो गई। नागा साधु, सभी 13 अखाड़े और करोड़ों की संख्या में पहुँचे श्रद्धालु ब्रह्म मुहूर्त में त्रिवेणी संगम की पवित्र डुबकी लगाने की तैयारी कर रहे थे, लेकिन वे ऐसा कर पाते, इसके दो से तीन घंटे पहले रात के एक से दो बजे के बीच संगम नोज पर एक हादसा हो गया। न्यायिक आयोग और पुलिस–प्रशासन के स्तर से हादसे की जाँच अब भी जारी है। जाँच की रिपोर्ट के साथ हादसे की वजहें सामने आ जाएँगी, लेकिन अभी तक जो पता चला है, उसके मुताबिक कुछ लोगों ने अखाड़ों के लिए लगी बैरिकेडिंग पर चढ़कर उसे पार करने की कोशिश की। इसमें बैरिकेडिंग टूट गई और फिर वे लोग बैरिकेडिंग के पास विश्राम कर रहे श्रद्धालुओं पर गिर गए। इसी क्रम में अफवाहें फैलीं और लोग दूसरों को धक्का देते हुए उनके ऊपर से निकलने लगे। इस हादसे में कुछ पुण्यात्माओं को अपनी जान गँवानी पड़ी। कुछ श्रद्धालु घायल हो गए, जिन्हें ग्रीन कॉरिडोर बनाकर एंबुलेंसों के जरिए तत्काल पहले केंद्रीय अस्पताल, फिर प्रयागराज

के अन्य अस्पतालों में भरती कराया गया।

इस बीच मौनी अमावस्या की सुबह पवित्र संगम के तट पर हादसे और हौसले के बीच अद्‍भुत द्वंद्व देखने को मिला। धर्मक्षेत्र में पहुँचे 30 पुण्यात्माओं के हमारे बीच नहीं रहने से उनके परिवारीजन ही नहीं, पूज्य संतों से लेकर आम लोगों तक हर कोई आहत महसूस कर रहा है। वहीं दूसरा दृश्य यह है कि करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु संगम की ओर बढ़ते आ रहे। संतों की संगत में महाकुंभ में सनातन की पताका फहराती रही। अप्रत्याशित हादसे में कुछ पुण्यात्माओं के हताहत होने के बावजूद न श्रद्धालुओं ने हिम्मत हारी, न सरकार और प्रशासन ने। मौनी अमावस्या का महास्नान क्षणभर के लिए भी नहीं रुका। ऐसे चुनौतीपूर्ण अवसर पर सभी 13 अखाड़ों के पूज्य संतों ने अद्‍भुत धैर्य, सहृदयता और त्याग का परिचय दिया। आधी रात के बाद करीब डेढ़ बजे यह घटना घटी। घटना के बारे में और संगम नोज पर श्रद्धालुओं की अत्यधिक भीड़ की स्थिति के बारे में जब तक अखाड़ों को सूचना मिलती, उससे पहले ही साधु-संन्यासियों का पहला जत्था अमृत स्नान के लिए छावनी से निकल चुका था। स्नानक्रम में सबसे पहले महानिर्वाणी और अटल अखाड़े का नंबर था। इन दोनों अखाड़ों के पूज्य संत पूरे गाजे-बाजे के साथ छावनी से निकलकर रामघाट तक पहुँच चुके थे। नागा संन्यासियों का हुजूम भी साथ चल रहा था। संगम नोज की ओर बढ़ रहे दोनों अखाड़ों के पूज्य संतों को जैसे ही घटना के बारे में सूचना मिली, उन्होंने जुलूस को वापस छावनी की ओर मोड़ दिया। स्नान किए बिना पूरा जुलूस वापसी मार्ग से लौटा और छावनी में प्रवेश कर गया। इसके बाद अखाड़ा परिषद् के अध्यक्ष रवींद्र पुरी ने आम श्रद्धालुओं के हित को देखते हुए अमृत स्नान रद्द करने की घोषणा कर दी। हालाँकि कुछ बाद जब स्वयं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अखाड़ों के पूज्य संतों से बात की और उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराया तो पूज्य संतों ने बड़ी विनम्रता से कहा कि पहले सभी श्रद्धालु स्नान करके निकल जाएँगे, उसके बाद वे अमृत स्नान के लिए संगम की तरफ जाएँगे।

उधर लखनऊ में रहते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक पल का

भी विश्राम नहीं लिया। वे लगातार हालात पर नजर बनाए रहे। भोर से ही डी.जी.पी., प्रमुख सचिव गृह सहित शासन के तमाम जिम्मेदार अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए महाकुंभ में स्थितियों को सँभालने और वहाँ मौजूद आठ से 10 करोड़ श्रद्धालुओं की सुरक्षा व्यवस्था को सुनिश्चित करते हुए घायलों के इलाज तथा मौनी अमावस्या स्नान की व्यवस्था के सुगम संचालन का प्रबंध करते रहे। सबकी सामूहिक कोशिशों का नतीजा यह रहा कि हादसे के तुरंत बाद महाकुंभ मेला क्षेत्र में स्थितियाँ नियंत्रण में आ गईं। इस दौरान जहाँ एक तरफ आम श्रद्धालु, नागा साधु, अखाड़े और पूज्य संत प्रशासन और सरकार के साथ मिलकर स्थितियों को सँभालने में जुटे थे तो षड्यंत्रकारियों को इसमें अपने कुत्सित स्वार्थों को सिद्ध करने का सुनहरा अवसर नजर आने लगा। उन्होंने साजिशें करनी शुरू कर दीं, लेकिन अंततः हर बाधा पार कर श्रद्धालु संगम और गंगातट पर पहुँचे और त्रिवेणी संगम में स्नान किया। श्रद्धालुओं के बाद सभी अखाड़े अमृत स्नान को निकले। सुबह पाँच बजे के बजाय उन्होंने दोपहर बाद ढाई बजे से अमृत स्नान शुरू किया। कुछ प्रमुख संतों के एक-दो रथों को छोड़कर अन्य सभी महामंडलेश्वर, महंत, श्रीमहंत, संन्यासी, बैरागी और ब्रह्मचारी संत रथ, सिंहासन, बग्घी और ट्रैक्टर छोड़कर अनुयायियों के साथ पैदल ही पवित्र त्रिवेणी पर संगम स्नान के लिए पहुँचे। जुलूसों के आगे-आगे धर्मध्वजा, इष्ट देवता, देवता के प्रतीक फूलों से लगे भाले लिए साधु-संन्यासी चल रहे थे। कुछ संन्यासी परंपरागत युद्धकला और अस्त्र-शस्त्रों का प्रदर्शन करते हुए भी चल रहे थे। मौनी अमावस्या पर दस लाख से अधिक कल्पवासियों के साथ ही उनके लाखों रिश्तेदारों और परिचितों ने भी 12 किलोमीटर के क्षेत्र में फैले स्नान घाटों पर पुण्य की पवित्र डुबकी लगाई। कल्पवासियों के शिविरों में तीन-चार दिन पहले से ही उनके रिश्तेदारों और परिचितों का आना शुरू हो गया था। मौनी अमावस्या से पहले ही सभी शिविर फुल हो चुके थे। मौनी अमावस्या तक 27.58 करोड़ श्रद्धालु पवित्र त्रिवेणी में आस्था की डुबकी लगा चुके थे। इस दौरान तमाम समाजसेवियों और संस्थाओं ने प्रयागराज में जगह-जगह भंडारा

भी चलाया। श्रद्धालुओं की थकान को दूर करने के लिए चाय-नाश्ते-बिस्कुट और बंद मक्खन आदि का वितरण करते लोग हर कहीं देखे जा सकते थे। लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। प्रसाद में कहीं गरम खिचड़ी तो कहीं पूड़ी-सब्जी मिल रही थी।

संगम-तट पर श्रद्धा का सैलाब उमड़ पड़ा। विपरीत परिस्थितियों में भी स्नान का क्रम रुका नहीं। मौनी अमावस्या पर आठ करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने त्रिवेणी संगम में पवित्र डुबकी लगाकर पुण्यफल की प्राप्ति की। श्रद्धालुओं में पुण्यस्नान का जुनून ऐसा था कि दुनिया, जहाँ की अफवाहें भी उनके उत्साह को कम नहीं कर सकीं। इस बीच मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और पूज्य संतों ने संगम पहुँचने को आतुर करोड़ों श्रद्धालुओं से गंगा के किसी भी नजदीकी घाट पर स्नान करने की अपील की। उन्होंने कहा कि श्रद्धा के साथ आप कहीं भी स्नान करेंगे तो वही पुण्य प्राप्त होगा, जो त्रिवेणी संगम पर स्नान से मिलेगा। महाकुंभ की व्यवस्था में सहयोग करते हुए श्रद्धालुओं ने संगम से लेकर गंगा के अन्य घाटों पर स्नान किया और पुण्य फल की प्राप्ति की। सबके संयम, पूज्य संतों के आशीर्वाद और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल मार्गदर्शन से एक भीषण संकट का मुकाबला करने में श्रद्धालुओं और प्रशासन ने सफलता प्राप्त की।

पूरी दुनिया ने देखा कि एक संवेदनशील और सक्षम सरकार जन-भागीदारी और जन-विश्वास के साथ बड़ी-से-बड़ी चुनौती का सामना किस तरह कर सकती है। आज समूचा संसार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अगुवाई में इस नए उत्तर प्रदेश की खुले दिल से प्रशंसा कर रहा है। लोग पुलिस-प्रशासन को शत प्रतिशत नंबर देते हुए कह रहे हैं कि जिस क्षेत्र में घटना हुई, वहाँ लाखों की भीड़ जमा थी। प्रशासन और पुलिस ने विपरीत परिस्थितियों में भी संयम और सक्रियता का परिचय देते हुए स्थिति को तेजी से सामान्य किया। विद्युत् गति से एंबुलेंस के लिए अस्पताल तक ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। इन कोशिशों का नतीजा रहा कि घटना एक सीमित क्षेत्र में ही सिमटकर रह गई। बैरियर खोल दिए गए, ताकि वहाँ जमा भीड़

आसानी से निकल सके। अखाड़ों के अमृत स्नान में विलंब के अलावा मौनी अमावस्या के स्नान पर इस हादसे का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। देश-विदेश जहाँ कहीं से कोई महाकुंभ में आया, वह यहाँ की शानदार व्यवस्था का कायल हुए बिना नहीं रह सका।

घटना की जाँच कर रहा है न्यायिक आयोग

महाकुंभ हादसे की जाँच के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने तीन सदस्यीय जाँच आयोग का गठन किया है। आयोग ने गठन के कुछ ही घंटों में अपना काम शुरू कर दिया। न्यायिक आयोग के अध्यक्ष हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति हर्ष कुमार और दोनों सदस्य पूर्व डी.जी. वी.के. गुप्ता और पूर्व आई.ए.एस. डी.के. सिंह 31 जनवरी को दोपहर बाद प्रयागराज पहुँचे तो सर्किट हाउस के बाद सीधे घटनास्थल पर गए। तीनों ने बारीकी से पूरी घटना की छानबीन की। अधिकारियों ने उन्हें बताया कि कहाँ पर कितनी भीड़ थी और कैसे बैरिकेडिंग पार कर लोग दूसरी ओर उतरे। टीम ने पूरा घटनाक्रम अपनी डायरी में नोट किया। आयोग ने यह भी पूछा कि घटना के वक्त कहाँ पर कितने श्रद्धालु रहे होंगे। उन्होंने संगम नोज पर तैयार किए गए घाट की भी जानकारी ली। घाट कितना चौड़ा है और एक बार में कितने श्रद्धालु स्नान कर सकते हैं। यह सारा विवरण लिया और यह भी जाना कि कहाँ-कहाँ पर सी.सी.टी.वी. कैमरे लगे हैं। वहीं मुख्यमंत्री के आदेश पर उत्तर प्रदेश शासन के सबसे बड़े अधिकारी मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह और डी.जी.पी. प्रशांत कुमार ने भी महाकुंभ नगर पहुँचकर संगम नोज पर हुई भगदड़ के समय की परिस्थितियों को समझा। दोनों अधिकारियों ने अस्पताल में जाकर घायल श्रद्धालुओं का हाल भी जाना। आयोग के अध्यक्ष और सदस्य भी एस.आर. एन. अस्पताल गए। उन्होंने भी वहाँ भर्ती घायलों से मुलाकात कर स्थितियों की जानकारी ली। आयोग दो बिंदुओं पर खासतौर पर फोकस कर रहा है। एक—उन कारणों और परिस्थितियों का अभिनिश्चय करना, जिसके कारण महाकुंभ हादसा हुआ। दूसरा—भविष्य में इस प्रकार की घटना फिर से न हो,

इस संबंध में सुझाव देना। उस दिन मीडिया से बात करते हुए जाँच आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति हर्ष कुमार ने दुर्घटना के पीछे के कारणों को सिलसिलेवार ढंग से समझा जा रहा है। यदि जरूरत पड़ी तो टीम दोबारा यहाँ आएगी।

सी.एम. का संकल्प—दोषी बच न पाएँगे

महाकुंभ हादसे की जाँच अभी जारी है। इस बीच पुलिस की जाँच में घटना के पीछे कुछ साजिशों की भी बू आ रही है। किसी नतीजे तक पहुँचने के लिए हमें न्यायिक आयोग और पुलिस की अंतिम जाँच रिपोर्ट का इंतजार करना होगा। न्यायिक आयोग हादसे के कारण और परिस्थितयाँ बताने के साथ-साथ भविष्य में ऐसी घटना न होने पाए, इसके लिए सुझाव भी देगा। न्यायिक आयोग की अध्यक्षता इलाहाबाद हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति हर्ष कुमार कर रहे हैं। इसमें पूर्व डी.जी. वीके गुप्ता और रिटायर आई.ए.एस. बी.के. सिंह भी सदस्य के तौर पर शामिल हैं। इसके अलावा हादसे के कारणों को लेकर डी.जी.पी. प्रशांत कुमार के निर्देशन में पुलिस अलग से भी जाँच कर रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि इस घटना के दोषियों को किसी भी हाल में बख्शा नहीं जाएगा।

पुण्यात्माओं के परिवारों को 25-25 लाख

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाकुंभ हादसे के मृतकों के आश्रितों के लिए 25-25 लाख रुपए आर्थिक सहायता की घोषणा की है। इसके साथ सरकार ने सभी घायल श्रद्धालुओं के उपचार का जिम्मा और खर्चा उठाया। एक फरवरी को मुख्यमंत्री प्रयागराज पहुँचे तो अस्पताल में घायलों से मिलने और उनका हालचाल जानने भी गए। उन्होंने सबसे बात की और डॉक्टरों से कहा कि घायलों के इलाज में किसी तरह की कोताही नहीं होनी चाहिए। सभी का समुचित इलाज कर जल्द-से-जल्द स्वस्थ बनाने के लिए जो भी जरूरी हो, वह सब करने का निर्देश उन्होंने दिया।

श्रद्धालुओं की सुरक्षा, सुविधा और सुरक्षित वापसी कराई सुनिश्चित

हादसे के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जहाँ महाकुंभ की व्यवस्थाओं को सामान्य बनाने पर जोर दिया, वहीं विभिन्न क्षेत्रों से आ रहे श्रद्धालुओं की सुरक्षा, सुविधा और सुरक्षित वापसी भी सुनिश्चित कराई। मिरजापुर, चित्रकूट, अयोध्या और वाराणसी के अधिकारियों को खास तौर पर सतर्कता बरतने का निर्देश दिया। प्रयागराज से सीमा साझा करने वाले सभी जिलों के अधिकारियों को सतर्क किया। उन्हें आपस में संपर्क और समन्वय बनाए रखने के निर्देश दिए। उस समय प्रयागराज के सभी रेलवे स्टेशनों पर बड़ी संख्या में स्नान करके लौट रहे श्रद्धालुओं की उपस्थिति भी एक चुनौती थी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ए.डी.जी. और प्रयागराज के डी.एम. को यह सुनिश्चित कराने का निर्देश दिया कि एक-एक श्रद्धालु के सुरक्षित ढंग से घर तक पहुँचने की व्यवस्था करें। उन्होंने राज्य सरकार के अधिकारियों को रेलवे से संपर्क और समन्वय स्थापित करते हुए ट्रेनों का लगातार संचालन सुनिश्चित करवाने का निर्देश दिया। रेलवे स्टेशनों पर भीड़ उमड़ी तो स्थिति खराब होने लगी। मौनी अमावस्या पर सुबह से स्टेशनों पर इमरजेंसी प्लान लागू कर दिया गया। प्रयागराज, झूँसी, छिक्वी और नैनी स्टेशनों पर बड़ी सूझबूझ से स्थिति सामान्य कराई गई।

इसके साथ ही यू.पी. रोडवेज की अतिरिक्त बसें लगाई गईं। सीमावर्ती क्षेत्रों में होल्डिंग एरिया बनाए गए, ताकि मेला क्षेत्र में भीड़ का दबाव न बने। श्रद्धालुओं को स्थिति देखकर थोड़े-थोड़े अंतराल पर आगे बढ़ने दिया गया। उन्हें जहाँ-जहाँ भी रोका गया, वहाँ सभी के लिए भोजन और पेयजल आदि का इंतजाम भी किया गया।

आस्था की अविरल धारा

प्रयागराज हादसे के बाद भी आस्था की अविरल धारा बहती रही और त्रिवेणी संगम में पवित्र डुबकी लगाने वालों का सिलसिला एक पल के लिए

भी थमा नहीं। दो दिन में ही 20 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने स्नान किया। एक फरवरी को मुख्यमंत्री योगी आदियनाथ ने एक बार फिर प्रयागराज पहुँचकर वसंत पंचमी के अमृत स्नान की तैयारियों को परखा। उन्होंने अधिकारियों से दुर्घटना के बारे में पूरी जानकारी ली। साथ ही हिदायत भी दी कि कहीं किसी तरह की चूक नहीं होनी चाहिए। इस दिन उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने भी सपरिवार त्रिवेणी संगम में स्नान किया। उन्होंने स्वस्ति वाचन के बीच सिर पर शिवलिंग रखकर आस्था की डुबकी लगाई। उनके साथ 73 देशों के राजनयिकों और विदेशी अतिथियों ने भी संगम स्नान किया। उस दिन संतों के बीच मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी ने स्पष्ट रूप से कह भी दिया कि कुछ लोग लगातार सनातन धर्म के खिलाफ षड्यंत्र का प्रयास कर रहे हैं। यह प्रयास आज से नहीं, बल्कि लंबे समय से जारी है। श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के समय से ही वे लोग षड्यंत्र का प्रयास कर रहे हैं। सभी संत इस बात के साक्षी हैं। हमें उनके षड्यंत्र से सावधान होकर संतों के सान्निध्य में आगे बढ़ना होगा।

वसंत पंचमी पर ढाई करोड़ श्रद्धालुओं ने किया अमृत स्नान

तीन फरवरी को वसंत पंचमी स्नान पर्व पर ढाई करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने अमृत स्नान किया। उस दिन संगम तट पर वासंतिक छटा देखने को मिली। उदया तिथि पर पड़े इस पर्व पर तड़के साढ़े तीन बजे से ही अखाड़ों का अमृत स्नान शुरू हो गया। भोर से देर शाम तक संत और श्रद्धालु संगम में पुण्य की डुबकी लगाते रहे। मौनी अमावस्या पर हुए हादसे से सबक लेते हुए वसंत पंचमी पर प्रशासन और पुलिस पूरी तरह से सतर्क नजर आई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्वयं भोर में साढ़े तीन बजे से लखनऊ स्थित अपने आवास पर वॉर रूम से अमृत स्नान की निगरानी करते रहे। उनके साथ डी.जी.पी., प्रमुख सचिव गृह और उत्तर प्रदेश शासन के सभी वरिष्ठ अधिकारी वहाँ मौजूद रहे। वह अधिकारियों से लगातार अपडेट लेते रहे और आवश्यक निर्देश देते रहे।

उस दिन संतों ने पहले से ही अपील की थी, जिसे मानते हुए श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या में संगम के साथ गंगा के अन्य घाटों पर भी स्नान किया। सरकार की ओर से संतों और श्रद्धालुओं पर हेलीकॉप्टर से पुष्पवर्षा भी की गई। वसंत पंचमी पर आठ बजे तक 2.57 करोड़ लोगों ने संगम स्नान किया। इसके साथ ही 13 जनवरी को हुए पहले स्नान से वसंत पंचमी तक संगम में पवित्र डुबकी लगाने वालों की संख्या 37.54 करोड़ हो गई थी। यह क्रम लगातार जारी है।

अमृत स्नान के दौरान संगम नोज पर दिखी अद्भुत व्यवस्था

वसंत पंचमी पर अमृत स्नान के दौरान संगम नोज पर अद्भुत व्यवस्था दिखी। वहाँ पहली बार पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों ने मानव श्रृंखला बनाई। रस्सी का घेरा बनाकर एकल मार्ग तैयार किया गया। सतर्कता, सुरक्षा और संयम का संगम पूरे मेला क्षेत्र में देखने को मिला। जहाँ एक ओर करोड़ों श्रद्धालुओं ने पूरी आस्था और संयम के साथ त्रिवेणी संगम के तट पर आस्था की पवित्र डुबकी लगाई। पूरे महाकुंभ नगर में श्रद्धालुओं की सुरक्षा और भीड़ प्रबंधन को लेकर पुलिस ने बड़ी तैयारी की थी और इसका असर देखने को मिला। श्रद्धालुओं को दिव्य और भव्य महाकुंभ के साथ सुरक्षा का भी अहसास हुआ। उस दिन करोड़ों श्रद्धालुओं के होने के बावजूद कहीं एक जगह भीड़ नहीं दिखी। संगम घाट पर भीड़ अधिक होने और त्रिवेणी में डुबकी लगाकर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के लौटते समय भी बहुत अच्छी सुरक्षा व्यवस्था देखने को मिली। हर तरह से भीड़ प्रबंधन बेहतर दिखा। घाट से भीड़ के लौटने पर जाने वाले श्रद्धालुओं को रस्सी का बैरियर लगाकर थोड़ी देर के लिए रोका गया। घाट पर जैसे ही भीड़ कम होती थी, वैसे ही लोगों को छोड़ा जाता था। सुबह से शाम तक थोड़े-थोड़े अंतराल पर लोगों को छोड़ने की इस व्यवस्था को लागू रखकर नियंत्रण बनाए रखा गया। इसके साथ ही संगम घाट और मेला क्षेत्र में जगह-जगह लगे लाउडस्पीकरों से दिन भर उद्घोषणा की जाती रही और श्रद्धालुओं को जागरूक किया जाता रहा।

साधु-संतों ने व्यवस्थाओं को सराहा

वसंत पंचमी पर अमृत स्नान के दौरान व्यवस्थाओं को लेकर साधु-संन्यासी बहुत खुश नजर आए। अखाड़ों ने अपने क्रम से अमृत स्नान किया। सबने माना कि व्यवस्था बहुत अच्छी है और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की खुलकर प्रशंसा भी की। प्रदेश के दो हजार बुजुर्गों ने भी महाकुंभ में अमृत स्नान किया। वृद्धाश्रमों से आए वरिष्ठजनों के लिए कुंभ मेला क्षेत्र में 100 बेड का विशेष आश्रम स्थापित किया गया है। वृद्धाश्रमों से लाए गए बुजुर्गों के ठहरने की यहाँ विशेष व्यवस्था की गई है।

जनस्मृतियों में सैकड़ों वर्षों तक रहेगा महाकुंभ-2025

महाकुंभ में 13 जनवरी से लगातार सनातन का वैभव दिख रहा है। वसंत पंचमी तक 37 करोड़ से अधिक श्रद्धालु संगम स्नान कर चुके हैं। देश के हर राज्य और हर जाति के लोगों ने महाकुंभ में आकर एक साथ संगम में अमृत स्नान किया है। यही नहीं, दुनिया के तमाम देशों से श्रद्धालु यहाँ पहुँचे हैं। संगम की रेती पर हर ओर 'हर-हर गंगे, जय श्रीराम, बम-बम भोले' के उद्घोष सुनने को मिल रहे हैं। 26 जनवरी से हर दिन एक करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं को महाकुंभ में आना और पवित्र संगम की डुबकी लगाना जारी है। अभी 26 फरवरी तक महाकुंभ का मेला चलना है। इस दृष्टि से लग रहा है कि यहाँ 40-45 करोड़ के अनुमान से कहीं अधिक संख्या में श्रद्धालु त्रिवेणी संगम की पवित्र डुबकी लगाएँगे। 144 साल बाद बने पूर्ण कुंभ के इस दुर्लभ संयोग में अमृत स्नान और अमृत पान की इच्छा लेकर उत्तर प्रदेश के 76वें जिले महाकुंभ नगर में आने वालों ने जहाँ के दो देशों के बाद सबसे ज्यादा आबादी के यहाँ जुटने का रिकॉर्ड बनाया है, वहीं अपने दृढ़ विश्वास और धर्म-परायणता से समूचे विश्व को सम्मोहित भी कर लिया है। 26 फरवरी को भले इस महाकुंभ का भौतिक समापन हो जाएगा, लेकिन संसार की जनस्मृतियों में यह सैकड़ों वर्षों तक अपनी अमिट अनुभूति के साथ विद्यमान रहेगा।

दिल्ली में नाला सरीखी यमुना मैया प्रयागराज में हुईं स्वच्छ और निर्मल

दिल्ली में नाला सरीखी हो चुकी यमुना नदी प्रयागराज महाकुंभ में इतनी स्वच्छ और निर्मल हो गई कि गंगा और अदृश्य सरस्वती के मिलन स्थल, यानी त्रिवेणी संगम में करोड़ों श्रद्धालुओं ने ही नहीं, बल्कि भारतगणराज्य के मान. राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मूजी एवं देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी डुबकी लगाई। वहीं प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तो महाकुंभ के दौरान बार-बार संगम में डुबकी लगाते रहे। इसी दौरान दिल्ली की एक चुनावी जनसभा में उन्होंने वहाँ के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को यमुना में डुबकी लगाने की चुनौती भी दी थी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी ने जब दिल्ली में यमुना मैया को गंदा नाला बना देने की सच्चाई सामने रखी और उत्तर प्रदेश में इसी नदी की बेहतर स्थिति का वर्णन किया तो देश और दुनिया से प्रयागराज आए करोड़ों श्रद्धालुओं ने अपने बयानों में इसकी पुष्टि भी की। तब दिल्ली की सभाओं में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी ने कहा था कि एक मुख्यमंत्री के तौर पर अगर मैं और मेरे मंत्री संगम में डुबकी लगा सकते हैं तो आप पार्टी के मुखिया अरविंद केजरीवाल से मैं पूछता हूँ कि क्या वे अपने मंत्रियों के साथ यमुना में डुबकी लगा सकते हैं? योगीजी की इस चुनौती पर आम आदमी पार्टी कोई ठोस प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त कर सकी। करती भी कैसे? मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने के बाद से प्रदेश में बहने वाली पवित्र नदियों की शुद्धता और सफाई के लिए जो प्रयत्न किए गए हैं, वे बेमिसाल हैं। जहाँ तक महाकुंभ में गंगा और यमुना की स्वच्छता का प्रश्न है, उत्तर प्रदेश सरकार ने इसके लिए दिन-रात अथक परिश्रम किया है। सरकार ने यह सुनिश्चित किया कि कोई भी अनुपचारित सीवेज या नाले का पानी नदी में न गिरे। करोड़ों की लागत से उपचार संयंत्र लगाए गए। सीवेज के उपचार के लिए जियो ट्यूब तकनीक का इस्तेमाल किया गया। यह एक उन्नत सीवेज उपचार

विधि है। यह तकनीक सीवेज जल में लगभग 40–50 प्रतिशत बायोकेमिकल ऑक्सीजन डिमांड (बी.ओ.डी.) और 80 प्रतिशत कुल निलंबित ठोस (टी. एस.एस.) का उपचार करती है। जियो ट्यूब से गुजरने के बाद, सीवेज के पानी को हाइड्रोजन पेरोक्साइड और ओजोनाइजेशन के साथ शुद्ध किया जाता है। यह क्लोरीनीकरण की तुलना में अधिक सुरक्षित है। ओजोनाइजेशन सभी प्रकार के मल बैक्टीरिया को मारता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि उपचारित पानी नदियों में छोड़ने के लिए सुरक्षित है।

महाकुंभ के लिए यमुना के पानी को साफ करने के कई उपाय किए गए। पानी की शुद्धता की रोजाना जाँच की गई। घाटों की सफाई के लिए सेवादूतों की नियुक्ति की गई। महाकुंभ में इस बार बड़ी और पर्याप्त संख्या में शौचालयों का निर्माण किया गया। इसके साथ ही बैराज से ज्यादा पानी छोड़कर नदी के प्रवाह को बेहतर बनाया गया। मल-जल उपचार संयंत्रों (FSTP) का इस्तेमाल किया गया। अलग-अलग घाटों के पानी का सैंपल लेकर प्रयोगशाला में टेस्ट किया गया। हर दो घंटे में मशीन की मदद से पानी में फेंके गए फूल और नारियल निकाले जाते रहे। इसके साथ ही लोगों से अपील की गई कि वे नदी में जूते-कपड़े और अन्य चीजें न फेंकें। महाकुंभ में योगी आदित्यनाथ सरकार की इन तैयारियों को जिसने भी देखा, समझा उसने खुलकर इसकी तारीफ की। जहाँ देश के अलग-अलग हिस्सों में पवित्र नदियों की दुर्दशा दिखती है, वहीं उत्तर प्रदेश में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम में डुबकी लगाने वालों का मन यहाँ के जल की स्वच्छता को देखकर प्रसन्न हो गया। लोगों के मन में कोई शंका न रही। उन्होंने बिना किसी संकोच के त्रिवेणी संगम में स्नान का पुण्य लाभ लिया। यही नहीं महाकुंभ में आस्था की डुबकी लगाने के बाद श्रद्धालु जन इसका जल अपनी अंजुली में लेकर उसे पीकर शरीर के अंदर के पाप भी धो रहे हैं। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और अन्य बड़ी-बड़ी हस्तियों ने संगम में डुबकी लगाने के साथ ही जल का आचमन भी किया। मेला प्रबंधन से जुड़े लोग बताते हैं कि महाकुंभ में हर दिन

संगम के पानी का टेस्ट किया जा रहा है। एक टीम बनाई गई है, जो अलग-अलग घाटों के पानी का सैंपल लेकर उसे लैब में टेस्ट करती है। यह भी पता लगाया जाता है कि किस घाट पर गंदगी ज्यादा है और कहाँ सफाई करनी है। महाकुंभ में श्रद्धालु पानी में जो फूल या नारियल फेंकते हैं, उसे निकालने के लिए भी टीम बनाई गई है। हर दो घंटे में मशीन की मदद से इन्हें बाहर निकाला जाता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि उत्तर प्रदेश ने सफाई से कोई समझौता नहीं की नीति पर चलते हुए नदियों की स्वच्छता सुनिश्चित कराई है। महाकुंभ पर खर्च हुए करीब साढ़े सात हजार करोड़ रुपयो में से 1600 करोड़ रुपए सिर्फ पानी की सफाई पर खर्च किए गए हैं। यही नहीं घाटों की सफाई के लिए गंगा सेवदूतों को नियुक्त किया गया है। इन सेवादूतों का काम घाट की सफाई को बरकरार रखना है। लोग खुले में गंदगी न फैलाएँ और महाकुंभ क्षेत्र में कहीं भी गंदगी न हो इसके पुख्ता इंतजाम किए गए हैं।

राष्ट्र की प्रथम नागरिक ने संगम में डुबकी लगाई, माँ गंगा से माँगी देश की समृद्धि

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मूजी ने भी महाकुंभ पहुँचकर त्रिवेणी संगम में पवित्र डुबकी लगाई। 10 फरवरी की सुबह वह हेलिकॉप्टर से प्रयागराज के बमरौली एयरपोर्ट पहुँचीं। वहाँ राज्यपाल आनंदीबेन पटेलजी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी ने उनका स्वागत किया। भारत की प्रथम नागरिक राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मूजी को प्रयागराज के प्रथम नागरिक उमेश चंद्र गणेश केसरवानी ने प्रयागराज नगर की सांकेतिक चाबी भेंट की और उनका अभिवादन किया। राष्ट्रपतिजी एयरपोर्ट से सीधे 'अरैल घाट' पहुँचीं। इसके बाद नाव से संगम पहुँचकर उन्होंने माँ गंगा-माँ यमुना और माँ सरस्वती (अदृश्य) की त्रिवेणी पर पवित्र डुबकी लगाई। उन्होंने सपरिवार विधिवत् पूजा-अर्चना की। संगम में उतरने से पहले राष्ट्रपतिजी ने पूरी आस्था के साथ जल को स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। फिर पवित्र जल में फूलमाला और नारियल अर्पित कर राष्ट्र की समद्धि और शांति की मनोकामना की। उन्होंने पूरी आस्था और विश्वास

के साथ संगम में एक के बाद एक कई डुबकियाँ लगाईं। उन्होंने सूर्यदेव को अर्घ्य दिया। संगमस्नान के बाद राष्ट्रपतिजी ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच गंगा आरती और पूजन-अर्चन किया। इसके बाद उन्होंने अक्षयवट और सरस्वती कूप के दर्शन कर समस्त नागरिकों के सुखमय जीवन की कामना की। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मूजी ने तीर्थराज प्रयाग में त्रिवेणी संगम के तट पर स्थित श्री लेटे हनुमानजी मंदिर में भी दर्शन-पूजन किया। संगमस्नान के बाद सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' (पूर्व में ट्विटर) पर राष्ट्रपतिजी अपने विचार कुछ यों व्यक्त किए। उन्होंने लिखा—"प्रयागराज महाकुंभ के अलौकिक वातावरण में माँ गंगा, यमुना और अंत: सलिला सरस्वती के पावन संगम में आज स्नान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्रद्धा और विश्वास का यह विशाल समागम भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अद्‌भुत और जीवंत प्रतीक है। महाकुंभ मानवता को एकता और आध्यात्मिकता का संदेश देता है। माँ गंगा से मेरी प्रार्थना है कि वे सब पर अपनी कृपा बनाए रखें और सभी के जीवन में सुख एवं शांति का संचार करती रहें।"

इसके पहले अरैल घाट से संगम घाट तक जाते समय नाव पर राष्ट्रपतिजी के साथ मौजूद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी ने उन्हें गंगा-यमुना नदी और उसके प्रवाह के बारे में जानकारी दी। महाकुंभ के अद्‌भुत और मनोरम वातावरण में उन्मुक्त विचरते साइबेरियाई पक्षियों को राष्ट्रपतिजी ने दाना भी डाला।

महाकुंभ में राष्ट्रपतिजी का यह आगमन न केवल तीर्थराज प्रयाग, बल्कि देश और दुनिया भर के श्रद्धालुओं के लिए भी एक प्रेरणादायी क्षण बन गया। देश के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसादजी भी कुंभ मेले में आए थे। वे 1954 में आयोजित हुए देश की आजादी के बाद के पहले कुंभ मेले में शामिल हुए थे। तब उन्होंने संगम स्नान किया था। 10 फरवरी, 2025 को देश की वर्तमान राष्ट्रपतिजी की उपस्थिति ने कुंभ के धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्त्व को वैश्विक पटल पर एक बार फिर से रेखांकित किया है। महाकुंभ मेले में इस दिन के अनोखे दृश्यों को पूरी दुनिया ने देखा, जब संसार के सबसे

बड़े लोकतंत्र वाले राष्ट्र की प्रथम नागरिक ने संगम में डुबकी लगाई और मानवता की भलाई की कामना करते हुए भारत की इन तीन पवित्र नदियों का पूजन और अर्चन किया।

प्रधानमंत्री और आम श्रद्धालु, विहंगम महाकुंभ में सबने साथ किया स्नान

प्रयागराज महाकुंभ में गंगापुत्र भीष्म की अष्टमी (भीष्माष्टमी) पर 5 फरवरी, 2025 को जो अद्भुत दृश्य देखने को मिला, दुनिया के ज्यादातर देश उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। यह वही दृश्य है, जो भारत के दुनिया के प्राचीनतम लोकतंत्र होने की पुष्टि करता है। सचमुच इस देश में लोकतंत्र की जड़ें विश्व के किसी भी देश के मुकाबले कहीं अधिक गहरी हैं। यही वह देश है, जहाँ समाज के अंतिम पायदान पर खड़े आम नागरिक और सत्ता के शीर्ष पर विराजमान अत्यंत विशिष्ट व्यक्ति के बीच सिर्फ कानून के समक्ष ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक जीवन में भी कई बार कोई भेद नहीं रह जाता। 5 फरवरी, 2025 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी महाकुंभ में स्नान करने पहुँचे तो संगम घाट पर लाखों की संख्या में आम श्रद्धालु उपस्थित थे। प्रधानमंत्री बमरौली एयरपोर्ट से अरैल घाट आए। अरैल घाट से एक स्टीमर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी सवार हुए और संगम की ओर चल पड़े। इस दौरान प्रधानमंत्रीजी संगम घाट पर उपस्थित लाखों श्रद्धालुओं की ओर देखते और हाथ हिलाकर लगातार उनका अभिवादन स्वीकार करते रहे। उधर श्रद्धालुओं के बीच 'हर हर गंगे' के जयकारे गुंजायमान होते रहे। प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, कई वरिष्ठ मंत्रियों और बड़े नेताओं की मौजूदगी के बावजूद किसी आम श्रद्धालु का कोई कार्यक्रम नहीं रुका। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी ने जब त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाई, ठीक उसी समय लाखों श्रद्धालुओं ने भी डुबकी लगाई। प्रधानमंत्रीजी का स्नान कार्यक्रम घाट कुछ दूरी पर रखा गया था, ताकि आम श्रद्धालुओं को सुरक्षा प्रोटोकॉल की वजह से कोई समस्या न हो। श्रद्धालु आराम से स्नान कर करते रहे और वहीं कुछ दूरी पर प्रधानमंत्रीजी

भी संगम में पवित्र डुबकी लगाते रहे। प्रधानमंत्री ने पवित्र संगम में तीन डुबकी लगाई। संगम स्नान में तीन डुबकी का बहुत अधिक महत्त्व हैं। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती को साक्षी मानकर तीन डुबकी लगाई जाती हैं। इसे त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश का भी प्रतीक माना जाता है। तीनों लोक (स्वर्ग, पृथ्वी और नर्क) में कल्याण की कामना का प्रतीक भी इसे कहा जाता है। प्रधानमंत्रीजी ने निश्चित ही तीन डुबकियों से पावन त्रिवेणी को साक्षी माना और त्रिदेवों से तीनों लोकों में कल्याण की कामना की।

प्रधानमंत्री मोदी को पूजन कराने वाली टीम के अगुआ तीर्थ पुरोहित पं. दीपू मिश्र बताते हैं कि तीन डुबकी पावन त्रिवेणी को साक्षी मानकर स्नान की प्रतीक मानी जाती हैं। इसमें यह कामना की जाती है कि पावन जल में स्नान करने से तीनों लोक में विजय का डंका बजेगा। कुछ संतों का यह भी कहना है कि भारत के राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे में भी तीन रंग केसरिया, सफेद और हरा है। इससे यह संदेश जाता है कि भारत देश ओजस्वी है, शांति में विश्वास रखता है और सभी को निरंतर प्रगति का संदेश देता है। प्रधानमंत्रीजी ने माँ गंगा से सभी देशवासियों के सुख-समृद्धि, आरोग्य और कल्याण की कामना की। 5 फरवरी को जब प्रधानमंत्रीजी ने संगम स्नान किया, उस दिन गंगापुत्र भीष्म की अष्टमी थी। इसी दिन भीष्म ने देह त्यागी थी। यह अत्यंत विशेष दिन था। प्रधानमंत्रीजी ने अष्टमी तिथि पर सुबह 11 से 11:30 बजे के बीच संगम स्नान किया। उस समय मेष लग्न और मेष राशि का उदय भी हो रहा था। मेष लग्न और मेष राशि में गंगास्नान करना शुभ फलप्रदायक साबित होगा। हिंदू पंचांग के अनुसार इस समय गुप्त नवरात्र चल रहे हैं। गुप्त नवरात्र पर जहाँ देवी पूजन किया जाता है तो वहीं, भीष्माष्टमी पर अपने पुरखों का तर्पण और श्राद्ध करने का भी महत्त्व है। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच माँ गंगा के पूजन के दौरान प्रधानमंत्रीजी ने साड़ी और चुनरी भी चढ़ाई। पुष्प, अक्षत, माला, फल और नारियल आदि अर्पित किए। उन्होंने दूध और जल से माँ गंगा का अभिषेक किया। प्रधानमंत्रीजी ने अपने एक्स अकाउंट पर पवित्र त्रिवेणी में स्नान और पूजन की तसवीरों को साझा करते हुए लिखा कि माँ

गंगा का आशीर्वाद पाकर मन को असीम शांति और संतोष मिला। एक अन्य पोस्ट में प्रधानमंत्रीजी ने लिखा—'दिव्य-भव्य महाकुंभ में आस्था, भक्ति और अध्यात्म का संगम हर किसी को अभिभूत कर रहा है।' अंग्रेजी में की गई इस पोस्ट में प्रधानमंत्रीजी ने लिखा—महाकुंभ में आकर धन्य हो गया हूँ। संगम पर स्नान एक दिव्य जुड़ाव का क्षण है और इसमें भाग लेने वाले करोड़ों अन्य लोगों की तरह मैं भी भक्ति की भावना से भर गया। माँ गंगा सभी को शांति, ज्ञान, अच्छे स्वास्थ्य और सद्भाव का आशीर्वाद दें। महाकुंभ के लिए प्रधानमंत्रीजी 5 फरवरी की सुबह दस बजे के करीब बमरौली एयरपोर्ट पहुँचे। वहाँ से वह हेलीकॉप्टर से डी.पी.एस. हेलीपैड पहुँचे। वह सफेद कुरता और पायजामा पहने हुए थे। प्रधानमंत्रीजी हेलीपैड से सड़क मार्ग से अरैल घाट आए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी के साथ जब वह स्टीमर से संगम स्नान के लिए आगे बढ़े तो संगम तट पर मौजूद लाखों श्रद्धालु उन्हें देखते हुए हाथ हिलाकर सनातन के प्रति अपनी भक्ति का भाव और प्रधानमंत्री-मुख्यमंत्री के कृतित्व के प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त करने लगे। संगमस्नान के समय प्रधानमंत्रीजी काली लोअर और भगवा स्वेट शर्ट में थे। उनके गले और हाथ में रुद्राक्ष की माला थी। वह लगातार जप करते रहे। त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाने के बाद प्रधानमंत्रीजी ने माँ गंगा का पूजन किया। इस समय वह सफेद पायजामा, काले रंग के कुरते और जैकेट में थे। उनके सिर पर हिमाचली टोपी और गले में भगवा रंग का गमछा था। प्रधानमंत्रीजी करीब 45 मिनट तक वहाँ रहे। संगमस्नान और पूजन के बाद वह एक बार फिर स्टीमर से श्रद्धालुओं का अभिवादन करते हुए अरैल घाट पर लौटे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पूरे समय प्रधानमंत्रीजी के साथ मौजूद रहे।

भूटान नरेश ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ लगाई त्रिवेणी संगम में डुबकी

तीर्थराज प्रयाग की इस विशिष्ट पुण्यभूमि पर आकर हर साल लाखों श्रद्धालु पावन त्रिवेणी से सभी की कल्याण कामना करते हैं। गंगा-यमुना और

अदृश्य सरस्वती हर किसी की मनोकामना पूरी करती हैं। सकल पुण्य की यही मनोकामना लिये भूटान नरेश जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक भी महाकुंभ में शामिल होने के लिए भारत की यात्रा पर आए। वह चार फरवरी को महाकुंभ आए। उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाई। भूटान नरेश तीन फरवरी को ही लखनऊ पहुँच गए थे। वहाँ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी ने उनका स्वागत किया था। चार फरवरी को भूटान नरेश के साथ मुख्यमंत्री प्रयागराज पहुँचे। वहाँ भूटान नरेश और मुख्यमंत्रीजी ने संगम में स्नान के साथ दर्शन-पूजन किया। इसके बाद उन्होंने अक्षयवट और बड़े हनुमान मंदिर में भी दर्शन किए। मुख्यमंत्रीजी के साथ स्टीमर पर संगम जाते समय भूटान नरेश प्रवासी पक्षियों को दाना डालते हुए काफी खुश दिख रहे थे। इसके बाद उन्होंने भूटानी प्रतिनिधिमंडल के साथ माँ गंगा का विधिविधान से पूजन भी किया। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच भूटान नरेश ने माँ गंगा का दुग्धाभिषेक किया। भूटान नरेश, मुख्यमंत्री और अन्य विशिष्टजनों ने पुष्प, रोली, चंदन, नारियल अर्पित कर माँ गंगा की आरती उतारी। उन्होंने पवित्र संगम को नमन किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी ने संगम घाट पर भूटान नरेश को कुंभ कलश भेंट किया। भूटान नरेश ने अक्षयवट और बड़े हनुमान मंदिर में भी दर्शन किए। सैन्य अफसरों ने अक्षयवट में भूटान नरेश को स्मृति-चिह्न दिया। हनुमान मंदिर में महंत बलबीर गिरि ने बड़े हनुमानजी का चित्र भूटान नरेश को भेंट किया। इसके बाद भूटान नरेश बड़े हनुमान मंदिर के पास बने डिजिटल महाकुंभ अनुभूति केंद्र में भी पहुँचे। उन्होंने महाकुंभ के दिव्य-भव्य और डिजिटल स्वरूप का अवलोकन किया। उन्होंने बड़ी स्क्रीन पर समुद्र-मंथन और अन्य आध्यात्मिक दृश्य देखे। इस दौरान मुख्यमंत्री योगी आदियनाथजी ने भूटान नरेश को महाकुंभ के माहात्म्य से परिचित कराया। विदेश नीति के जानकारों का मानना है कि भूटान नरेश का यह दौरा भारत-भूटान मित्रता और सांस्कृतिक संबंधों को और अधिक सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित होगा।

4 फरवरी को ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी ने महाकुंभ नगर के

सेक्टर 17 के अखिल भारतीय संत समागम निवास पंडाल में बौद्ध महाकुंभ यात्रा का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्रीजी ने कहा कि हिंदू और बौद्ध एक ही वट वृक्ष की शाखाएँ हैं। उन्होंने कहा कि सभी उपासना विधियों का एक मंच पर आना अभिनंदनीय है। यदि ये एक ही मंच पर आ जाएँ तो यह दुनिया में सबसे शक्तिशाली वटवृक्ष बनेगा। यह वटवृक्ष उन्हें छाँव भी देगा। साथ ही उनकी सुरक्षा भी सुनिश्चित करेगा। इस कार्यकम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी ने बौद्ध संतों और विद्वानों पर पुष्प वर्षा भी की।

महाकुंभ में लगा रहा महत्त्वपूर्ण हस्तियों का आना-जाना

महाकुंभ–2025 में देश और दुनिया से महत्त्वपूर्ण हस्तियों का आना–जाना लगा रहा। इसमें देश–दुनिया से साधु–संत, संन्यासी, प्रसिद्ध और मशहूर शख्सियतें, उद्योगपति, श्रद्धालु और आमजन शामिल होते रहे। वे सभी गंगा, यमुना और सरस्वती के पावन संगम पर डुबकी लगाकर खुद को धन्य मान रहे हैं। सबने मुक्त कंठ से महाकुंभ की शानदार व्यवस्था की प्रशंसा की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, राज्यसभा सांसद सुधा मूर्ति, अभिनेत्री और सांसद हेमा मालिनी, अनुपम खेर, मशहूर कोरियोग्राफर रेमो डिसूजा, ओलंपिक पदक विजेता साइना नेहवाल, कई प्रदेशों के मुख्यमंत्री, मंत्री सहित अन्य हस्तियों ने भी संगम में डुबकी लगाई। महाकुंभ में दुनिया के सबसे बड़े अमीरों में से एक एप्पल कंपनी के मालिक स्टीव जॉब्स की पत्नी लॉरेन पॉवेल जॉब्स ने भी हिस्सा लिया। इस दौरान उन्हें नया नाम 'कमला' मिला। उन्होंने निरंजनी अखाड़े के पीठाधीश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरी से दीक्षा ली और महाकुंभ में कल्पवास भी किया। स्वामी कैलाशानंद गिरि ने उन्हें माँ काली का बीज मंत्र दिया। लॉरेन वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर के दर्शन के लिए भी पहुँची थीं। उन्होंने महाकुंभ में कथा और प्रवचन में भी हिस्सा लिया। सनातन का प्रभाव देख लगातार महाकुंभ की व्यवस्था को कोसते रहने वाले समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव भी पहुँचे। मौनी अमावस्या पर अमृत स्नान के लिए सबसे

अधिक भीड़ रही। उस दिन 8 से 10 करोड़ तीर्थयात्रियों ने गंगा में डुबकी लगाई। मकर संक्रांति पर 3.5 करोड़ श्रद्धालुओं ने अमृत स्नान किया। 2.57 करोड़ लोगों ने बसंत पंचमी पर संगम में डुबकी लगाई। इसके पहले पौष पूर्णिमा पर दो करोड़ लोगों ने स्नान किया। 30 जनवरी और एक फरवरी को दो करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने स्नान किया। तीन पवित्र स्नान पर्व मौनी अमावस्या, मकर संक्रांति और बसंत पंचमी के समापन के बाद भी देश और दुनिया के कोने-कोने से श्रद्धालु बड़ी संख्या में महाकुंभ पहुँच रहे और पवित्र संगम में डुबकी लगा रहे हैं। 13 जनवरी, 2025 से शुरू हुए महाकुंभ का समापन 26 फरवरी, 2025 को महाशिवरात्रि के दिन होगा। उस दिन भी यहाँ श्रद्धालुओं की भारी भीड़ जुटेगी।

□

वेदों में कुंभ-पर्व का अस्तित्व एवं महत्त्व

—डॉ. सोनल सिंह*

अत्यंत प्राचीनकाल से समाज में धार्मिक दृष्टिकोण सर्वोपरि है। धर्म ही है, जो हमें सद्गुण सिखाता है, अपने कर्तव्यों को बोध कराता है। धर्म शब्द का तात्पर्य भी 'धारयति इति धर्म' से लिया गया है, अर्थात् जिसे आत्मसात् किया जाए, धारण किया जाए, वह धर्म है। भारतीय समाज में धर्म के प्रति आस्था अत्यधिक सुदृढ़ है। श्रद्धा, भक्ति और विश्वास के द्वारा कठिन–से–कठिन मार्ग में भी सहज जीवन जीने के लिए सिखाती है। साथ ही तीर्थों के प्रति भी श्रद्धा का भाव इस तकनीकी काल में विद्यमान है, जिसमें हम कुंभ तीर्थस्थान के बारे में अवलोकन करेंगे।

कुंभ सनातन धर्म का बड़ा ही धार्मिक पर्व है। इसमें विभिन्न देशों तथा प्रांतों के लोग श्रद्धापूर्वक आकर स्नान, दान, जप, पूजा–पाठ करते हैं। इस पर्व में केवल भारतीय हिंदू ही नहीं वरन् प्रत्येक देशों में रहने बाले लोग प्रभावित होते हैं। इसमें साधु संत, गृहस्थ, राजनेता, पदाधिकारी सभी समरसता के भाव से एकत्र हो, स्नान ध्यान करते हैं। यह पर्व सामाजिक एकता का संदेश भी प्रसारित करता है। इस पर्व में सभी एक समान होते हैं। माँ गंगा के पावन जल में अपने तन के साथ मन को भी पवित्र करने का प्रयास करते

* सहायक निदेशक, महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

हैं। और यह ऐसा पर्व है कि इस पावन भूमि पर प्रत्येक क्षण अनुपम भावों से आपका चित्त रोमांचित होता रहता है, पुलकित होता रहता है। इस पर्व के विभिन्न गतिविधियों को जिसने साक्षात् देखा या जो समाचार-पत्रों तथा मीडिया के माध्यम से अवगत हो रहे हैं, वे सभी इस पावन पर्व के अंग है। इस पर्व का महत्त्व प्राचीनकाल से है, जो शास्त्रों में वर्णित है। इनमें से ही हमारा अपौरुषेय वेदों में कुंभ का चित्रण एवं व्याख्या किस प्रकार से वर्णित है, इस पर चर्चा करेंगे।

कुंभ शब्द का अर्थ अमर सिंह प्रणीत 'नामलिङ्गानुशासन' के तृतीय कांड में कुंभ शब्द विशेषण है। जिसका अर्थ घड़ा से लिया जाता है।[1] 'अमरकोश ग्रंथ' में कुंभ शब्द का अर्थ गजमस्तक[2] तथा गुग्गुल वृक्ष[3] भी कहा गया है। 'शब्दकल्पद्रुम' में कुंभ शब्द का अर्थ कुं भूमिं उम्भति गन्धेन पूरयति। से लिया गया है। वहीं आङ्गल[4] भाषा के कोशों में इसे घड़े के रूप में विद्वज्जनों द्वारा स्वीकृति मिली हुई है। इस प्रकार इस बात की पुष्टि हो जाती है कि कुंभ शब्द का अर्थ घड़ा है, किंतु प्रश्न है कि प्रयाग क्षेत्र में लगने वाले मेले के नाम कुंभ क्यों पड़ा? इस सिलसिले में समुद्र-मंथन से जुड़ी हुई पौरणिक कथा प्रचलित है, जिसके बारे में सभी परिचित हैं।

कुंभ शब्द के अर्थ शास्त्रों में भी वर्णित है। जिनका विवरण इस प्रकार से है—1. कुं पृथ्वीं भावयन्ति संकेतयन्ति भविष्यत्कल्याणादिकाय महत्त्वाकाशे स्थिताः बृहस्पत्यादयो ग्रहाः संयुज्य हरिद्वार प्रयागादितत्पुण्यस्थानविशेषानुदृष्य यस्मिन् सः कुम्भः।[5] अर्थात् पृथ्वी को भविष्यत्कल्याण की सूचना देने के लिए हरिद्वार, प्रयाग आदि पुण्य स्थान विशेष के उद्‌देश्य से निर्मल महाकाय में बृहस्पत्यादि ग्रहराशि एकत्र हो, जिसमें उसे कुंभ कहते हैं। कपिलदेव द्विवेदी कहते हैं कि उत्तम महात्माओं के संगम तथा उनके हितोपदेशों द्वारा पृथ्वी अनुगृहीत होती हो, जिसमें उसे कुंभ कहते हैं।[6] कुंभ शब्द के विभिन्न अर्थ प्राप्त होते हैं। समय-समय पर जलापूर्ति द्वारा अनावृष्टि प्रभृति दुर्भिक्षों से निवृत्त करने वाले को कुंभ कहते हैं।[7] पापों के प्रक्षालन तथा पुण्यों के

परिवर्धन द्वारा पृथ्वी का भार हलका किया जाए, जिससे उसे कुंभ कहते हैं।[8] पृथ्वी को मंगल सम्मान आदि से पूर्ण करने वाले को कुंभ कहते हैं।[9] पृथ्वी को सुखवृद्धि तथा तेजोवृद्धि द्वारा दीप्त करने वाले को कुंभ कहते हैं।[10] पृथ्वी को विविध यागादि सद्नुष्ठानों द्वारा संभावित करने वाले को कुंभ कहते हैं।[11] कुत्सित दोषों को जगत्कल्याण की भावना से प्रेरित होकर दूर करने वाले को कुंभ कहते हैं।[12]

वेदों में कुंभ अर्थात् घड़े का स्वरूप कैसा होता है ? इसका क्या महत्त्व है ? क्यों प्रयाग क्षेत्र में लगने वाला यह पर्व इतना प्रभावशाली बन जाता है ? इससे संबंधित विवरण भी प्राप्त हैं।

कलशस्य मुखेविष्णुः कण्ठे रुद्रः समारितः।
मूले त्यस्य स्थितो ब्रह्म मध्ये मातृगणाः स्थिताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्व सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥

(अर्थात् कुंभ (कलश) के मुख में विष्णु, कंठ में रुद्र, मूल भाग में ब्रह्मा, मध्य भाग में मातृगण, कुक्षि में समस्त समुद्र, पहाड़ और पृथ्वी रहते हैं और अंगों के सहित ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद भी रहते हैं।) इस श्लोक से यह बात समुपस्थित होती है कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश समेत चारों वेदों का वास रहता है। इस कलश से अमृत की बूँदें प्रयाग क्षेत्र में पड़ीं तथा वहाँ तीनों ही नदियों का संगम होता है, इस कारण प्रयाग क्षेत्र इसमें माघ मास[13] में लगने वाला यह पर्व अत्यंत महिमाशाली है।

वेदों में कुंभ का वर्णन : विश्व साहित्य एवं संस्कृति के इस प्राचीन इतिहास में वेदों का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह हमारी भारतीय संस्कृति की दृढ़ आधारशिला है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की आधारशिला वेद ही है। यह संसार के प्राचीनतम एवं विशाल ग्रंथ है। भारतीय ऋषियों के दिव्य अनुभूति हमें वेद मंत्रों के

रूप में प्रदान हुई है। इन मंत्रों में विभिन्न देवी देवताओं की स्तुतियाँ, ज्ञान-विज्ञान, दर्शन, कर्मकांड, आयुर्वेद, वास्तुकला आदि विधाओं का समावेश है।

भारतीय विचारधारा पर वेदों का अत्यंत गहरा एवं व्यापक प्रभाव पड़ा है। सभी दर्शन वेद अनुप्राणित हैं। वेदों से उच्चकोटि की नैतिक शिक्षा प्राप्त होती है। इनमें श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों के दर्शन होते हैं।

वेद : वेद शब्द विद् धातु से निष्पन्न है, जिसका तात्पर्य ज्ञान है। अर्थात् ज्ञान का दूसरा नाम वेद है। अर्थात् ऐसा ज्ञान, जो ब्रह्मांड विषयक विचारों से ओत-प्रोत है। जो सदैव अस्तित्व में रहते हैं, जो सभी कालों में मनुष्य के लिए उपयोगी हो।

वेद चार है—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वेदों का आविर्भाव काल ईसा पूर्व 3000 से 1000 तक माना गया है तथा लोकमान्य तिलक ने वेदों को ईसा से 6000 वर्ष पूर्व की रचना माना है। अत: यह तथ्य निर्विवाद रूप से विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ के रूप में वेद को स्वीकार करता है।

वेद में मंत्रों का संकलन है। यहाँ कुछ मंत्र छंदोबद्ध है तथा कुछ गद्यात्मक हैं। यहाँ छंदोबद्ध मंत्रों को 'ऋक' कहते हैं तथा ऋचा शब्द से भी संबोधित करते हैं। जिन वेदों में ऋचाओं का संकलन है, उसे ऋग्वेद कहते हैं तथा जब ये ऋचाएँ गेय होती हैं, तब उन्हें साम अर्थात् सामवेद कहते हैं। गद्य प्रधान वेद को यजुर्वेद कहते हैं तथा जहाँ मंत्रों का संग्रह अथर्वा ऋषि के द्वारा किया गया हो, उसे अथर्ववेद के नाम से जानते हैं। अथर्ववेद में विभिन्न विषय वर्णित हैं।

कुंभ-पर्व से संबंधित विवरण वेदों में पर्याप्त रूप में मिलते हैं। यह कुंभ-पर्व अत्यंत प्राचीन है तथा वैदिक धर्म से ओत-प्रोत है। वेदों में कुंभ-पर्व का विवरण इस प्रकार से वर्णित है—

कुंभ-पर्व में जाने वाला मनुष्य स्वयं अपने में फलरूप से प्राप्त होने वाले दान होमादि सत्कर्मों से काष्ठ काटने वाले कुठारादि की तरह अपने पापों का प्रक्षालन करता है। जिस प्रकार गंगा तथा नहर अपने तटों को नष्ट

करती हुई प्रवाहित होती है, उसी प्रकार कुंभ-पर्व अपने पूर्वसंचित कर्मों से प्राप्त शारीरिक पापों को नष्ट करता है और नूतन बनावटी पर्वत की तरह बादल को नष्ट-भ्रष्ट कर संसार में सुवृष्टि प्रदान करता है।[14]

जघान वृजं स्वधितिर्वनेव सरोज पुरो अरदन्न सिन्धून
विभेद गिरिं नवभिन्न कुम्भभागा इन्द्रो अकृणुता स्वयुग्मिः॥

ऋग्वेद के 12वें मंडल में प्राप्त है कि हे कुंभ-पर्व तुम यज्ञीय वेदी में यज्ञीय आयुधों से घृत द्वारा तृप्त होने के कारण कष्टानुभव मत करो? कुम्भी वेश्वां मा व्यथिष्ठा यज्ञायुधैराज्येनातिषिक्ता॥[15] ऋग्वेद के प्रथम मंडल में

युवं नरास्तुनते पज्जियायकक्षीवते अरदतं पुरन्धिमं।
कारोतराच्छकादष्वस्य वृष्णः षतं कुम्भां असिञ्चतं सुरायाः॥[16]

पुनः यजुर्वेद के शुक्लयजुर्वेद में प्राप्त है अर्थात् कुंभ-पर्व सत्कर्मों के द्वारा मनुष्य को इहलोक में शारीरिक सुख देने वाला और जन्मांतरों में उत्कृष्ट सुखों को देने वाला है।

कुम्भो वनिष्टुर्जनिता षचीभिर्यस्मिन्नग्रेयोन्यांगभोऽन्तः।
प्लाषित्र्यक्तः षतधारऽउत्सो दुहे न कुम्भी स्वधांपितृभ्यः॥[17]

सामवेद में प्राप्त है कि—अविशन्कलशर्ट सुतो विश्वाऽमर्षन्न मिश्रियः। इन्दुरिन्द्राय धीयते॥[18] तथा अथर्ववेद में मिलता है, अर्थात् हे संतगण! पूर्ण कुंभ समय पर (12 वर्ष के बाद) आया करता है, जिसे हम अनेक बार प्रयागाादि तीर्थों में देखा करते हैं। कुंभ उस समय को कहते हैं, जो महान् आकाश में ग्रह राशि आदि के योग से होता है। पूर्णः कुम्भोऽधिकाल अहितस्तं वै प्ष्यामो बहुधा नु सन्तः। सऽदूमा विश्वा भुवनानि प्रत्यंग कालं तमाहुः परमे व्योमन्॥[19] अथर्ववेद में और भी कहा है—चतुरः कुम्भाच्चतुर्धा ददामि॥[20] ब्रह्मा कहते हैं हे मनुष्यों! मैं तुम्हें ऐहिक तथा आयुष्मिक सुखों को देने वाले चार कुंभ-पर्वों का निर्माण कर चार स्थानों (हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक) में प्रदान करता हूँ। कुम्भीका दूषीकाः पीयकान्॥[21]

कुंभ का आध्यात्मिक स्वरूप कुंभ-पर्व का वास्तविक उद्‌देश्य यह है कि मनुष्य अमृत-तत्त्व को प्राप्त कर मोक्ष को प्राप्त करे। मानव शरीर एक

कुंभ की भाँति है। इसमें चार स्थानों पर अमृत-तत्त्व है तथा योग साधना के द्वारा इन स्थानों को प्रबुद्ध किया जाता है तथा क्षरित होने वाले अमृत का पान किया जाता है। इससे मानव मोक्ष को प्राप्त करता है। मानव शरीर में अमृत-तत्त्व में युक्त चार स्थान हैं[22]—1. ब्रह्मरंध या सहस्रार चक्र 2. आज्ञा चक्र 3. अनाहत चक्र 4. मणिपूर चक्र।

कुंभ का वास्तविक स्वरूप आध्यात्मिक ज्ञानयज्ञ है और कर्मफल की वास्तविक सिद्धि का परिचायक भी है। स्कंद पुराण में कर्मों के आधार पर ही देव दान व मनुष्य सभी को सुख-दुःख मिलते हैं।

देवानां दानवानां च मनुष्याणां विशेषतः।
कर्मव सुखदुःखानां हेतु भतं न संशयः।।[23]

पद्मपुराण कहता है कि शुभ और अशुभ कर्मों के कारण ही सुख-दुःख प्राप्त होते हैं।

सर्वत्र कारणं कर्म शुभाशुभं न संशयः।
पूण्येन कर्मणा पुनः नरः सौख्यं प्रभुञ्जति।।
दुष्कृतं मुञ्जते चाज पापयुक्तेन कर्मणा।।[24]

कुंभ महापर्व के स्नान से पाप-ताप, दुःख निवृत्ति तथा ईश्वरीय शक्ति को प्राप्त करने की योग्यता आती है। इसी प्रकार तीर्थराज प्रयाग का भी अत्यंत महत्त्व है तथा इसी स्थान पर कल्पवास करने का अत्यंत फल है। माघ मास से यहाँ गंगा, जमुना तथा गुप्त सरस्वती में स्नान करने से हजारों फल प्राप्त होते हैं। यहाँ गंगा भक्तिस्वरूपा, यमुना कर्मस्वरूपा तथा सरस्वती ज्ञानस्वरूपा है। इस प्रकार कर्म, भक्ति और ज्ञान का संगम यहाँ प्राप्त है और इनके अवगाहन से सभी कामनाएँ पूर्ण होंगी।

कुंभ-पर्व अद्वितीय एवं दिव्य पर्व है। यह एक ऐसा पर्व है, जो भारत के अन्यत्र कहीं और देखने को नहीं मिलता है। यह कुंभ-पर्व सहस्राब्दियों से आयोजित होने वाला एक साधारण मेला नहीं, बल्कि यह राष्ट्र और उसकी सीमाओं से परे भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाले श्रद्धालुओं का वैश्विक महापर्व भी है।

यह कुंभ-पर्व धार्मिक, दार्शनिक, सांप्रदायिक विविधताओं के बावजूद त्याग, तपस्या और योग साधना की कुंभ चेतना का साझा तत्त्व सदियों से भारत को एक वैचारिक और आध्यात्मिक राष्ट्र के रूप में संगठित किया।

कुंभ संपूर्ण विश्व के लिए आस्था, त्याग, समर्पण, प्रतिबद्धता, सहकार्य की भावना और मानवीय प्रबंधन को सीखने का अद्भुत संदेश लेकर आता है और हम इस पर्व की महिमा के आगे नतमस्तक हैं। हमारे साथ-साथ विश्व भी भारत की प्राचीन संस्कृति के गौरवगान की तरह इस दिव्य पर्व से चमत्कृत है।

संदर्भ–

1. पूर्वोऽन्यलिङ्गः प्रागाह पुम्बहुत्येऽपि पूर्वजान्। कुम्भौ पटेभमूर्धांशी डिम्भौ तु शिशुवालिशी॥ नामलिङ्गानुशासन. 3.3.142
2. अमरकोश, नामलिङ्गानुशासन, 2.8.37
3. अमरकोश, नामलिङ्गानुशासन, 2.4.34
4. Pitcher, Water-pot, Ewer, Small Water-jar, Monier Wiliams, Sanskrit English Dictionary Clarenden Press, 1872
5. गौड, वेदाचार्य पं. श्रीरामशर्मा, कुंभ-पर्व माहात्म्य, 2004
6. कुः पृथिवी उभ्यतेऽनुगृह्यते उत्तमोत्तमममहात्मसङ्गमैः तदीयहितोपदेशैः यस्मिन् सः कुम्भः। द्विवेदी, कपिलदेव, कुंभपर्व महात्म्य, 1986
7. कं जलं उम्भति पूरयति अनर्षणादिर्भिक्षेभ्यो दुयतीतिकुम्भः। वही
8. कुः पृथ्वी उभ्यते लघुक्रियते पापप्रक्षालनैः पुण्य परिवर्धनैश्च येन सः कुंभः। वही
9. कुं वहीं पृथ्वीं उम्भति पूरयत्ति मंगलसम्मानादिभिरिति कुंभः। वही
10. कुं पृथ्वी भापयति दीपयति तेजोवर्धनेनेति वा कुंभः। वही
11. कुं पृथ्वी भापयति पोषयति विविधयागादि भिरिति वा कुंभः। वही
12. कु कुत्सितं उम्भति दूरयति जगद्धितायेति वा कुंभः।
13. सूर्यग्रहे कुरुक्षेत्रे कार्तिकयाञ्च विपुष्करे। माघमासे प्रयासे च यः स्त्रायात्सोऽतिपुण्यवान्॥ महापर्व और उसका माहात्म्य, श्री वैद्यनाथ अग्निहोत्री, हिंदू इलेक्ट्रिक प्रेस, हरिद्वार
14. ऋग्वेद 10/89/7
15. ऋग्वेद 12/3/23
18. ऋग्वेद 1/8/6/2
17. शुक्लयजुर्वेद 19/87
18. सामवेद पृ. 6/3
19. अथर्ववेद 19/53/3

20. अथर्ववेद 4/34/7
21. अथर्ववेद 16/6/8
22. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, नाथ संप्रदाय, लोकभारती प्रकाशन 2023 पृ. 134
23. स्कंद के 15/25
24. पद्मपुराण अभि 94/2-3

□

महाकुंभ के आयोजन में सरकार और मीडिया की भूमिका

—डॉ. प्रवीण कुमार चौबे*

कुंभ मेला बहुसंख्यक हिंदुओं की आस्था का प्रतीक है। ऐसी मान्यता है कि कुंभ में संगम तट पर स्नान करने से मोक्ष मिलता है। महाकुंभ का आयोजन 13 जनवरी से 26 फरवरी के बीच उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में चल रहा है। इससे पहले साल 2019 में अर्धकुंभ और साल 2013 में पूर्णकुंभ का आयोजन प्रयागराज में किया गया था। इस साल 2025 महाकुंभ मेले में करीब 40 करोड़ लोगों के आने का अनुमान लगाया गया है। इस विशाल मेले को देखने के लिए दुनिया के कई हिस्सों से लोग आ रहे हैं।

इस महाकुंभ में लोगों के भाग लेने की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने तमाम सुविधाओं और सेवाओं को डिजिटल टेक्नोलॉजी से जोड़ा है। इस महाकुंभ को डिजिटल महाकुंभ भी कहा जा रहा है। उ.प्र. सरकार ने महाकुंभ मेला ऐप, ए.आई. चैटबॉट, क्यू.आर. कोड से जानकारी और डिजिटल खोया–पाया केंद्र जैसी डिजिटल सेवाओं की शुरुआत की है। महाकुंभ मेला ऐप 11 से अधिक भाषाओं में उपलब्ध है। यह ऐप यात्रा की योजना, टेंट सिटी का विवरण, गूगल नेविगेशन, कार्यक्रमों के रियल टाइम अपडेट, पर्यटक गाइड का विवरण, व्यापारिक और आपातकालीन सेवाएँ

* सहायक आचार्य (समाजशास्त्र विभाग), आर.आर.पी.जी. कॉलेज, महराजगंज

मुहैया करा रहे हैं। इसके अलावा ये ऐप लाइव अपडेट्स और स्थानीय सेवाओं से जोड़ने में सहायक हैं।

इसके अलावा महाकुंभ में 10 डिजिटल खोया-पाया केंद्र बनाए गए हैं। ये केंद्र महाकुंभ में परिवार से बिछड़ने वाले लोगों को खोजने में सहायता कर रहे हैं। इन केंद्रों के जरिए महाकुंभ में परिवार से बिछड़ने वालों से जुड़ी जानकारी वहाँ पर मौजूद सभी एल.सी.डी. पर दिखाई जा रही है। इसके अलावा सभी सोशल मीडिया पेज पर खोए हुए लोगों की फोटो और वीडियो संदेश पोस्ट किए जा रहे हैं। वहीं श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए चार प्रकार के क्यू.आर. कोड लगाए गए हैं, जिसमें हरे रंग का क्यू.आर. कोड प्रशासनिक सेवाओं के लिए है। इस क्यू.आर. कोड को स्कैन करके 28 पेजों का पी.डी.एफ. खुलेगा, जिसमें मंडलायुक्त से लेकर प्रशासनिक अफसरों के नंबर एवं पुलिस स्टेशन के नंबर उपलब्ध हैं।

मुख्य शब्दावलियाँ

डिजिटलीकरण : डिजिटलीकरण का अर्थ है, सूचना को कंप्यूटर द्वारा पढ़ने लायक डिजिटल फॉर्मेट में बदलना। डिजिटलीकरण से किसी भी वस्तु, छवि, ध्वनि, दस्तावेज या संकेत को अंकों की श्रृंखला में बदला जा सकता है।

ऐप : ऐप शब्द एप्लीकेशन का संक्षिप्त रूप है। ऐप उन कंप्यूटर प्रोग्रामों को कहते हैं, जो स्मार्टफोन, टैबलेट तथा अन्य मोबाइल युक्तियों पर चलाने के लिए बनाया जाता है।

क्यूआर कोड : क्यू.आर. कोड का अर्थ त्वरित प्रतिक्रिया कोड है। यह एक द्वि-आयामी बारकोड होता है, जो सफेद पृष्ठभूमि पर काले वर्गों के वर्गाकार ग्रिड में डेटा संगृहीत करता है। क्यू.आर. कोड को स्मार्टफोन कैमरे या क्यू.आर. कोड रीडर ऐप से स्कैन किया जा सकता है।

महाकुंभ के डिजिटलीकरण के तहत मेला क्षेत्र में मैपिंग के लिए गूगल

और यूपी प्रशासन के बीच समझौता हुआ है, जिससे गूगल मैप के जरिए कुंभ में आने वाले लोग मंदिर, संगम तट और अन्य जगहों पर आसानी से जा सकेंगे। कुंभ क्षेत्र में 328 ए.आई.-सक्षम कैमरे लगाए गए हैं, जिनकी मदद से पूरे कुंभ क्षेत्र की निगरानी की जा रही है। कुंभ में आने वाले लोगों के ठहरने के लिए हमेशा की तरह एक टेंट सिटी भी बनाई गई है। कुंभ की निगरानी के लिए एआई तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है। बिना अनुमति ड्रोन उड़ाने वालों पर काररवाई के लिए पुलिस एंटी-ड्रोन तकनीक का उपयोग कर रही है, जिससे ऐसे ड्रोन्स को गिराया जा सकेगा।

प्रयागराज में रेल, बस और फ्लाइट के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। महाकुंभ के लिए भारतीय रेलवे ने मेगा रेलवे प्रोजेक्ट के तहत 4500 करोड़ रुपए खर्च करने का ऐलान किया है। महाकुंभ के लिए रेलवे ने 3000 स्पेशल ट्रेन चलाने की घोषणा की है और मौनी अमावस्या के दिन अलग से 300 ट्रेनें चलाई जाएंगी। प्रयागराज के रेलवे स्टेशन पर क्यू.आर. कोड की जैकेट पहने हुए रेलवे के कर्मचारी तैनात किए गए हैं। रेलवे कर्मचारियों की जैकेट में लगे क्यू.आर. कोड को अपने मोबाइल से स्कैन करके लोग यूटीएस ऐप डाउनलोड करके डिजिटल टिकट बुक कर सकते हैं।

यू.पी. रोडवेज भी लगभग 7000 बसों की सुविधा उपलब्ध करा रहा है। महाकुंभ मेला सिटी से सबसे पास प्रयागराज बमरौली एयरपोर्ट है, जो कि महाकुंभ मेला सिटी से 22 किलोमीटर की दूरी पर है। एयरलाइंस एलायंस एयर दिल्ली के अलावा भुवनेश्वर, गुवाहाटी, चंडीगढ़, जयपुर और देहरादून से प्रयागराज के लिए फ्लाइट की सुविधा उपलब्ध है।

श्रद्धालुओं और साधु-संतों के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए पूरे मेला क्षेत्र में कई अस्पताल तैयार किए गए हैं। इन अस्पतालों में डॉक्टरों की तैनाती की जा रही है। प्रयागराज के सभी रेलवे स्टेशनों पर 24 घंटे एंबुलेंस की सुविधा की विशेष व्यवस्था की गई है। सेंट्रल हॉस्पिटल ने आर्मी और मेदांता हॉस्पिटल के साथ मिलकर श्रद्धालुओं की जरूरत के हिसाब से कुंभ में स्वास्थ्य सेवाओं का खाका तैयार किया है। सेंट्रल हॉस्पिटल में आपातस्थितियों के लिए हर तरह

की आवश्यक चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। इसके लिए सभी जरूरी मशीनें स्थापित की जा चुकी हैं।

महाकुंभ 2025 को पूरी दुनिया द्वारा देखा, समझा और सुना जा रहा है। अद्‌भुत आयोजन के जीवंत दृश्य पूरी दुनिया सर्च कर रही है। ऐसे में यू.पी. सरकार ने इसके लिए खास इंतजाम किए हैं। आधुनिकतम मीडिया सेंटर महाकुंभ में कार्यरत है। इसमें करोड़ों रुपए की लागत से उच्च गुणवत्ता वाले 'हाईली प्रोफेशनल' कैमरे लगाए गए हैं। इन कैमरों के जरिए महाकुंभ के हर छोटे-बड़े पल को न केवल लाइव दिखाया जा रहा है, बल्कि हर दृश्य को ऐसी तकनीक से रिकॉर्ड किया जा रहा है कि दर्शक रीयल टाइम अनुभव कर पा रहे हैं। इस तकनीकी व्यवस्था के जरिए महाकुंभ का जीवंत अनुभव सीधे दुनिया भर के श्रद्धालुओं तक एक साथ पहुँच रहा है। इसके लिए पचास लाख तक के लेंस वाले कैमरे के जरिए महाकुंभ से संबंधित समाचार डिजिटल मीडिया पर प्रसारित किए जा रहे हैं। अब तक इंटरनेशनल मीडिया के 30 पत्रकारों ने भी महाकुंभ की विशेष कवरेज की है।

मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथजी ने देश-विदेश के श्रद्धालुओं के लिए मीडिया सेंटर पर हर जरूरी इंतजाम करने के निर्देश दिए हैं, ताकि हर व्यक्ति को पल-पल अपडेट मिलती रहे। यहाँ अमरीका, रूस, जर्मनी, जापान और इजरायल में महाकुंभ से जुड़े समाचारों की बड़ी डिमांड है। यहाँ कॉन्फ्रेंस रूम के साथ चाय, नाश्ता और भोजन सब उपलब्ध हैं। इसके अलावा यहाँ सुरक्षा के सभी पुख्ता इंतजाम भी किए गए हैं।

महाकुंभ न सिर्फ भारत, बल्कि दुनिया का सबसे बड़ा सांस्कृतिक आयोजन है। मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथजी ने इस बार के महाकुंभ को पहले के सभी कुंभ से अधिक नव्य और भव्य रूप दिया है। इसी वजह से महाकुंभ पूरी दुनिया के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। यहाँ होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम और पल-पल की अपडेट दुनिया देखना चाहती है, इसलिए इंटरनेशनल मीडिया को भी बड़ी प्रमुखता दी गई है। यहाँ महाकुंभ नगर में बने मीडिया सेंटर में महाकुंभ की रिपोर्टिंग का बहुत क्रेज है। इसी वजह से

अभी हाल ही में स्वीडन के 'स्वीडिश रेडियो' पर चले महाकुंभ के कार्यक्रम की धूम रही। वहाँ की पत्रकार ने अपने पॉडकॉस्ट का प्रोग्राम चलाया, जिसे लोगों ने काफी सराहा। दुनिया के सबसे भव्य कार्यक्रम की कवरेज के लिए साउथ एशिया की नाइला जेसिका ने महाकुंभ को दिव्य और भव्य आयोजन बताया। मीडिया सेंटर के सेल्फी पॉइंट में बहुत ही शानदार तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। इस सेल्फी पॉइंट के बीचोबीच कैमरा लगा है। जो सेल्फी पॉइंट के सामने आते ही उनकी फोटो क्लिक कर लेता है। इसके बाद इस सेल्फी पॉइंट के जरिए ही क्यू.आर. कोड सामने आ जाता है। इस क्यू.आर. कोड को एक्सेस करते ही टाइम स्लॉट दिखता है, जहाँ देश ही नहीं, विदेश का मीडिया भी अपने स्लॉट बुक कर सकता है। पॉडकॉस्ट में भी इसका इस्तेमाल किया जा रहा है। यहाँ चलने वाला हर कार्यक्रम सीधे लाइव हो जाता है। इसके साथ ही इसका पूरा विवरण सर्वर में भी आ जाता है। इसके बाद पूरे कार्यक्रम की डिटेल विभाग के साथ–साथ सभी मीडिया संस्थानों के माध्यम से जनता तक पहुँचाई जाती है।

मीडिया सेंटर में एक विशेष पॉडकास्ट रूम भी तैयार किया गया है। जहाँ प्रतिदिन महाकुंभ से जुड़ी महत्त्वपूर्ण चर्चाएँ की जा रही हैं। इस रूम में महाकुंभ के इतिहास, इसके सांस्कृतिक और धार्मिक महत्त्व, आयोजन की जटिलताओं और पर्यावरणीय प्रभावों पर गहराई से चर्चा की जाती है। यह पॉडकास्ट रूम मीडिया कर्मियों और विशेषज्ञों का एक प्रमुख मंच बन चुका है, जहाँ से महाकुंभ को लेकर हर पहलू को उजागर किया जाता है। लाइव टेलीकास्ट के वर्क स्टेशन पर 65 से ज्यादा कंप्यूटर लगाए जा चुके हैं। मीडिया सेंटर में एक मॉडर्न कॉन्फ्रेंस रूम भी है, जहाँ पत्रकारों के लिए विशेष व्यवस्था की गई है। पी.सी.आर. रूम में दो बड़े और दो छोटे स्क्रीन लाइव फीडिंग के माध्यम से महाकुंभ की हर घटना को दिखा रहे हैं, जिससे मीडियाकर्मी आयोजन के हर पहलू से परिचित हो सकें। महाकुंभ में श्रद्धालुओं और दुनिया भर के दर्शकों को लगातार जानकारी देने के लिए यूट्यूब, व्हाट्सऐप, फेसबुक, इंस्टाग्राम और एक्स जैसे प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों का उपयोग किया जा रहा है। इन माध्यमों के जरिए मीडिया सेंटर से जुड़े हर छोटे से छोटे अपडेट्स

और समाचार प्रसारित किए जा रहे हैं, जिससे आम जनता भी महाकुंभ के हर अपडेट से अवगत हो सके। इस मीडिया सेंटर में ब्रॉडकास्ट कैमरे और अपलिंक की विशेष तकनीकी व्यवस्था की गई है, जो लाइव प्रसारण के दौरान किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या से बचाव करती है।

मीडिया सेंटर में वी.आई.पी. लाउंज, आरामदायक डबल बेड वाले कमरे और 56 लोगों के एक साथ बैठने की क्षमता वाला विशाल कैफेटेरिया मौजूद हैं। इसके अलावा प्रेस ब्रीफिंग के लिए 400 लोगों के एक साथ बैठने की व्यवस्था की गई है। सुरक्षा के भी विशेष इंतजाम किए गए हैं, जिससे मीडियाकर्मियों और अन्य अधिकारियों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। देश दुनिया तक सटीक जानकारी पहुँचाने के लिए ही उ.प्र. के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी ने इस मॉडर्न मीडिया सेंटर का उद्घाटन किया है।

महाकुंभ 2025 की तैयारियाँ 2022 में ही मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथजी की अध्यक्षता में एक महत्त्वपूर्ण बैठक के साथ शुरू हुई थी, तब से मुख्यमंत्रीजी ने प्रयागराज के कई दौरे किए। आयोजन से पहले माननीय प्रधानमंत्रीजी ने स्वयं तैयारियों का जायजा लिया और कई प्रमुख परियोजनाओं का उद्घाटन किया। दुनिया के सबसे बड़े आध्यात्मिक समागम की मेजबानी करने के लिए एक अस्थायी शहर, 'महाकुंभ नगर' बसाने के लिए यह जरूरी था। इस नए शहर को बनाने के लिए 50,000 से ज्यादा मजदूरों ने दिन-रात खुद को समर्पित कर दिया। जहाँ स्थायी पुल समय पर नहीं बन पाए, वहाँ अस्थायी चार लेन वाले स्टील पुल बनाए गए। प्रयागराज की ओर जाने वाली सड़कों को चौड़ा किया गया और तीर्थयात्रियों की आमद को ध्यान में रखते हुए उनका सौंदर्यीकरण किया गया। डबल-इंजन वाली सरकार ने बेहतर तालमेल के साथ काम किया और यह सुनिश्चित किया कि रेलवे पुल और अन्य बुनियादी ढाँचे इस आयोजन की माँगों को पूरा कर सकें।

संगम पर मानवता का सबसे बड़ा जमावड़ा जहाँ गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती का संगम है, वहाँ पहुँचना एक पत्रकार का भी सपना होता है। संस्कृति से लेकर बुनियादी ढाँचे तक, धार्मिक रंग, पर्यावरण के मुद्दों और

राजनीतिक गतिविधियों तक, कुंभ मेला अपने आप में एक उल्लेखनीय अनुभव होने के अलावा पत्रकारिता की कहानियों का एक तैयार भंडार है। सरकार ने इस आयोजन को 'दिव्य भव्य डिजिटल महाकुंभ 2025' के रूप में स्थान दिया है, जिसका विषय है, 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत'। यू.पी. की संगम नगरी प्रयागराज में महाकुंभ मेले की दिव्य और भव्य शुरुआत पौष पूर्णिमा के साथ 26 फरवरी तक के लिए हो गई है। दुनिया भर के कई अन्य संगठन भी महाकुंभ के आयोजन और इसके लिए की गई तैयारियों की भव्यता को देख रहे हैं। महाकुंभ के इस आयोजन को लेकर देश और विदेश की मीडिया में लगातार खबरें चल रही हैं। कई न्यूज चैनलों ने इस आयोजन के विशाल स्तर को लेकर आश्चर्य जाहिर किया है तो कहीं इसे लेकर उ.प्र. और केंद्र सरकार की तैयारियों की समीक्षा की गई है। सी.एन.एन. ने महाकुंभ को दुनिया के सबसे महान् धार्मिक आयोजनों में से एक करार दिया है। मीडिया समूह ने कुंभ में पहुँचने वाले लोगों की अनुमानित संख्या को चौंकाने वाला करार देते हुए कहा कि यहाँ प्रशासन इस आयोजन को सिर्फ धार्मिक कार्यक्रम न कहकर एक सांस्कृति आयोजन करार दे रहा है, जहाँ बड़े-बड़े सेलिब्रिटीज से लेकर विदेशी पर्यटकों का जमावड़ा लगा रहता है। ब्रिटिश मीडिया समूह बी.बी.सी. ने इस कार्यक्रम का कवरेज करते हुए इस आयोजन को मानवता का सबसे बड़ा जुटाव करार दिया। बी.बी.सी. के मुताबिक, इस आयोजन को अंतरिक्ष से भी देखा जा सकता है। न्यूज चैनल ने यहाँ अलग-अलग देशों से आए लोगों से भी बात की। अर्जेंटीना से आए एक 90 सदस्यीय समूह में शामिल सबैस्चियन डिएगो ने बताया कि वह इस भक्ति के अनुभव को सामने से देखने के लिए आए हैं। उन्होंने कहा कि मुझे गंगा ने बुलाया, इसलिए मैं यहाँ आ गया। ब्रिटिश अखबार 'द गार्डियन' ने कहा कि इस साल महाकुंभ का आयोजन तादाद और भव्यता में पिछले सभी आयोजनों से ज्यादा बेहतर होने का अनुमान है। यह कुंभ मेले के धार्मिक ही नहीं, बल्कि राजनीतिक महत्त्व को भी दरशाता है। इस आयोजन को हमेशा से हिंदू एकता और ताकत का प्रतीक माना जाता रहा है।

□

महाकुंभ और सुशासन

—सुबोध कुमार मिश्र*

महाकुंभ 2025 अपनी सुनियोजित सुव्यवस्था, सुशासन एवं रामराज्य जैसी व्यवस्था के कारण जाना जाएगा। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने सुशासन एवं सुव्यवस्था की दृष्टि से वैश्विक–प्रतिमान बनाने के उद्देश्य से महाकुंभ 2025 की योजना एवं उसके कार्यान्वयन को कार्यरूप प्रदान किया है। सुनियोजित–सुव्यवस्था का संक्षिप्त विवरण इस बात की पुष्टि करता है।

सुरक्षित-महाकुंभ

महाकुंभ को देखते हुए योगी सरकार ने सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए हैं। महाकुंभ–पर्व के प्रति आस्था इतनी व्यापक है कि संपूर्ण भारत से ही नहीं अपितु विश्व के कोने–कोने से श्रद्धालु संगमनगरी प्रयागराज पहुँच रहे हैं। ऐसे में इस अपार जन–सैलाब को सुरक्षा प्रदान करने के निमित्त संपूर्ण मेला क्षेत्र में 37,000 से अधिक पुलिसकर्मी एवं 14,000 से अधिक होमगार्ड के जवानों को तैनात किया गया है। इसके अतिरिक्त निगरानी के लिए 2,750 AI बेस्ड सी.सी.टी.वी. कैमरे मेला परिक्षेत्र के चप्पे–चप्पे पर नजर बनाए हुए हैं। 80 वी.एम.डी. स्क्रीनों के जरिए मेला परिक्षेत्र के हर हिस्से की सुरक्षा निगरानी की व्यवस्था है। मेला क्षेत्र में 3 जल–पुलिस स्टेशन भी अस्थायी तौर पर स्थापित हैं तथा 18 जल–पुलिस कंट्रोल रूम भी स्थापित हैं। किसी अनहोनी

* असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, महाराणा प्रताप, पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़ गोरखपुर

का सामना मेला परिक्षेत्र न करना पड़े इस हेतु 50 फायर स्टेशन सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। आग बुझाने में इटली की विशेष तकनीकी की भी मदद ली जा रही है। 20 फायर पोस्ट स्थापित हैं तथा 50 से अधिक वाच टॉवर स्थापित हैं, जिनसे सुरक्षा के दृष्टिकोण से निगरानी की जा रही है। 10,000 से अधिक अग्निशमन यंत्रों को मेला परिसर में सर्वत्र लगाया गया है। 7000 से अधिक फायर हाइड्रेंट और 3 फायर रोबोट भी महाकुंभ की सुरक्षा के निमित्त सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। 50,000 से अधिक सुरक्षा बलों की तैनाती की गई है। इसके साथ ही NDRF तथा SDRF की अनेक टुकड़ियाँ भी सुरक्षा के मद्देनजर तैनात की गई हैं।

कुछ अन्य प्रमुख सुविधाएँ

- 4,000 हेक्टेयर में फैला विशाल संगम-मेला क्षेत्र।
- संपूर्ण संगम क्षेत्र 25 सेक्टरों में विभाजित।
- 1,850 हेक्टेयर में पार्किंग स्थल, 7 लाख से अधिक वाहन क्षमता।
- 1,60,000 से अधिक सुसज्जित टेंट।
- 67,000 से अधिक एल.ई.डी. स्ट्रीट लाइटें।
- 2 नए विद्युत सब-स्टेशनों की स्थापना।
- 66 नए विद्युत ट्रांसफॉर्मर द्वारा मेला परिक्षेत्र में विद्युत् आपूर्ति।
- 2,000 सोलर हाईब्रिड स्ट्रीट लाइट।
- 1,249 किलोमीटर लंबी पेयजल पाइपलाइन बिछाई गई।
- 200 से अधिक वाटर ATM की स्थापना।
- 85 नलकूपों की स्थापना।
- 31 पांटून ब्रिज (400 किलोमीटर) की स्थापना।
- 9 पक्के घाटों की स्थापना।
- 12 किलोमीटर में अस्थायी घाट निर्माण।

- 14 नए फ्लाईओवर एवं अंडरपास।
- 11 नए कॉरीडोरों का विकास।

उक्त सभी सुविधाएँ राज्य सरकार द्वारा महाकुंभ–2025 के अवसर पर श्रद्धालुओं के लिए उपलब्ध कराई गई है।

कुछ अन्य प्रमुख आकर्षण

- श्रद्धालुओं–पर्यटकों की सहायता हेतु पर्यटन विभाग द्वारा एक हजार से ज्यादा ट्रैवेल गाइडों की सुविधा।
- मार्गदर्शन के लिए कुंभ–सहायक AI चैटबॉट।
- मानसिक शांति के लिए बर्ड साउंड थेरेपी।
- देश भर के हस्तशिल्पियों एवं कारीगरों का संगम।
- संगम में श्रद्धालुओं को बोट राइड की सुविधा।
- वेद–पुराण की कथाओं का बखान करते चौराहे।
- अनेक सांस्कृतिक मंचों पर गायन–वादन–नृत्य की प्रस्तुतियाँ।
- प्रत्येक दिशा में वाहन पार्किंग की उत्तम व्यवस्था।
- प्रत्येक पॉइंट पर ट्रैफिक पुलिस की तैनाती।
- हाइवे के थानों पर भी चिकित्सा सुविधा।

महाकुंभ में यात्री-सुविधाओं के उन्नयन हेतु विभिन्न परियोजनाओं का लोकार्पण

- ₹ 1,610 करोड़ से 9 रेलवे स्टेशनों का उन्नयन।
- ₹ 1,376 करोड़ से 61 सड़कों का चौड़ीकरण।
- ₹ 1,170 करोड़ से 10 आर.ओ. की फ्लाईओवर का निर्माण।
- ₹ 100 करोड़ से 4 नालों के दिशा–परिवर्तन का कार्य।
- ₹ 304 करोड़ से 7 स्थायी घाट एवं 8 नदी–तट सड़कों का निर्माण।
- ₹ 235 करोड़ से 13 सीवरेज परियोजनाओं का उन्नयन।
- ₹ 203 करोड़ से 4 ट्रांसफॉर्मर एवं 2 सब–स्टेशनों की स्थापना।
- ₹ 237.38 करोड़ से सुरक्षा, स्वच्छता एवं सेवादूतों की व्यवस्था।

QR कोड के माध्यम से श्रद्धालुओं की समस्याओं का समाधान

महाकुंभ में विश्वभर से करोड़ों श्रद्धालु पवित्र स्नानों के लिए प्रयागराज के संगमस्थल पर एकत्र हुए हैं। इन श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार से असुविधा का सामना न करना पड़े, इसके लिए राज्य सरकार ने तकनीकी के इस युग में त्वरित समाधान हेतु संगम क्षेत्र में सर्वत्र चार रंग के QR कोडों को चस्पा किया है, जिन्हें अपने मोमाबल से स्कैन करके श्रद्धालुगण समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं। महाकुंभ में चार रंगों (नारंगी, लाल, नीला और हरा) QR कोडों का समस्या समाधानार्थ प्रयोग हो रहा है। आधुनिकता और आस्था का यह संगम महाकुंभ की खास पहचान बना हुआ है।

लाल रंग का QR कोड

आपातकालीन सेवाओं के लिए। इसे स्कैन करते ही 657 अस्पतालों की सूची, उपलब्ध बेडों की संख्या व त्वरित काररवाई हेतु जिम्मेदार व्यक्ति का नाम और मोबाइल नंबर जैसी महत्त्वपूर्ण जानकारी तुरंत मिलेगी।

हरे रंग का QR कोड

प्रशासन से संबंधित। इसे स्कैन करने पर मंडलायुक्त, जिला प्रशासन के अधिकारी और थानों के फोन नंबर सहित अपराध एवं सुरक्षा से संबंधित 28 पन्नों की जानकारी मिलेगी।

नीले रंग का QR कोड

भोजन एवं आवास सुविधा हेतु। इस रंग के QR कोड को स्कैन करने पर ठहरने हेतु होटल, लॉज, धर्मशालाओं और भोजन हेतु भोजनालयों की तुरंत जानकारी मिलेगी। 20 से अधिक होटल जो संगम परिक्षेत्र में स्थित हैं, अपनी पूरी सुविधाओं और जानकारियों सहित इस QR कोड में दर्ज है।

नारंगी रंग का QR कोड

राज्य सरकार की उपलब्धियों एवं कार्यों की जानकारी। इस QR कोड

को स्कैन करने पर श्रद्धालुओं को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सुशासन हेतु विभिन्न क्षेत्रों में किए गए कार्यों का विवरण प्राप्त होगा। साथ ही सरकार की खास उपलब्धियों की जानकारी भी इसके माध्यम से प्राप्त हो सकेगी।

रेल यातायात

महाकुंभ में पहुँचने के लिए श्रद्धालुओं को आवागमन संबंधी कोई दिक्कत न हो, इसके लिए राज्य सरकार ने अनेक सुविधाओं और योजनाओं को देश भर में लागू किया है। 13,134 से अधिक कुंभ स्पेशल रेलगाड़ियाँ महाकुंभ के दौरान चलाई जाएँगी। इसके अतिरिक्त 10,100 नियमित रेलगाड़ियाँ पहले से ही नियमित रूप से प्रयाग परिक्षेत्र के लिए चल रही हैं। अयोध्या, चित्रकूट एवं वाराणसी के लिए रिंग रेल सेवा चलाई जा रही है। देश भर के 50 से अधिक प्रमुख शहरों से 700 से अधिक विशेष आरक्षित रेलगाड़ियाँ गतिमान हैं। यहाँ तक कि यांत्रिक कारखाना गोरखपुर द्वारा महाकुंभ थीम पर 80 नए कोचों का निर्माण किया गया है।

सड़क परिवहन

प्रयागराज राष्ट्रीय और राज्य राजमार्गों द्वारा देश भर से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। देश भर के कई प्रमुख स्थलों से राज्य द्वारा संचालित बसें उपलब्ध हैं। इन बसों में उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम की वेबसाइट से बुकिंग कराई जा सकती है। 550 सिटी बस और 7,000 रोडवेज बसों का संचालन महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं हेतु किया जा रहा है।

हवाई परिवहन

महाकुंभ को देखते हुए प्रयागराज एयरपोर्ट की सक्रियता बढ़ गई है। एयरपोर्ट टर्मिनल भवन के अंदर एक साथ हजारों लोगों को रोकने की व्यवस्था कर दी गई है। महाकुंभ के दौरान प्रति घंटे 2,970 यात्री टर्मिनल से आ–जा सकेंगे। महाकुंभ के दौरान प्रयागराज देश के लगभग हर हिस्से को विमान सेवा से जोड़ा जाएगा। लगभग 23 शहरों के लिए प्रयागराज से उड़ान

को हरी झंडी मिल गई है। महाकुंभ को देखते हुए प्रयागराज से दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, विलासपुर, हैदराबाद, रायपुर, लखनऊ और भुवनेश्वर, अहमदाबाद, जयपुर, जबलपुर, गुवाहाटी, कोलकाता, देहरादून और चंडीगढ़ के लिए यात्री विमानों का शिड्यूल जारी कर दिया गया है। प्रयागराज एयरपोर्ट का विस्तारीकरण करके एक साथ 15 विमानों को खड़ा कर सकने योग्य सुविधा प्रारंभ हो चुकी है। प्रयागराज एयरपोर्ट से एयर इंडिया, अकासा एयरलाइंस, इंडिगो, स्पाइसपेट और एलाइंस एयर जैसी प्रमुख विमानन कंपनियाँ अपनी सेवाएँ प्रदान करेंगी।

इसके साथ ही परिवहन सुविधाओं को और अधिक बेहतर बनाने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने विशेष रूप से महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं हेतु प्रयागराज रूट के 9 रेलवे स्टेशनों का भी उन्नयन करवाया है। 61 सड़कों के चौड़ीकरण का कार्य पूर्ण कराया है। 10 आर.ओ. की फ्लाइओवर के निर्माण के साथ-साथ 4 नालों के दिशा-परिवर्तन का कार्य भी पूर्ण हुआ है। महाकुंभ में आने वाले किसी भी श्रद्धाालु को किसी भी परिवहन व्यवस्था के अंतर्गत कोई परेशानी न हो, इस दिशा में राज्य सरकार पूरी तरह सचेष्ट है।

स्वस्थ महाकुंभ

महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं को स्वास्थ्य संबंधी कोई परेशानी न हो, इस हेतु भी राज्य सरकार ने खास ध्यान रखा है। महाकुंभ के विशाल मेला क्षेत्र में 43 उच्च गुणवत्तापूर्ण अस्थायी अस्पताल स्थापित किया गया है, जिसमें 380 विशेषज्ञ चिकित्सकों को तैनात किया गया है। इसी के साथ-साथ आकस्मिक चिकित्सा सेवाओं हेतु 125 रोड एंबुलेंस, 7 रिवर एंबुलेंस एवं एक एयर एंबुलेंस तैनात किया गया है। मेला क्षेत्र सहित प्रयागराज शहर के चिकित्सालयों में 6,000 अतिरिक्त बेड कुंभ हेतु आरक्षित है।

एम्स और आर्मी के स्पेशल डॉक्टर होंगे तैनात

महाकुंभ में देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं की देखभाल के लिए

विशेष इंतजाम किए जा रहे हैं। महाकुंभ में श्रद्धालुओं से लेकर महात्माओं तक के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए एम्स और आर्मी के विशेषज्ञ चिकित्सकों की बड़े पैमाने पर तैनाती की जा रही है। एम्स रायबरेली और प्रयागराज के आर्मी हॉस्पिटल इस दिशा में कमर कस चुके हैं। प्रयागराज के परेड ग्राउंड में 100 बेड का अस्थायी अस्पताल बनकर तैयार है।

महाकुंभ हेल्पलाइन नंबर

1920	–	महाकुंभ मेला हेल्पलाइन
1944	–	महाकुंभ मेला पुलिस
1945	–	महाकुंभ मेला फायर सर्विस
1010	–	महाकुंभ मेला खाद्य एवं रसद हेल्पलाइन
102	–	महाकुंभ एंबुलेंस सेवा
108	–	महाकुंभ एंबुलेंस सेवा
18004199139	–	महाकुंभ रेलवे हेल्पलाइन

10 हजार लोगों को निःशुल्क भोजन

उत्तर प्रदेश की सरकार ने महाकुंभ मेला सहित वर्षपर्यंत संगम क्षेत्र में आए 10 हजार श्रद्धालुओं को नि:शुल्क भोजन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रयागराज मेला प्राधिकरण को 2280 वर्गमीटर की भूमि नि:शुल्क लीज पर दी है। इस भूमि पर स्थापित सामुदायिक रसोई से प्रतिदिन 10 हजार श्रद्धालुओं को भोजन उपलब्ध कराया जाएगा।

स्वच्छ महाकुंभ

महाकुंभ–2025 में संगम पर आने वाले लगभग 40 करोड़ श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए राज्य सरकार ने इस महाकुंभ मेले में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा है। 15,000 स्वच्छताकर्मियों की तैनाती 850 से अधिक समूहों के अंतर्गत की गई है। स्वच्छता की निगरानी हेतु 2,000 गंगादूतों को

नियुक्त किया गया है। संपूर्ण मेला परिक्षेत्र में 25,000 से अधिक लाइनर बैगयुक्त डस्टबिन रखे गए हैं। शौचालयों की सफाई हेतु 300 सक्शन गाड़ियाँ, G.P.S. से लैश 120 टियर-हापर और 40 कॉम्पेक्टर ट्रक स्वच्छ महाकुंभ अभियान के अंतर्गत तैनात हैं।

इसके साथ ही पूरे मेला परिसर में 1,50,000 अस्थायी शौचालय श्रद्धालुओं की सुविधाओं के निमित्त स्थापित किए गए हैं। साथ ही इन शौचालयों की साफ-सफाई हेतु 26 हजार से अधिक स्वच्छताकर्मी तैनात होंगे।

महाकुंभ-2025 के दिव्य-भव्य आयोजन में स्वच्छता की ओर राज्य सरकार विशेष ध्यान दे रही है। महाकुंभ की तैयारी के लिए 'नमामि गंगे' के कार्यक्रम को तेजी से आगे बढ़ाया गया है। प्रयागराज शहर के सैनिटेशन और वेस्ट मैनेजमेंट पर गहराई से फोकस किया गया है। श्रद्धालुओं को सुविधा देने और जागरूक करने के उद्देश्य से गंगादूत, गंगाप्रहरी और गंगामित्रों की नियुक्ति की गई है।

□

महाकुंभ में परंपरागत शिक्षा

—शिप्रा सिंह*

—प्रो. (डॉ.) शिवशरण शुक्ल**

अनवरत काल से हमारी भारतीय संस्कृति में धर्म और अध्यात्म का अमृत-तत्त्व विद्यमान है। हम भारतीयों की विशेषता है कि हम अपने धर्म में व्यापक गुणों को समाहित किए हुए हैं, जो न केवल हमारे जीवन जीने की कला है अपितु हमारा सर्वस्व है। हमारी संस्कृति में तीर्थ, पर्व, पुण्य कर्म, दान, धार्मिक कृत्य, संस्कार, अनुष्ठान, उत्सव—ये सभी हमारे मानव जीवन के कल्याण के उद्देश्य से हैं। इन सभी कृत्यों से युक्त मानव स्वयं में शुद्ध एवं आत्मकल्याण करता है। वैदिक काल से ही भारतीय ऋषि-मुनियों ने मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष को माना है। मोक्ष एक व्यक्तिगत विषय हो सकता है, किंतु इस लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग लोककल्याण से होकर निकलता है। इस लोककल्याण के लिए हम अनगिनत आध्यात्मिक और सामाजिक कार्यों से अपनी परंपराओं को निभाते हैं। जिस भारतीय संस्कृति में अध्यात्म समाहित है, उसके प्रत्येक कण-कण में विद्यमान धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, शारीरिक सभी पक्ष हमें कुछ-न-कुछ सिखाते हैं। इन्हीं छोटे-छोटे उपदेशों से हमारी शिक्षा का निर्माण होता

* शोधार्थी, एल.बी.एस. पी.जी. कॉलेज, गोंडा, राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ.प्र.)

** शोध-निदेशक, शिक्षाशास्त्र विभाग, एल.बी.एस. पी.जी. कॉलेज, गोंडा; राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ.प्र.)

है। जैसा समाज होता है, उसी के अनुरूप हमारी शिक्षा की दिशा होती है। हमारी संस्कृति हमारी शिक्षा का आधार है, जो अनादिकाल से निष्काम भावना, विश्व-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत है। इसी लोककल्याण की भावना से उदित 'हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक'—ये चार कुंभ-पर्व के निर्णीत स्थानों में कुंभ-योग के समय तत्तत्संप्रदाय, सम्मानित साधु-महात्माओं के समवाय द्वारा संसार के सभी प्रकार के कष्टों के निवारण एवं देश, समाज, राष्ट्र और धर्म आदि समस्त विश्वकल्याण-संपादनार्थ निष्काम-भावना से युक्त वेदों, शास्त्रों के अनुकूल अमूल्य दिव्य उपदेशों से विश्व का कल्याण करना ही 'कुंभ-पर्व' का महान् उद्देश्य है।'[1] यह कुंभ-पर्व उस भारतीय संस्कृति का द्योतक है, जिसमें नदियों, अनुष्ठानों, संस्कारों और सरोकारों द्वारा दी गई शिक्षा शामिल है। इस अद्भुत प्रवहमान शिक्षा की धारा में नदियों की ध्वनियाँ भी हैं, जिन्हें सुनने स्वयं कुंभ आता है और उन्हीं ध्वनियों से शिक्षा प्राप्त करने लाखों-करोड़ों लोग भी आते हैं। इस कुंभ-पर्व में विभिन्नताओं का समागम होता है, जिसमें 'भारतीय संस्कृति कुलाँचें भरती, अठखेलियाँ करती पूरे विश्व को स्वयं में समाहित कर लेने की ताकत रखती है।'[2] यह महाकुंभ अपनी इन्हीं विशेषताओं के रंग में संपूर्ण मानवता को विभिन्न प्रकार से शिक्षित करता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् की शिक्षा

कुंभ आत्मा और परमात्मा का मिलन है—आत्मस्वरूप को पहचानने का अवसर है। यह कुंभ जहाँ ज्ञानरूपी सरस्वती, भक्तिरूपी गंगा और कर्मरूपी यमुना का संगम है। अर्थात् ज्ञान, कर्म, भक्ति तीनों का मेल है। अमृत-तत्त्व की प्राप्ति संगम से ही संभव है। वियोग में तो विरह होता है। इसी एकतत्त्व एवं संपूर्णता के लिए कुंभ-स्नान-पर्व में देश-विदेश से लोग आते हैं और एक होने की शिक्षा देते हैं। यह संपूर्ण विश्व को संगम के तट पर एकत्र करता है। यह मात्र नदियों का संगम न होकर संपूर्ण विश्व को एक धारा पर लाने का अवसर है। प्रत्येक समाज में वैचारिक अंतर है। इस दृष्टि से इस महाकुंभ

की प्रासंगिकता बढ़ गई है। यह हमारा संगम हमारी प्राचीन विरासत 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की शिक्षा दे रहा है। हम विभिन्नताओं के साथ एक ही छत के नीचे कैसे रह सकते हैं, इस प्रकार की शिक्षा। भक्तकवि संत तुलसीदासकृत 'रामचरितमानस' के सातों सोपानों प्रकट और अप्रकट संगम है, जो हमें विभिन्नता में एकता की शिक्षा दे रहा है।

इस महाकुंभ में प्रयागराज की धरा भी संपूर्ण विश्व को अथाह विचारों के मेल अर्थात् वैचारिकी का संगम प्रदान करने की शिक्षा दे रही है। वास्तव में हमारी संस्कृति में सामूहिकता की भावना है, जिससे यह संपूर्ण विश्व को एक परिवार की तरह समझते हैं। यही कारण है कि किसी भी कुंभ मेले में तरह-तरह की संस्कृतियाँ आ धमकती हैं। दूर-दूर से लोग अपनी-अपनी सांस्कृतिक पहचान के साथ पहुँचते हैं और हम सभी को परस्पर तादात्म्य स्थापित करने की शिक्षा देते हैं। हम सभी एक ऐसी डोर में बँध जाते हैं, जो कभी टूट नहीं सकता। ऐसी भारतीय संस्कृति की चेतना है, जिसके माध्यम से हम संपूर्ण देश-विदेश को एकता के सूत्र में पिरोने की शिक्षा देते हैं। यह कुंभ सभी को एक सामूहिक संस्कृति का हिस्सा बनने और उसकी मूल भावना को अंगीकार कर उसके सतत निर्वाह की शिक्षा देता है। ऐसी शिक्षा, जो हमें यह महाकुंभ अप्रत्यक्ष रूप से उपलब्ध कराता है, इसके आगे संस्थाओं और विश्वविद्यालयों की शिक्षा पीछे छूट जाती है। वस्तुतः हम इसे एक मुक्त विश्वविद्यालय की संज्ञा दे सकते हैं। कुंभ के माहात्म्य और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की शिक्षा देते हुए वेदों में कहा गया है—

युवं नरा स्तुवते पज्रियाय कक्षीवते अरदतं पुरंधिम्।
कारोतराच्छफादश्वस्य वृष्णः शत कुम्भाँ असिञ्चतं सुरायाः॥

(ऋग्वेद 1/116/7)

कुम्भोवनिष्टुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रेयोन्यां गर्भो अन्तः।
प्लाशिर्व्यक्तः शतधारउत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः॥

(शुक्ल यजुर्वेद 19/87)

यह कुंभ विश्व संस्कृति और धर्म के साथ मिलकर सभी संस्कृतियों के साथ एकत्र होकर राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय एकता, अखंडता, अक्षुण्णता का विचार करने की शिक्षा देता है।

परंपरा और आस्था की शिक्षा

विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक और आध्यात्मिक समागम माँ गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती की त्रिवेणी में दिखाई देता है। यह महाकुंभ 12 महाकुंभों के उपरांत 144 वर्ष बाद महाकुंभ का यह अद्भुत संयोग आया है। यह महाकुंभ हमारी परंपराओं की दिव्यता, भव्यता और सांस्कृतिक धरोहर को दरशा रहा है। यह सब देखते हुए हम कह सकते हैं कि हमारी भारतीय संस्कृति में ऐसे तत्त्व हैं, जिनके कारण यह यूनेस्को यानी संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन ने वर्ष 2017 में कुंभ मेला को 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' की सूची में शामिल कर लिया था। इस महाकुंभ में ऐसे-ऐसे कलाकार पहुँचते हैं, जिनमें वास्तव में अद्भुत क्षमता है, जो इस मेले में हर्षोल्लास के साथ प्रकट होती है। यहाँ पर विभिन्नताओं के साथ विरासत में मिली संस्कृतियाँ फैल जाती हैं, सभी लोग एक-दूसरे के साथ हिल-मिल जाते हैं। महाकुंभ का मेला विभिन्न रंगों में रंग उठता है। हमारी भारतीय संस्कृति में एकता-सामूहिकता की अवधारणा विद्यमान है। हमने संपूर्ण धरा को एक परिवार माना है। हमारे सभी क्रियाकलापों में पहले सामूहिकता आती है, फिर वैयक्तिकता। यही वास्तविक कारण है कि यह संपूर्ण विश्व को अपने अंदर समेटने की ताकत रखती है। इस कुंभ-पर्व के प्रति परंपरागत आस्था में प्रत्येक मनुष्य किसी-न-किसी लय और धुन में झूम रहा है।

यह स्पष्ट दृष्टिगोचर है कि संगम के तट पर विदेशों से आए लोग नाच-गा रहे हैं। इससे हमें यह शिक्षा प्राप्त हो रही है कि महाकुंभ सामूहिक संस्कृति की विरासत का हिस्सा बन रहा है। यह हमें परंपरा और आस्था से जुड़ने की शिक्षा दे रहा है। इस कुंभ में पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण का

अंतर समाप्त होता दिख रहा है। यही कुंभ की विशेषता है, जो इसे वैश्विक स्तर पर लाती है। भारत देश सनातन का भव्य मंदिर है और हमारे देश के लोगों की चेतना मंदिर की पुजारिन है। भारतीयों को जब अपनी संस्कृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना होता है तो हम तीर्थ-मेला कुंभ के भाव में उतरना चाहते हैं, ऐसा भाव जहाँ आनंद हो। हमारी संस्कृति की विशेषता है कि नदी में स्नान करते हुए सूर्य को अर्घ्य देते हैं। यह सब हमें अपनी संस्कृति के प्रति आस्था की शिक्षा दे रहा है। प्रयागराज का संगम तट गंगा-यमुना-सरस्वती नदियाँ जो ज्ञान-कर्म-शक्ति के साथ-साथ सत्-चित्-आनंद का सूचक है। जब हम यहाँ आते हैं तो धर्म की सिद्धि होती है, अर्थ पुष्ट होता है, काम को संतुष्टि मिलती है। इन तीनों के बिना मोक्ष संभव नहीं है। हम जब कुंभ मेले में आते हैं तो भारत की धड़कन को सुनते हैं। यहाँ श्रद्धा और विश्वास का सुगंध फैलता रहता है, उसे सभी महसूस करते हैं। यह महाकुंभ अध्यात्म और विज्ञान के परस्पर संबंधों की शिक्षा दे रहा है कि कैसे भारत में प्राचीन स्थापत्य की सुरक्षा को लेकर ठोस निर्णय लिये जाएँगे, तब युवा प्रभाव की रश्मियाँ पूरे विश्व को आलोकित करेंगी। प्रगतिशील युवाओं के नेतृत्व में होने वाला यह महाकुंभ 'मेले में नवाचार' का जनक साबित होगा। इसलिए इस परंपरा और आस्था के महाकुंभ को 'भव्य-दिव्य-नव्य महाकुंभ' कहा गया है। यह महाकुंभ वैश्विक धर्म-विज्ञान-संस्कृति के समन्वय का मेला है।

संस्कृति के गर्व को महापर्व बनाने की शिक्षा

भारत की संस्कृति में नदियों का मेल, धर्मों का मेल, परंपराओं और मान्यताओं का भी मेल है। यही इस देश की विशेषता है। यही भारतीय संस्कृति की विशेषता है, जो मिलकर विलीन हो जाने को ही अपनी पूर्णता मानती है। कुंभ का जो स्वरूप वर्तमान में देखने को मिल रहा है, वह संस्कृति के गर्व को महापर्व बनाने की शिक्षा दे रहा है। यह वही संगम तट है, जहाँ महर्षि याज्ञवल्क्य ने भरद्वाज को पहली बार रामकथा सुनाई थी। रामकथा में भी कुंभ की चर्चा है। महर्षि अगस्त्य, जिन्होंने अपने उदर-कुंभ

में समुद्र को पी लिया, उन्हीं कुंभज के पास शंकरजी ने रामकथा सुनी। कुंभ, कुंभज, शिव और रामकथा सब अनंत हैं। अनंत ही अनंत को पी सकता है। अनंत का प्रतिपादन भी अनंत ही कर सकता है। इस महाकुंभ के अवसर पर जो लोग स्नान कर रहे हैं, उन्हें यह सौभाग्य प्राप्त हो रहा है, जहाँ पर भरत समुद्र भी स्नान कर चुका है। साक्षात् ज्ञान श्रीराम, सीताजी, लक्ष्मणजी ने स्नान किया। यह गर्व की अनुभूति हमारे अंदर भक्ति, ज्ञान और कर्म के रूप में इसे महापर्व मनाने की शिक्षा दे रहा है। स्नान का अर्थ है—जल में अंग-प्रत्यंग का डूब जाना, कुछ बाकी न रहे। तभी तो आत्मा और शरीर का संगम होगा। यहाँ प्रयाग में संगम के तट पर एक छोर से दूसरे छोर तक सांस्कृतिक विस्तार का स्वरूप की झलक धर्म के प्रतिरूप में विद्यमान है।

विभिन्न संस्कृतियों के मेल से यहाँ पर्व का सृजन हुआ है। सभी संस्कृतियों के आधार में कुछ-न-कुछ मौलिकता है और सभी संस्कृतियों की मौलिकता मिलकर कुंभ-पर्व के रूप में आह्वान दे रही हैं। जैसे ही सूर्यदेवता मकर संक्रांति में आते हैं, तीर्थराज प्रयाग की त्रिवेणी गर्व से फूल उठी। इसे ही तुलसीदासजी कहा है—'गंग-जमुन की निर्मल जलधार, भावों में अदृश्य सरस्वती एकाकार और उसी के समानांतर अथाह जनधारा। देवताओं के समान संत-नागा संन्यासी और अमृत-स्नान का यह दृश्य पर्व बनाने की शिक्षा दे रहा है।' जब ग्रह-राशियों का योग-संयोग होता है, तब यह वैदिक महाकुंभ की पुण्य वेला का महाकलश छलकता है। इस लोक से लेकर परलोक तक अमरतत्त्वता पाने की अभिलाषा से करोड़ों श्रद्धालु सूर्य के उत्तरायण में आते ही संगम में डुबकी लगाते हैं। श्रद्धा और आस्था की अतुलित जनसमूह ने संगम में उतर जाने का एहसास कराया। इस अनुभूति ने अध्यात्म की गहराई की शिक्षा प्रदान की, जिससे आत्मा-परमात्मा का संगम हो सके। इस अमृत-स्नान में पूरी तैयारी के साथ सजे हुए संतों-संन्यासियों ने आध्यात्मिक चेतना के साक्षी बनकर आदिशंकराचार्य जी द्वारा पुनर्स्थापित वैदिक महाकुंभ का पर्व मनाया, जिसमें संपूर्ण जनमानस एक हो उठा। रथों और बग्घियों से सुसज्जित

वाहनों के काफिले प्रातः संगम की ओर ऐसे बढ़े, जैसे कि कोई महापर्व हो। उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री पूज्य योगी आदित्यनाथजी महाराज द्वारा इस पर्व को पुष्पित-पल्लवित करते हुए हेलीकॉप्टर से पुष्पवर्षा कराकर इस संस्कृति के गर्व को महापर्व बनाने की शिक्षा दी है।

संस्कृतीकरण के वाहक बनने की शिक्षा

इस महाकुंभ में देश-दुनिया से आए लोग अपने रहन-सहन, सोच-विचार, रीति-रिवाज, संस्कार-सरोकार, आचार-व्यवहार की भरी-पूरी थाती लेकर कुंभ मेले में शामिल होते हैं और यहाँ अपनी थाती लोगों में साझा कर अपना स्थान बनाते हैं, जिससे कि वे यहाँ से कुछ नया सहेजकर साथ ले जा सकें। यह ऐसी परंपरा है, जिससे व्यक्ति एकदम नयापन के साथ खिल उठता है। जब एक संस्कृति दूसरी संस्कृति से जुड़ती है तो नयापन आता है। हम एक-दूसरे से कुछ-न-कुछ नया सीखते हैं। यही संस्कृतीकरण की शिक्षा है। यह कुंभ मेला कल्पवास के दौरान हमें आध्यात्मिक, सामाजिक, मानसिक और शारीरिक चेतना को फिर से मौलिक बनाने की सांस्कृतिक प्रयोगशाला उपलब्ध करता है। इस प्रयोगशाला में नए गीत, नए आख्यान, नई कथाएँ और नए रूप का निर्माण किया जाता है और उसे आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित किया जाता है। वर्तमान समय में हम आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स और चिप कम्युनिकेशन जैसे तकनीकी में डूबते जा रहे हैं, तभी इस वर्तमान युग में प्रकृति अपनी संस्कृति अपनी परंपरा के साथ संस्कृतीकरण को आत्मसात् करने की शिक्षा दे रही है।

यह मेला हमें शिक्षा दे रहा है कि किस प्रकार हम तकनीकी से जुड़े रहने के साथ-साथ अपनी परंपराओं, संस्कारों और सरोकारों से जुड़े रह सकते हैं। प्रयागराज में 21वीं सदी के 25वें वर्ष का यह महाकुंभ मेला हमारी भारतीय संस्कृति और विभिन्न संस्कृतियों का एक-दूसरे के साथ सीखते रहने की एक नई आभा प्रस्तुत कर रहा है। यह हमें संस्कृतीकरण के वाहक के रूप में

शिक्षित कर रहा है और संपूर्ण मानवमात्र इस संस्कृतीकरण की दिशा में बहा जा रहा है। यह भारतीय संस्कृति और विदेशी संस्कृतियों के बीच युगलबंदी की शिक्षा दे रहा है। इस महाकुंभ में हमारी आधुनिक पीढ़ी भारतीय संस्कृति का वैज्ञानिक विश्लेषण करेगी, जो भविष्य के लिए नए द्वार खोलने की दिशा में बहुत महत्त्वपूर्ण है। हमारी नई पीढ़ी को आस्था का अर्थ मिल रहा है। सभी को यह ज्ञान हो रहा है कि हमारे ऋषि और आचार्य विज्ञानवेत्ता थे। उन्होंने जो प्रत्यक्ष देखा है, वही बताया है। हम भारतीय अब समझ रहे हैं कि जो शाश्वत सत्य है, वही सनातन है।

संगम का अर्थ सभी प्रकार के समन्वय की शिक्षा

संगम केवल गंगा-यमुना और अप्रत्यक्ष सरस्वती का मेल ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व को एक धरा पर लाने का वाहक है। कुंभ संपूर्ण विश्व पर लोगों के बीच समन्वय का संबंध स्थापित करने का संदेश देता है। प्रयागराज की धरा पर अनेक विचारों के संगम इस कुंभ के दौरान होते हैं। देवता और दानव दोनों ही संगम में एक साथ डुबकी लगाते हैं, अर्थात् दो परस्पर विरोधी विचारधाराएँ, रहन-सहन, खान-पान, हिंसा-अहिंसा, सभी प्रकार के भेदभाव होने के बावजूद एक साथ स्नान करती हैं। तुलसीदासजी कहते हैं—हमारा संपूर्ण राष्ट्र ही तीर्थ है, लेकिन जहाँ अमरता, कभी न मिटने वाली संस्कृति हो, वही तीर्थ है। हमारे यहाँ हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक—इन चार तीर्थस्थानों में कुंभ-पर्व मनाया जाता है। ये सभी एक से बढ़कर एक तीर्थ हैं। जब मनुष्य इसमें स्नान करते हैं, तब वह अमृत-तत्त्व को प्राप्त करते हैं। स्कंदपुराण में वर्णित है—

तान्येव यः पुमान योगे सोऽमृतवाय कल्पते।
देवा नमन्ति तत्रस्थान् यथा रङ्का धनाधिपान्॥

(स्कंदपुराण)

'जब देवगुरु बृहस्पति मेष राशि में स्थित होते हैं तथा चंद्रमा और सूर्य मकर राशि पर स्थित होते हैं, उस समय तीर्थराज प्रयाग में कुंभ योग होता है;

ऐसा स्कंदपुराण में वर्णित है—

मेषराशि गते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ।
अमावस्या तदा योगः कुम्भायस्तीर्थनायके॥

(स्कंदपुराण)

संगम तट पर इस कुंभ में तीन प्रकार के स्नान होते हैं। प्रथम स्नान मकर संक्रांति के दिन से प्रारंभ होता है। दूसरा स्नान माघ कृष्ण मौनी अमावस्या के दिन होता है तथा तीसरा स्नान माघ शुक्ल वसंतपंचमी को होता है। यह सभी प्रकार के स्नान शरीर, मन, आत्मा को शांत एवं स्थिरता प्रदान करते हैं।

मकरे च दिवानाथे हयजगे च बृहस्पतौ।
कुम्भयोगो भवेन्नत्र प्रयागे ह्यतिदुर्लभः॥

(स्कंदपुराण)

कुंभ का अर्थ है—अमृत कलश। हमारी संस्कृति में कुंभ शगुन माना जाता है। यह बाहर से कठोर एवं अंदर से खाली होता है, जिसमें अनेक अच्छाइयों और गुणों का समावेश किया जा सकता है। यह कुंभ की संरचना भी हमें अपने जैसा करने की शिक्षा प्रदान करता है। संगम के तट पर धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष इन सभी के भंडार खुले होते हैं, जो मनुष्य जो भी पाना चाहता है, वह यहाँ से ले जाता है। मनुष्य के मन के सभी विकार नष्ट हो जाते हैं। यहाँ मनुष्य की प्रत्येक कठिनाई के निदान का मार्ग है।

अक्षयवट तीर्थराज प्रयाग का छत्र है। यह अक्षयवट हमारी संस्कृति को अखंड और अनंत रखता है। अक्षय का अर्थ है, जो शाश्वत है और वह विश्वास का प्रतीक है। यह अक्षयवट हमें अपनी संस्कृति, धर्म पर शाश्वत विश्वास बनाए रखने की शिक्षा देता है। प्रयागराज में ज्ञान के रूप में अनंत समय से अक्षयवट की जड़ें हैं, जिनमें किसी भी घातक ज्वलनशील पदार्थ को डाल दिया जाए तो वह नष्ट हो जाएगा। इस प्रकार से यह अक्षयवट हमें हजारों बुराइयों को अपने अंदर शमन करने की शिक्षा देता है। यह संगम

तट पर कुंभ हमें अपने सांस्कृतिक महत्त्व के साथ आध्यात्मिक मूल्यों को एक-दूसरे की विभिन्नताओं के साथ साझा करने की शिक्षा प्रदान करता है। यहाँ विभिन्न प्रकार की चुनौतियों और भ्रांतियों पर चिंतन करते हुए उसका समाधान करने का अवसर होता है। इस कुंभ मेले के दौरान विभिन्न मानव शक्तियाँ एक होकर हमारी सांस्कृतिक पवित्रता को संरक्षित करते हैं। वर्तमान में कुंभ से जुड़ी अनेक शिक्षाएँ हमें दिग्दर्शित भी कर रही हैं।

जीवंत कुंभ-गाथा की प्रेरणास्रोत शिक्षाएँ

1. पूज्य महाराजजी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी इस महाकुंभ में आए अखाड़ों के शिविर में संतों से मिलते हैं, उनका हाल-चाल पूछते हैं। उनकी समस्याओं को जानने का प्रयास करते हैं। संतों की बातों को गंभीरता से सुनते हैं। संतों द्वारा बताई गई समस्याओं को त्वरित दूर करने का भरोसा देते हैं। यह हमें हमारे आतिथ्य-सत्कार एवं परस्पर आत्मीय संबंध स्थापित करने की शिक्षा प्रदान करता है।
2. वैश्विक तकनीकी युग होने के साथ-साथ हमारा यह कुंभ-पर्व भी डिजिटल बन गया है। पूरे महाकुंभ क्षेत्र में सड़क, विभिन्न कार्यालय, मंदिर, वाहन, ट्रेन, टेंट, शिविर, अखाड़े, नाव व बाबाओं की दुनिया भी तकनीक का हिस्सा बन गई है। मेला क्षेत्र, प्रयागराज के चौराहे, गलियाँ, पोस्टर, बैनर, हर जगह एक वर्गाकार बक्से में काले रंग की धब्बानुमा आकृति दिखती है। यह तकनीक का संदूक है, इसे 'क्यू.आर. कोड' कहते हैं। इसमें अलग-अलग चीजें हैं। आप इसमें से अपने काम की चीज खोज सकते हैं। इसमें संपूर्ण कुंभ समाया हुआ है। आपको दक्षिणा देना है या चाय की दुकान का पैसा, यह 'क्यू.आर. कोड' काम आता है। रेलवे का टिकट चाहिए, पर्यटन के लिए गाड़ी बुक करनी है या कुंभ का रास्ता देखना है, सब यहाँ मिल जाएगा। प्रयागराज के धार्मिक स्थलों के बारे में जानिए, बसों की लोकेशन सब कुछ क्यू.आर. कोड मोबाइल पर ही उपलब्ध करा देगा। ऑनलाइन आरती में शामिल होने, ऑनलाइन

पूजा करने के लिए भी यह क्यू.आर. कोड आपके काम आएगा। यह आस्था के मेले में तकनीक का संगम है। क्यू.आर. कोड कठौती है, जिसमें महाकुंभ रूपी पूरी गंगा समाई है। मन चंगा करने के लिए बस इसे स्कैन कीजिए। यह धर्म एवं आस्था में सहायक क्यू.आर. कोड हमें परंपरा एवं आधुनिकता को एक साथ समाहित करने की शिक्षा देता है।

3. 'रिंग रेल' के माध्यम से प्रयाग, झाँसी, अयोध्या, काशी का मेल हो रहा है। प्रयागराज के पास जितने धार्मिक स्थल हैं, वहाँ से श्रद्धालुओं को प्रयागराज ले जाने और स्नान के बाद उन्हें वापस घर पहुँचाने के लिए 'रिंग रेल' सेवा प्रारंभ की गई है। इसमें सभी सामान्य श्रेणी के कोच हैं। साधारण टिकट पर यात्रियों द्वारा यात्रा करना सचमुच अद्भुत है। प्रयागराज जंक्शन से ट्रेन संख्या 04111 सुबह छह बजे चलकर सुबह 8:10 बजे बनारस, दोपहर 2:00 बजे अयोध्या व शाम 6:50 बजे प्रयागराज जंक्शन पहुँचती है। दूसरी 'रिंग रेल' 04113 प्रयागराज जंक्शन से शाम 5:30 बजे चलकर शाम 7:40 बजे बनारस, रात 2:00 बजे अयोध्या एवं सुबह 7:45 बजे प्रयागराज जंक्शन पहुँचती है। यह ट्रेन प्रयागराज रामबाग, झूँसी, हंडिया, भदोही, जंघई, जाफराबाद, जौनपुर, अकबरपुर, अयोध्या कैंट, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़ जैसे स्टेशनों पर रुकते हुए चलती है। इसी तरह ट्रेन संख्या 04112 सुबह 6:30 बजे प्रयागराज जंक्शन से अयोध्या के लिए रवाना होती है। सुबह 10:50 बजे अयोध्या, शाम पाँच बजे वाराणसी व रात नौ बजे प्रयागराज आती है। यह 'रिंग रेल' वास्तव में एक-दूसरे को जोड़ने तथा सभी श्रद्धालुओं की सुविधा का ध्यान रखने की योजना हमें वास्तविक जीवन में इसे आत्मसात् करने की शिक्षा देती है।

4. छोटे-छोटे उद्योगों का विकास एवं देश की अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव महाकुंभ की देन है। प्रयागराज महाकुंभ के दौरान 45 दिनों में दो हजार करोड़ रुपए की पूजा-सामग्री बिकने का अनुमान है। 800 करोड़ रुपए के फूलों के कारोबार की उम्मीद है। सरकार को भी

प्रदेश में दो लाख करोड़ रुपए की आर्थिक वृद्धि का अनुमान है। इस प्रकार यह महाकुंभ और इसकी छटा का प्रभाव हमारी अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक पड़ा है। ऐसे प्रयोजनों से हजारों-करोड़ों घरों की रोजी-रोटी चलाने की सकारात्मक शिक्षा मिलती है।

5. उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जारी बुकलेट, जिसका टैगलाइन सुशासन, विकास व रोजगार है। कवर पेज पर गंगाजी का पूजन करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का चित्र है। इस बुकलेट में सुदृढ़ कानून-व्यवस्था के तहत सरकार यह बता रही है कि कानून-व्यवस्था की स्थिति और अधिक बेहतर बनाने के लिए अपराध तथा अपराधियों के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस की नीति जारी है। लखनऊ, गौतमबुद्ध नगर, कानपुर, वाराणसी, आगरा, गाजियाबाद, प्रयागराज में पुलिस कमिश्नरेट व्यवस्था लागू है। महिला एवं बाल अपराध संबंधी मामलों के निस्तारण में प्रदेश देश में प्रथम स्थान पर है। दुर्दांत अपराधियों के विरुद्ध काररवाई में अब तक 217 अपराधी मुठभेड़ में मारे गए हैं, जबकि 7799 अपराधी घायल हुए हैं। गैंगस्टर अधिनियम के तहत 140.90 अरब रुपए से अधिक की संपत्ति जब्त की जा चुकी है। साइबर अपराधियों से निपटने के लिए 18 परिक्षेत्रीय साइबर क्राइम थानों की स्थापना के साथ ही 1530 थानों में साइबर सेल की स्थापना की गई है। इस बुकलेट में कानून-व्यवस्था के साथ-साथ अवस्थापना सुविधाएँ, निवेश, किसानों का उत्थान, वंचितों को वरीयता के साथ ही विभिन्न विभागों की उपलब्धियाँ समावेशित हैं, जिसे पढ़कर हम अपने विकास-क्रम की दिशा में जानकर शिक्षित होंगे।

6. मीडिया सेंटर से पूरी दुनिया तक पहुँच रही महाकुंभ की महागाथा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रयागराज में परेड मैदान स्थित डिजिटल मीडिया सेंटर का उद्घाटन किया है, जो 45 दिन तक चलने वाले महाकुंभ की महागाथा को पूरी दुनिया में प्रसारित करने का केंद्र है। यहाँ सूचनाओं को संकलित करने, उन्हें प्रसारित करने के लिए विश्वस्तरीय

सुविधाएँ दी जा रही हैं। इस डिजिटल मीडिया सेंटर में करोड़ों रुपए की लागत से हाई रिजॉल्यूशन प्रोफेशनल कैमरे लगाए गए हैं। सेंटर का विशेष पाडकास्ट रूम महाकुंभ से संबंधित चर्चा का केंद्र बिंदु है। सेंटर में कॉन्फ्रेंस रूम है, जिसमें मुख्यमंत्री, मंत्रिगण एवं अन्य विशिष्ट जन मीडिया प्रतिनिधियों के जरिए लोगों तक अपनी बात पहुँचा सकेंगे। पी.सी.आर. रूम के माध्यम से प्रेस कॉन्फ्रेंस स्टूडियो और पाडकास्ट की लाइव फीडिंग भी यू-ट्यूब, व्हाट्सऐप, फेसबुक, इंस्टाग्राम और एक्स के माध्यम से उपलब्ध कराई जाएगी। सेंटर में 50-50 लाख रुपए के लेंस वाले कैमरे हैं, जो महाकुंभ के हर दृश्य को उच्च गुणवत्ता में रिकॉर्ड करेंगे। यहाँ वी.आई.पी. लाउंज, डबलबेड वाले आरामदायक रूम व कैफेटैरिया भी है। इन सभी से हमको यह सीखना चाहिए कि किस प्रकार हमें किसी भी कार्य की पूर्व योजना बनाते हुए उसे फलीभूत करना है।

7. इस महाकुंभ में कल्पवास और अपने द्वारा किए कर्मों का प्रायश्चित्त करने के लिए कारावास में रहने वाले कैदियों के लिए भी कल्पवास की व्यवस्था है। कारागार में 50 से ज्यादा उम्र के कैदियों ने भी कल्पवास की इच्छा बताई तो उनके लिए कौशांबी कारागार में प्रशासन द्वारा कारावास के अंदर ही कुंभनगरी बसा दी गई है। यहाँ संगम से पवित्र त्रिवेणी का जल लाया गया है। यह हमें कठिन परिस्थितियों में रास्ता निकालने और जीवन को सहजता के साथ जीने की शिक्षा देता है।

भारतीय संस्कृति में विकसित धर्म, संस्कार एवं परंपरा जीवन-मूल्य निर्धारित करते हैं। प्रत्येक भारतीय पर्व और परंपराएँ मानव जीवन की शिक्षा का प्रमुख आधार है। पर्व और परंपरा जीवन के हर क्षण में सीखने का अवसर प्रदान करता है। इस आलेख में यथासंभव शिक्षा ग्रहण करने का संकेत किया गया है। महाकुंभ 2025 अनुभव-जन्य शिक्षा का एक महान् पर्व है। देश और दुनिया इस महापर्व से निश्चित रूप से बहुत कुछ सीखेगी।

□

महाकुंभ 2025 : एहसास और अनुभूति

—अश्विनी कुमार राय*

7 जनवरी, 2025 को सायं 4:30 बजे फाफामऊ के पुल से नीचे उतरकर गंगा-यमुना मैया की उपत्यका में बसने की प्रक्रिया में चल रही कुंभनगरी में प्रवेश हुआ। इस बार संपूर्ण कुंभनगरी में पच्चीस सेक्टर हैं। लखनऊ की ओर से आने पर फाफामऊ पुल के नीचे से सेक्टर दस प्रारंभ होता है और गंगाजी के तट पर बसे प्रयागराज के उस घाट का नाम 'शिवपुरी' है, कुंभ क्षेत्र के पूर्व दिशा का यह अंतिम छोर है। पुल के नीचे उतरकर कुछ दूर आगे बढ़ने पर ही कर्ण-कंदराओं में भजन-कीर्तन तथा नाम-ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। तीर्थयात्री और साधु-संत दिखने लगे। संस्थाओं के अर्धनिर्मित शिविर पंडाल खड़े किए जा रहे थे, कुछ भव्य यज्ञशालाओं का निर्माण कुश और सरकंडे से किया जा रहा था। सेक्टर दस कुंभ क्षेत्र के पूर्व दिशा में सबसे अंत में स्थित है, जिसके कारण संगम की अपेक्षा अभी यहाँ चहल-पहल कुछ कम है, परंतु एक दृष्टि से लखनऊ, प्रतापगढ़ की दिशा से मोटर वाहन से आने वाले यात्रियों के लिए प्रवेशद्वार के समान है। जिस दिन विशेष स्नान का पर्व एवं दिवस रहता है। उस दिन अत्यधिक भीड़ रहती है, जिसके कारण वाहन यहीं फाफामऊ पुल के समीप ही रोक दिए जाते है और यहीं पर पार्किंग इत्यादि की व्यवस्था प्रशासन द्वारा की जाती है। आगे बढ़ने पर गंगाजी के तट पर दाहिनी ओर एक पुराना किला दिखाई दिया। पूछने पर ज्ञात हुआ कि यह

---

* समाजिक कार्यकर्ता एवं कल्पवासी

किला वहाँ के प्रतिष्ठित और सम्माननीय टंडनजी ने बनवाया था। सेक्टर दस में प्रवेश करते ही निर्माणाधीन धार्मिक पंडाल और यज्ञशालाएँ दिखने लगीं। कुछ दूर आगे जाने पर सेक्टर-11 की सीमा लग गई। उससे आगे बढ़ने पर ब्रज-गोकुल के स्वामी गुरु शरणानंदजी महाराज, कैलाशानंद गिरिजी, आशुतोष महाराज और विद्याभारती, गंगा समग्र आदि संगठनों एवं संस्थाओं के विशाल पंडाल मिले। संगम की ओर बढ़ने पर प्रतीत होने लगा कि इस बार पूज्य योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में तो प्रशासन तैयार था, लेकिन व्यवस्था की दृष्टि से संस्थाएँ पूर्व की भाँति कुछ विलंब में हैं, अन्यथा शिविरों का निर्माण कार्य इतनी मंथर गति से नहीं होता। 13 जनवरी पूर्णिमा को प्रथम स्नान है और इसी दिवस से कल्पवास भी प्रारंभ हो जाएगा। 14 जनवरी को मकर संक्रांति का प्रथम अमृत (शाही) स्नान है। यहाँ इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि इस कुंभ में 'शाही' शब्द के स्थान पर 'अमृत' का प्रयोग किया जाने लगा है। 'शाही' शब्द मुसलिम आक्रांताओं के समय प्रचलन में आया था, पेशवाई को नगर प्रवेश कहा जाएगा। इन दोनों नामों को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथजी ने परिवर्तित किया, जिसका धार्मिक आँर सांस्कृतिक महत्त्व समझते हुए अखाड़ा परिषद् और संतों ने भी अपनी-अपनी सभाएँ कर इसको सर्वसम्मति से स्थापित किया। अत्यंत हर्ष का विषय है कि ऐसे बहुत सारे शब्दों को परिवर्तित कर और पुनः प्राचीन एवं मूल शब्दों को स्थापित किया जा रहा है। तैयारी भले ही अभी अधूरी लग रही हो, परंतु युद्धस्तर पर कार्य चल रहा है और आज से सात-आठ दिवस में मकर संक्रांति से महाकुंभ अपने अलौकिक और भव्यतम स्वरुप को धारण कर लेगा। अभी जहाँ देखिए वहाँ आध्यात्मिक और अन्य संगठनों के लोग अपने-अपने शिविर के निर्माण में अत्यंत तन्मयता के साथ परिश्रमपूर्वक लगे हुए है। विशाल पंडालों का निर्माण चल रहा है, जिसमें हजारों लोग बैठकर प्रवचन एवं सत्संग का श्रवण करेंगे तथा कुछ पंडाल 'अन्न क्षेत्र' के रूप में प्रयोग होंगे, जहाँ एक साथ सैकड़ों लोगों को बैठकर अत्यंत विनम्रता और श्रद्धा से भोजन प्रसाद ग्रहण कराया जाएगा। मार्गों पर लोहे की चेक प्लेट

बिछाई जा चुकी है, जिसके कारण बालू पर वाहनों के पहिए नहीं धँसेंगे। पूर्व के कुंभ की भाँति पीपा पुल का निर्माण किया जा चुका है। संपूर्ण कुंभनगरी में मार्गों के किनारे स्ट्रीट लाइट से जगमगाकर मनमोहक छठा बिखेर रही है। कुछ पंडालों में अखंड कीर्तन चल रहा है।

सेक्टर तेईस में अपना सामान रखकर पुन: रात्रि में भ्रमण दर्शन के लिए निकला। रात्रि होने के कारण यातायात की व्यस्तता अत्यंत ही कम हो गई थी, परंतु ठंड और कोहरा बहुत था। मार्ग के चौराहों पर पुलिसकर्मी आग तापते हुए पहरा दे रहे थे। इक्का–दुक्का वाहन और लोग आते–जाते दिख जाते थे। इस कड़ाके की ठंड और गहरी रात्रि में भी सुरक्षा चाक–चौबंद है।

धारणाएँ गलत भी हो सकती हैं

आज 8 जनवरी, 2025 को रात्रि के 11 बजकर 45 मिनट पर मोटरसाइकिल से प्रयागराज मेला क्षेत्र का भ्रमण कर रहा था। शंकराचार्य मार्ग पर सहसा एक सत्तर वर्षीय साधु–महात्मा को देखा कि एक भारी भरकम जड़ सहित उखाड़े हुए पेड़ का मोटा तना अपने कंधे पर बाँधकर धीरे–धीरे खींचते–घसीटते हुए अत्यंत मंथर गति से लोहे की चेक प्लेट के मार्ग पर लिये जा रहे थे। मैं उनसे दस मीटर की दूरी पर खड़ा होकर उन्हें देख रहा था और मार्ग पर खड़े दो व्यक्तियों से पूछा कि इस बार वैरागी वैष्णव खालसा किस सेक्टर में अपना शिविर लगाए हुए हैं? तभी हमने देखा कि जो बुजुर्ग संत कई कुँतल भार का जड़ सहित पेड़ का तना अपने कंधे पर खींच रहे थे, उस पेड़ की जड़ का एक भाग मार्ग पर बिछाई गई लोहे की प्लेट मार्ग का कोई जोड़ था, उसमें फँस गया है। बड़ी मेहनत और मशक्कत के साथ वे उसको खींचने का प्रयास कर रहे थे, मानो जैसे एक नंदी (बैल) खेत की मिट्टी में धँसे हल के फाल को खींच रहा हो। जब वह नहीं निकला तो वे उसको कोल्हू के बैल की तरह गोल–गोल घुमाने लगे, फिर भी उस भारी भरकम पेड़ के तने की जड़ लोहे की प्लेट से नहीं निकली और बालू में धँसती चली गई। मैं और मेरे पास खड़े अन्य दो व्यक्ति बड़े

ध्यान से उस दृश्य को देखे जा रहे थे। मेरे पास खड़े मजदूरों के मुखिया टाइप के दोनों व्यक्ति कहने लगे—देखो-देखो दारू पिया हुआ है और यह साधु लगता है, होश में नहीं है। साधु महाराज संपूर्ण दुनिया से बेपरवाह अपनी धुन में लगकर पेड़ के तने को खींचने का अथक प्रयास किए जा रहे थे। मुझसे देखा नहीं गया और मैं उनके पास गया कि उनकी सहायता करके फँसी जड़ को निकाल सकूँ। पास जाकर आग्रह करने पर अत्यंत मधुर स्वर में उन्होंने मुझे मना कर दिया। मधुर मद्धिम स्वर और चेहरे के तेज ने मुझे संवाद हेतु आकर्षित किया। मैंने पूछा, 'महाराज! कहाँ स्थान है आपका?' उन्होंने कहा कि 'हिमाचल और पुष्कर में दो स्थान है। कुंभ में यहाँ से आधा किलोमीटर की दूरी पर कुटिया है। यह लकड़ी का जड़ सहित तना यहाँ से डेढ़ किलोमीटर की दूरी से लेकर आ रहा हूँ और आधा किलोमीटर दूर और ले जाना है। चाहता तो कोई ठेलागाड़ी करके ले जा सकता हूँ।' अपने शरीर की ओर संकेत करके कहने लगे कि 'इस शरीर को आराम नहीं देना है, पुरुषार्थ करना है, जब तक इस शरीर में सामर्थ्य है, तब तक इसकी क्षमता को ईश्वर-उपासना और लोककल्याण में लगाना चाहिए। आराम देने से यह सुकुमार और कभी रोगी भी हो जाता है।' दुबारा मैंने फिर आग्रह किया कि 'मैं हाथ लगा दूँ।' बड़ी विनम्रता से उन्होंने मना कर दिया। मेरे विषय में पूछा और उसके बाद दोनों हाथ उठाकर खूब आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् मैं अपने भ्रमण के उद्देश्य से विचारमग्न होकर निकल पड़ा।

विचारों के प्रवाह में चिंतन हुआ कि कभी-कभी हम जो धारणा पाल बैठते हैं, वह सत्य के धरातल पर निर्मूल और असत्य होती है जैसा कि कुछ देर पहले उन महात्माजी के बारे में उन दोनों मजदूरों के मुखिया की धारणा कि 'यह साधु शराब पिया हुआ है, नशेड़ी है।' लेकिन पास जाकर संवाद करने पर यह धारणा एकदम असत्य निकली कि यह साधु नशे में है, बल्कि इसके विपरीत उन साधु महोदय ने जीवन की सार्थकता के एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व को प्रत्यक्ष प्रमाणस्वरूप पुरुषार्थ दिखाकर और संक्षिप्त मधुर आकर्षक वाणी में मुझमें संप्रेषित कर चुके थे।

अत: मैंने निष्कर्ष निकाला कि कुंभ में आए संतों का दर्शन करें, परंतु बिना किसी धारणा के बिना किसी पूर्वाग्रह के, तभी इस महाकुंभ का लाभ मिल सकता है। न जाने किस कंदरा-गुफा से कोई सिद्ध-संत आकर आपको दर्शन देकर उपकृत कर दे। हीरे के एक टुकड़े को पाने के लिए लाखों खंडों के टुकड़े को हीरा मानकर ही खोजा और ढूँढ़ा जाता है, तब जाकर एक हीरे का खंड मिलता है। यदि सभी को हम कंकड़-पत्थर मान लेते तो उस हीरे की सुंदरता तथा उपयोग से समाज वंचित हो जाता।

संवाद करते-करते रात्रि के बारह बज चुके थे। कड़ाके की ठंड थी— घना कोहरा अपना साम्राज्य फैला चुका था, लेकिन इधर कोहरा बढ़ता जा रहा था तो एक ओर गंगाजी यमुनाजी का विशाल संगम क्षेत्र अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा और दिव्यता-भव्यता से मुखरित होता जा रहा था। रात्रि की नीरवता और निस्तब्धता साधु-संतों के पंडाल में हो रहे अखंड कीर्तन से वातावरण भक्तिमय स्वरों से गुंजायमान है। कड़ाके की ठंड में भी सुरक्षा की दृष्टि से सुरक्षा-प्रहरी अपने मोर्चों पर जीवटता से पहरा दे रहे हैं।

अर्ध निर्माणाधीन संस्थाओं के पंडाल और विराट् भव्य प्रवेश द्वार इस शीत में उत्तुंग आकाश की ओर इस भयंकर शीत में खड़े होकर कह रहे हों कि सदियों से इस तीर्थराज प्रयाग के कुंभ में हम सतत उपस्थिति दर्ज कराते रहे हैं। अनेक तीर्थयात्रियों को प्रवेश और निवास देते आ रहे हैं। अन्य क्षेत्र के पंडाल तैयार किए जा रहे हैं, जिसमें सैकड़ों तीर्थयात्रियों को अत्यंत श्रद्धा से भोजन प्रसाद ग्रहण कराया जाएगा। ये भव्य विशाल निवास हेतु बनाए गए शिविर और पंडाल तथा अन्न-क्षेत्र इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि कुंभ में आने वाला कोई भी यात्री भूखा और निराश्रित नहीं रह सकता, सभी को भोजन और निवास सहज नि:शुल्क रूप से मिलता ही है।

प्रात: 8 बजकर 30 मिनट पर संगम लोअर मार्ग पर सेक्टर-21 बालेश्वर मंदिर, अक्षयवट चौराहा, ऐरावत द्वार के समीप देखा कि साठ-पैंसठ वर्ष के वैष्णव तिलक लगाए महात्मा अल्पाहार, जिसको संत समाज बाल-भोग कहता है, बड़ी श्रद्धा से वितरित कर रहे हैं, वहाँ रुक गया। भीड़ पचास-साठ

की संख्या में रही होगी। साधु महाराज बड़ी श्रद्धा से बालभोग प्रसाद का वितरण कर रहे थे। मार्ग में चलते साधु-महात्मा, सफाईकर्मी और पुलिसकर्मी दोनों में आलूदम, जिसको आलू-कचालू कहा जाता है, लेते-पाते-खाते खाली दोना कूड़ेदान में डालते चले जाते। खड़ा-खड़ा मैं देखता रहा। महात्माजी की दृष्टि मेरे ऊपर पड़ी और उन्होंने बालभोग का एक दोना मद्धिम हास्य के साथ मुझे पकड़ा दिया। अब तो लेना और पाना (खाना) ही था।

तभी मन में सहसा विचार आया कि इनके शिविर में जाकर देखते हैं। अंदर प्रवेश कर देखा तो अत्यंत सादगीपूर्ण व्यवस्था थी। आग जल रही थी, उसके समीप दो साधु और कुछ गृहस्थ साधक बैठे थे। मुझे भी एक साधु महाराज, जो संभवत: उस स्थान की व्यवस्था के प्रमुख लग रहे थे, ने बैठने का संकेत किया; मैं बैठ गया। वहाँ एक साधु महाराज लगभग सौ वर्ष के भी बैठे थे। उनके सामने कुर्सी पर ही एक थाली रखी थी, जिसमें कुछ साग थे, कुछ देर बाद दो फलाहार की पूड़ी आई तब तक वे हाथ धो चुके थे। फलाहार की पूड़ी आने पर व्यवस्थापक साधु ने कहा कि 'गरम-गरम बनाने में देर हो गई, अब पा लीजिए।' परंतु सौ वर्षीय बुजुर्ग साधु ने सहजता से कहा कि अब नहीं। व्यवस्थापक साधु ने अति आग्रह किया तो वे बड़ी दृढ़ता और नम्रता से बाले कि 'मेरा नियम क्यों तोड़ना चाहते हैं, मुझे अपने वर्षों से स्थापित नियम का पालन करने दीजिए कि हाथ धोने के बाद अब दुबारा नहीं पाऊँगा।' इतना सुनते ही व्यवस्थापक साधु सहमकर तुरंत चुप हो गए।

आग के समीप कुछ माताएँ भी बैठी थीं, जो कल्पवासी थीं। उनमें से एक ने कहा कि हमारा पूर्णिमा से पूर्णिमा तक कल्पवास प्रारंभ हो जाएगा, जिसमें गंगाजी में दो-तीन बार स्नान, एक समय स्वपाकी भोजन, जप-ध्यान, सत्संग इत्यादि दिनचर्या में सम्मिलित रहेगा। वे पचपन-साठ वर्षीय माताजी अपने पतिदेव के साथ निरंतर बारह वर्षों से पौष पूर्णिमा से माघ पूर्णिमा तक प्रयागराज संगम में कल्पवास करती आ रही हैं। अपने पति के विषय में बताया कि प्रात: पाँच बजे से दस बजे तक पूजन और जप में बैठे रहते हैं। तभी वहाँ के व्यवस्थापक साधु ने बताया कि कल्पवास का जीवन साधनापूर्ण

और नियम-संयम का होता है। इसमें व्यक्ति एक माह तक तपस्वी की भाँति तपते हुए तप करता है।

आज प्रात: संगम में जाकर नाव द्वारा स्नान हुआ। तत्पश्चात् सेक्टर-19 में भूमा निकेतन के शिविर में भारतीय शिक्षा बोर्ड के कार्यकारी अध्यक्ष श्री एन.पी. सिंह पूर्व IAS से मिलने गया, जहाँ स्वामी भूमानंदजी का दर्शन और सान्निध्य प्राप्त हुआ। वहाँ से हम दोनों दिव्य प्रेम सेवा मिशन के सेक्टर-6 में स्थित शिविर में आयोजित उनके स्थापना दिवस के कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए प्रस्थान कर गए। दिव्य प्रेम सेवा मिशन के शिविर में आयोजित कार्यक्रम में श्री एन.पी. सिंह जी को कार्यक्रम की अध्यक्षता करनी थी, जिसमें पूज्य गौरांग दास प्रभुजी मुख्य वक्ता थे। वहाँ पहुँचकर आदरणीय आशीष भैयाजी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। जल निगम के MD श्री रमाकांत पांडेजी वहाँ श्री एन.पी. सिंह जी से मिलने आए, जिनके चेहरे पर कुंभ में निर्बाध रूप से पानी की आपूर्ति करने के कार्य का तनाव और दबाव के साथ संतोष का भाव स्पष्ट रूप से दिख रहा था। कुछ नए महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ बातचीत के बाद हम दोनों ने एक साथ भोजन के उपरांत पूज्य गौरांग दासजी की प्रतीक्षा करने लगे। गौरांग दासजी 'इस्कॉन' द्वारा संचालित 'गोवर्धन इको विलेज' के निदेशक हैं। IIT से इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भारतीय सनातन संन्यास मार्ग का अवलंबन अपने जीवन को सार्थक बनाने और ईश्वरीय कार्य के लिए समर्पित कर दिया। लगभग पचपन वर्षीय गौरांग दासजी निश्चल हास्य मुखारविंद से कक्ष में प्रवेश करते हैं और बड़े ही आत्मीयता और उत्साह से वहाँ बैठे हम चार-पाँच लोगों से मिलते हैं। वहाँ कुंभ के विषय में अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटनाओं और इतिहास के विषय में अनुभवजन्य वर्णन सुनने को मिला, जिसमें बताया गया कि कुंभ में करोड़ों लोग आते हैं और इस वर्ष तो यहाँ लगभग चालीस करोड़ लोग आने वाले हैं, जिसमें जीवन निर्वाह हेतु लगभग सभी सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं, केवल श्मशान के अतिरिक्त। अब प्रश्न हुआ कि यह शोध का विषय है कि यहाँ श्मशान भूमि क्यों नहीं बनाई जाती है?

सेक्टर-20 अखाड़ों के शिविर से सेक्टर-19 की ओर लोअर संगम

मार्ग पर जा रहा था। कुछ दूरी पर जाने के बाद मार्ग के बीचोबीच पचास साधु–संतों और अन्य लोगों की भीड़ देखी, जो लोग मार्ग अवरुद्ध कर बीच में ही तख्त और धूना लगाकर बैठे थे। समीप जाने के बाद ज्ञात हुआ कि संबंधित सेक्टर के बिजली, पानी, शौचालय इत्यादि की अव्यवस्था को लेकर असंतोष व्यक्त करते हुए अपनी माँगों के लिए धरना दे रहे हैं। वहाँ केवल लँगोट पहने बैठे वैष्णव–संत त्यागीजी हैं, जिनकी आयु साठ वर्ष से पार की है। शरीर हृष्ट–पुष्ट है, साधना और संयम के कारण शरीर पर उम्र का प्रभाव नहीं है, असीम ऊर्जा है, लेकिन वाणी अत्यंत मधुर और आकर्षक सम्मोहित करने वाली। उनके साथ तीस–चालीस संत बैठे और खड़े हैं। त्यागीजी वहाँ उपस्थित सभी संतों और तमाशा देख रहे तीर्थयात्रियों से चाय पीने और अन्न–क्षेत्र में भोजन करने का आग्रह कर रहे हैं। उनके शिष्य मार्ग पर खड़े लोगों को बड़े ही प्रेमपूर्वक केतली से गिलास में चाय का वितरण कर रहे हैं। वहाँ प्रशासन के भी कुछ लोग खड़े हैं, जिसमें तीन–चार व्यक्ति साधु–संतों की बड़ी विनम्रता के साथ हाथ जोड़कर धरना समाप्त करने की लिए प्रार्थना कर रहे हैं। उनमें एक चालीस साल के बिजली सप्लाई के ठेकेदार और तीस–पैंतीस साल के पानी की सप्लाई से संबंधित महानुभाव हैं, जो संतों से प्रार्थना कर रहे हैं। उनकी प्रार्थना और समझाने की शैली अत्यंत ही प्रभावपूर्ण और संयमित तथा कुशल प्रशासनिक क्षमता से परिपूर्ण थी। बिजली तथा पानी की सप्लाई से संबंधित व्यक्तियों की प्रार्थना से संत लोग लगभग संतुष्ट ही हो गए थे और ऐसा लग रहा था कि अब धरना समाप्त कर देंगे। तभी मैंने देखा कि एक तीस–पैंतीस साल का छोटे कद–काठी के चश्मा लगाए व्यक्ति ने अत्यंत अपरिपक्वता से वार्त्ता प्रारंभ कर दी। उसकी अशिष्टता युक्त भाव–भंगिमा और वाणी ने बनी–बनाई बात बिगाड़ दी और पूर्व के दो व्यक्तियों के प्रयासों पर पानी फेर दिया। पता करने पर ज्ञात हुआ कि वह युवक इस सेक्टर का सेक्टर मजिस्ट्रेट है, जो SDM रैंक का अधिकारी है। विचार करने पर पाया कि केवल परीक्षा देकर बड़ा पद पा जाने से ही आदमी प्रशासनिक योग्यता से परिपूर्ण नहीं होता, बल्कि

उसको अपने IQ तथा मेहनत कर फील्डवर्क करके भी अपनी प्रशासनिक क्षमताएँ विकसित करनी होती हैं, अन्यथा वह समाज के लिए सार्थक नहीं हो पाएगा और अपनी प्रशासनिक अकुशलता से जनता को कष्ट ही देगा। अपितु यहाँ संतों की माँग अत्यंत जायज और अपरिहार्य थी, जिसको पूरा करना अत्यंत सहज भी था। बिजली, पानी, शौचालय तो मूलभूत सुविधाएँ हैं, जिनको माननीय मुख्यमंत्री पूज्य योगी आदित्यनाथ जी के निर्देश पर सबको अतिशीघ्र और समय से उपलब्ध कराने का निर्देश है।

12 जनवरी, 2025 की सायं को ही मैं महानिर्वाणी अखाड़े के अपने परिचित संत की कुटिया में आ गया। जैसे ही प्रवेश द्वार पर पहुँचा, वैसे ही कड़ा पहरा दे रहे सी.आर.पी.एफ. के जवानों ने प्रवेश से रोक लिया। मैंने आग्रह करके कहा कि आप मेरे साथ साधु महाराज की कुटिया तक चलो, यदि वे नहीं पहचानेंगे और वापस जाने के लिए कहेंगे तो आपके साथ ही वापस लौट आऊँगा। वह गया, वहाँ संत मिले और सहर्ष स्वागत किया। तत्पश्चात् संतरी सुरक्षा से संतुष्ट होकर चला गया। महाराज ने पूछा, 'यहीं रुकोगे?' मैंने कहा, 'हाँ' तो उन्होंने कहा कि ठीक है, यहीं धूने के पास ही स्लीपिंग बैग डालकर सो जाना। फिर उन्होंने कहा कि जाओ, भोजन चल रहा है, भोजन कर लो। एक बड़े पंडाल में भोजन कराया जा रहा था। भोजन का पंडाल इतना बड़ा था कि कम-से-कम एक हजार लोग एक साथ बैठकर भोजन ग्रहण कर सकते थे। मैं भी बैठ गया। भोजन में हलवा, पूड़ी, चावल, दाल, सब्जी सब था। भोजन के बाद पचास मीटर दूर कुटिया और धूना के पास मैं आ गया। वहाँ मध्य प्रदेश के सागर के एक सज्जन बैठे थे, जो चाय-बिस्कुट की दुकान वहाँ के एक कस्बे के बस स्टैंड पर तीस वर्षों से चला रहे थे। तीन बच्चों और पाँच नाती-पोतों के स्वामी हैं। अत्यंत संतुष्ट और संतोषी तथा सात्त्विक और धार्मिक व्यक्ति थे। चारों धामों—गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी, बदरीनाथ, केदारनाथ, पूर्णागिरी, पशुपतिनाथ, द्वादश ज्योतिर्लिंग इत्यादि तीर्थों की यात्रा सपत्नीक कर चुके थे, पास आए और बार-बार कह करे थे कि नैमिषारण्य का दर्शन करना है। कुछ देर वार्त्ता करने के बाद वे

चले गए। वास्तव में धर्म को धारण करने वाले जनसामान्य लोग ही हैं भारत में धर्म के ज्ञाता। बड़े-से-बड़े अफसर से लेकर चाय की दुकान चलाने वाले, दोनों तरह के व्यक्ति मिलेंगे। यही भारत का वैशिष्ट्य है। अध्यात्म और धर्म के नाम पर कोई भेदभाव नहीं है, व्यक्ति अपनी उपासना-पद्धति चुनकर उसमें उपासना करने के लिए स्वतंत्र है।

साधु महाराज की कुटिया फूस की बनी थी, जिसके अंदर परदा डालकर दो भाग किया गया था और नीचे पुआल डालकर दरी बिछाकर कालीन डाली गई थी। कुटिया के अंदर 6-7 लोग आराम से सो सकते थे। कुटिया के बाहर धूना था, जिसके ठीक बगल में एक ओर मैं अपने स्लीपिंग बैग में सो गया।

प्रात: साढ़े तीन बजे नींद खुल गई। देखा, अधिकांश लोग सो रहे हैं, लेकिन कुछ साधु नित्य-कर्म और नहाने-धोने का उपक्रम कर रहे हैं। चार बजे मैं भी उठकर नित्यकर्म से निवृत्त हो गया। तब तक देखा कि बगल की कुटिया के महाराजजी अपना हवन प्रारंभ कर चुके थे और कुछ अन्य साधु अपने-अपने धूने के समीप बैठकर माला लेकर जप कर रहे थे। अत्यंत ही विलक्षण और अद्‌भुत वातावरण था।

सेक्टर-20 में महानिर्वाणी अखाड़े से लगा हुआ ही निरंजनी अखाड़े का शिविर है। प्रात: भ्रमण करने निरंजनी अखाड़ा परिसर के शिविर में गया। भव्य मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही एक तीस फुट चौड़ा मार्ग है, जिसके दोनों ओर महंत साधु-संन्यासियों की लगभग चालीस कुटियाँ बनी हुई हैं। सभी कुटियों के सामने धूना प्रज्वलित है, जिसके मुख्य गद्‌दी पर महंत और उसके अगल-बगल अन्य साधु-संन्यासी बैठे हुए हैं। इसमें कुछ अवधूत (जिनके शरीर पर केवल भस्म ही लगी है) हैं। भक्तगण उनके समीप जाकर श्रद्धापूर्वक प्रणाम कर माथे पर भस्म-तिलक लगाकर आशीर्वाद ले रहे हैं। वहीं एक कुटिया के सामने ही एक भक्त बुजुर्ग महिला ब्रेड पकौड़ा बनाकर भक्तों को खिला रही है। दूसरी कुटिया के सामने खीर वितरित की जा रही है। एक अन्य कुटिया के सामने दोनों में हलुआ और गुलाबजामुन भर भरकर बाँटा जा रहा है। सबसे

विशेष बात यह कि गंगाजी स्नान कर आने वाले श्रद्धालु, वे नवयुवक हों या फिर बुजुर्ग, इन भाँति-भाँति के स्वादिष्ट व्यंजन लेकर खाने की बजाय, साधु-संतों को नमन कर आशीर्वाद लेने में अधिक इच्छुक दिख रहे हैं, हालाँकि कुछ सफाई कर्मचारी अवश्य नाश्ते के प्रति आग्रही हैं। एक युवक ने देखा कि एक दुबला-पतला बाह्य (आँख) दृष्टिहीन व्यक्ति कोने में खड़ा है। उसके पास जाकर पूछता है कि 'कहाँ से आए है सूरदास!' तो उत्तर मिलता है कि 'बाँदा से।' कुछ खाने को मिला? युवक के इस प्रश्न पर सकुचाते हुए उस अंधे व्यक्ति ने गरदन नहीं में हिलाया। तब उस युवक ने कहा कि 'यहाँ एक बाबाजी बाँट रहे हैं, थोड़ी देर प्रतीक्षा करिए, मैं लेकर आ रहा हूँ।' तीन मिनट बाद ही वह एक दोने में हलवा, गुलाबजामुन और मिल्ककेक लेकर उस व्यक्ति को देता है। दिव्यांग व्यक्ति मृदुल और हलकी आवाज में धन्यवाद करता है। बिना उसके धन्यवाद का उत्तर दिए वह युवक वहाँ से आगे बढ़ जाता है। खास बात यह है वह युवक भी श्रद्धालु है, परंतु उसने उस अखाड़े में वितरित किए जा रहे किसी भी खाद्य-सामग्री को वहाँ ग्रहण नहीं करता है और वहाँ से बिना कुछ लिए चला जाता है।

एक कुटिया के सामने एक बुजुर्ग नागा संन्यासी हैं, जिनके शरीर पर इस कड़ाके की शीत में भी मात्र एक पतली हलकी शॉल है। उनके समक्ष एक भक्त कपड़ों का बड़े-बड़े बंडल लाकर रख देते हैं। तब उन महात्माजी ने कहा कि 'जाओ, इसको सभी साधुओं में बाँट दो।' संयोग से इन्हीं की कुटिया से हलवा, गुलाबजामुन और मिल्ककेक भी बँट रहा था। देखने से ही कोई सिद्ध और सम्मानित संत ज्ञात हो रहे थे, जिनको लोग अत्यंत श्रद्धा से प्रणाम कर हाथ जोड़े खड़े थे।

निरंजनी अखाड़े के देव कार्तिकेयजी हैं, जिनकी प्रतिमा अखाड़े के मध्य एक अस्थायी मंदिर में स्थापित है और कार्तिकेयजी मंदिर के समीप ही निरंजनी अखाड़े का भव्य उच्च ध्वज लहरा रहा है। यहाँ यह उल्लेखनीय होगा कि सभी अखाड़ों का अपना अपना एक देव या ऋषि तथा ध्येय-वाक्य होता है।

अक्खड़ साधु

अखाड़े में अमृत-स्नान की तैयारियाँ दो बजे से ही प्रारंभ हो गई थीं। ध्वज लगाया जा रहा था। साधु श्रद्धालुओं को कुछ विशेष स्थानों से फक्कड़ी भाषा में हट जाने के लिए कह रहे थे।

प्रात: 3 बजकर 30 मिनट पर एक अखाड़े के धूने के पास बैठा था। तभी उस धूने के साधु आए और अपने एक शिष्य को चाय बनाने के लिए आदेशित किया। साधु बाबा का मूड कुछ उखड़ा-उखड़ा था। धूने के पास ही एक 25-26 वर्ष का युवक बैठकर मोबाइल देख रहा था। धूने पर ही बैठे साधु महाशय उस युवक पर भड़क उठे, सुबह-सुबह ही मोबाइल में घुसा हुआ है गंगाजी के पावन तट पर। कुंभ में बैठा है, कुछ जप-ध्यान क्यों नहीं करता? समझ ही नहीं है, जिसको देखो मोबाइल में (अंगुली से एक विशेष संकेत करते हुए) में ही टिप-टॉप करने में लगा हुआ है। युवक झटपट मोबाइल रखकर गरदन नीचे किए हुए चुपचाप नजरें झुकाए बड़ी ही मासूमियत से बैठा रहा।

अभी साधु महाशय युवक पर चढ़ाई किए ही हुए थे, तभी एक पचपन-साठ साल का व्यक्ति भगवा रंग का अंगवस्त्र तथा उत्तरीय पहने आकर धूने पर बैठ जाता है। बैठते ही उसके कुछ निजी अंग गमछे से दिख जाते हैं। अब तक साधु महाराज की भृकुटी चढ़ चुकी थी। गमछा पहने साधु से परिचय लेने लगे—कहाँ से आया है? उसने कहा—फलाँ आश्रम से। वहाँ क्या करता है? ऐसे ही सेवा करता हूँ। क्या मजदूरी कार्य है? नहीं। तो कुछ काम दिया होगा? इतने प्रश्नों की झड़ी और कठोर नजरों के कारण उस साधु की सिट्टी-पिट्टी गुम हो चुकी थी। अब साधु महाराज ने उसको हड़काना प्रारंभ किया। नागा बनकर भभूतिया में सम्मिलित मत होना, नहीं तो मेरी नजरों में चढ़ गया है, ढोंगी कहीं के। तभी चाय बनाने वाले युवक ने कहा कि चाय बन गई। साधु महाराज ने कहा कि बन गई तो दे सबको। हाँ, यहाँ बहुत फर्जी साधु भी बैठे हैं, उनको मत देना।

श्रेष्ठ जनों से हम सुनते आ रहे हैं कि गंगा-यमुना-सरस्वती के संगम क्षेत्र के कुंभ में कोई निराश्रित और भूखा नहीं रह सकता। एक मित्र अपने साथ तीन

बुजुर्ग माताजी और दो मित्रों के साथ प्रातः चार बजे अपने वहाँ से 14 घंटे की यात्रा करके प्रयागराज महाकुंभ पहुँचे। नाव से स्नान करने के पश्चात् महाकुंभ क्षेत्र में साधु-महात्माओं के दर्शन हेतु गए। रात्रि भर यात्रा के कारण वरिष्ठ और अन्य जनों का थकना स्वाभाविक था और बुजुर्ग माताजी लोग तो उम्र के प्रभाव के कारण कुछ अधिक ही थक गई थीं। एक तो रात भर यात्रा करना, तत्पश्चात् महाकुंभ में अत्यधिक भीड़ के कारण टहलते हुए पैदल चलकर संतों का दर्शन, ये सब करते-करते दोपहर का एक बज गया। प्रयागराज कुंभ से उन लोगों को उसी वाहन से काशी जाना था। मार्ग परिवर्तन अधिक होने के कारण बहुत भटकना पड़ा। भोजन-प्रसाद का आग्रह करने पर उन लोगों ने कहा कि आगे राजमार्ग पर जाकर किसी होटल में कर लेंगे। जब प्रयागराज और काशी हाइवे की ओर बढ़े तो राजमार्ग पर पहुँचने के बाद मार्ग के मध्य का डिवाइडर बंद मिला। अब एक ही मार्ग बचा था कि वापस पुनः मेला क्षेत्र में आएँ और दूसरे मार्ग से काशी जाने वाले मार्ग पर पहुँचें। तभी अचानक मैंने कहा कि 'आप लोग भोजन नहीं किए अब जिधर से जाना है, उधर ही हरिहर कैलाश आश्रम है, मेरे कुछ परिचित संन्यासी हैं, आप लोग वहाँ शुद्ध सात्त्विक भोजन प्राप्त करके जाइए।' उन लोगों की स्वीकृति मिलने के बाद मैंने फोन से ही वहाँ वार्त्ता कर भोजन के प्रबंध एवं उपलब्धता के विषय में आग्रह किया तो मित्र संन्यासी महोदय ने सहर्ष सभी को आमंत्रित कर लिया। वहाँ सभी लोगों ने पहुँचकर शुद्ध सात्त्विक भोजन प्रसाद ग्रहण किया। बाद में चर्चा और संपूर्ण घटनाक्रम के विश्लेषण के पश्चात् यहाँ यह बात अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इस पुण्य-पवित्र-पावन भूमि में कोई भूखा और निराश्रित नहीं रह सकता।

महाकुंभ क्षेत्र अपने वैभव के चरमोत्कर्ष पर आ चुका है। चहुँओर तीर्थयात्रियों और भक्तों की भीड़ चली आ रही है। रात्रि में भी संगम पर हजारों श्रद्धालु स्नान करते दिख रहे हैं—चाहे रात्रि के बारह से दो ही क्यों न बज रहे हों। संगम तट पर खस की चटाई बिछाई जाती है, जिससे कि स्नान के पूर्व और स्नान के बाद स्नानार्थियों के पैरों में रेत तथा बालू नहीं लगती और रखने पर उनके कपड़े भी गीले नहीं होते। उसी खस के बिछावन पर सैकड़ों तीर्थयात्री

पालीथीन बिछाकर चादर डालकर शयन और विश्राम कर रहे हैं। इसमें वे भक्त हैं, जो तीन-चार घंटे में ही स्नान करके पुनः अपने निवास और गंतव्य पर वापस चले जाएँगे।

कुंभनगरी मनमोहक प्रकाश-स्तंभों से जगमगा रही है। चहुँओर उज्ज्वल प्रकाश प्रकाशित हो रहा है। हजारों प्रकाश-स्तंभों का प्रकाश जब रात्रि में माँ गंगा और यमुनाजी के जल में पड़ता है तो यह निराली छटा अद्भुत एवं विहंगम होती है। पतितपावनी के शीतल पवित्र जल से टकराकर प्रकाश किरणें कई गुना प्रकाशित हो उठती हैं। कुंभनगरी के ऊपर बने एक राजमार्ग और दो रेलमार्ग के पुल भी सुंदर प्रकाश बल्बों से सजाए गए हैं, ये रंग-बिरंगी लाइट कुंभ क्षेत्र में आकर्षक रूप में दिखाई देती हैं।

आर्थिक स्वावलंबन

26 जनवरी के सायं को सेक्टर-20 के अखाड़ों के सामने वाले मार्ग पर टहल रहे थे, साथ में मित्र और उनका परिवार था। उन लोगों को कुछ भूख सी महसूस हुई। तभी स्कूटी पर एक युवक इडली बेचते हुए दिखा। वे लोग इडली खाने लगे। अवसर देखकर युवक से वार्त्ता प्रारंभ की। मैंने पूछा कि प्रतिदिन कितना कमा लेते हो? उसने कहा कि 'सुबह एक घंटा बेचता हूँ तो लगभग दो हजार की बिक्री हो जाती है और सायं को डेढ़ घंटे में ढाई हजार की। पचास प्रतिशत मेहनत-मजदूरी की लागत और पचास प्रतिशत शुद्ध लाभ हो जाता है।' अर्थात् प्रतिदिन ढाई घंटे में ढाई हजार का शुद्ध लाभ।

27 जनवरी को हम लोग महाकुंभ क्षेत्र में सेक्टर-19 में शंकराचार्य मार्ग पर स्थित गंगोत्तरी के 'ईशावास्यमिदम् आश्रम' के शिविर में बैठे थे। साथ में मित्र प्रकाश मिश्र और गंगोत्तरी से पच्चीस किलोमीटर तथा गोमुख से पाँच किलोमीटर दूर तपोवन के तपस्वी संत श्री नागरदासजी महाराज थे। नागरदासजी तपोवन में दुर्गम स्थान और अति विषम ऋतु में 16 वर्षों से गुफा में निवास करते हुए तप कर रहे हैं।

हम लोग अध्यात्म के विषय पर वार्त्ता कर ही रहे थे कि दो महिलाएँ आईं।

एक की उम्र लगभग पैंतालीस वर्ष और दूसरे की तीस वर्ष रही होगी। चेहरे पर अत्यंत मासूमियत और वाणी में मधुरता थी, लेकिन दुर्भाग्य से सबकुछ बनावटी था। आते ही स्वागत-कक्ष पर बैठे कार्यकर्ता भक्त से दोनों ने कहा, 'छोटी बहन का विवाह करना है, कुछ मदद कर दीजिए।' स्वागत-कक्ष वाला कार्यकर्ता बहुत ही तीक्ष्ण बुद्धि का था और अपनी ओर आई बला टालते हुए हमारी और नागरदासजी की ओर संकेत करते हुए कहा कि 'हमसे नहीं, उन महाराजजी से बात करिए।' हम लोग उन दोनों का मंतव्य समझ गए कि ये कहीं-न-कहीं झूठ बोलकर ठगी कर रही हैं। फिर क्या था, पूछा गया कि वे कहाँ की रहने वाली हैं, कुछ आधार या अन्य आई डी है क्या? उत्तर मिला—नैनी के रहने वाली हैं और आधार तथा मोबाइल घर पर ही भूल गए हैं। संयोग से हमारे मित्र नैनी के ही रहने वाले हैं। तुरंत ही उन्होंने पूछा कि आपका ग्राम प्रधान कौन है? इतने में माँगने वाली महिलाओं के हाव-भाव में सकपकाहट प्रारंभ हो गई थी। बता नहीं पाई कि उनका ग्राम प्रधान कौन है। पूछा—घर किधर है? तो इधर-उधर की बातें करते हुए सही पता भी नहीं बता रही थीं। तब उनसे कहा गया कि फोन नंबर लीजिए और ग्राम प्रधान से पत्र लिखवाकर आइए, आप की बहन के विवाह की व्यवस्था हो जाएगी। इतना सुनते ही उनकी वाणी में तिलमिलाहट भरी घबराहट एवं चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं तथा खिसकने का प्रयास करने लगीं और चली ही गईं।

यहाँ कुंभ में बहुत सारे ऐसे लोग भी आते हैं, जो निश्छल संतों और तीर्थयात्रियों को ठगने का प्रयास करते हैं और संत भी इतने सरल हैं, यह जानते हुए कि ये सब झूठ बोलकर पैसा माँग रहे हैं, कुछ-न-कुछ दे ही देते हैं और कहते हैं, जाने दीजिए, इनको भी अपने परिवार का पेट पालना है। यह है कुंभ की महिमा। यहाँ कोई भी निराश्रित नहीं रहता है।

27 जनवरी की प्रातः हरिहर कैलाश आश्रम रेलवे के ब्रिज की तरफ से आ रहे थे। एक बैटरी रिक्शावाला खाली आता दिखाई दिया। हम उस पर बैठकर पचास मीटर दूर अपनी बाइक तक आए। उसी दौरान उससे पूछा कि 'रोज कितना कमा लेते हो?' चौबीस-पच्चीस साल के युवक ने कहा कि 'साहब,

झूठ नहीं बोलूँगा, कुंभ क्षेत्र में हूँ, कल अर्थात् 26 जनवरी को दस हजार एक सौ सत्तर रुपए कमाया और परसों अर्थात् 25 जनवरी को साढ़े छह हजार कमाया।

ये दोनों उदाहरण एवं संवाद इस बात के प्रमाण हैं कि महाकुंभ के समय हजारों लोगों को रोजगार मिलता है। अनेक परिवारों का पालन-पोषण होता है। अर्थव्यवस्था प्रगति की ओर गतिशील होती है।

29 जनवरी : महाकुंभ

श्रद्धालुओं का समूह सभी दिशाओं से संगम की ओर बढ़ रहा था। कोई अपने बूढ़े माता-पिता का हाथ पकड़े पैदल चल रहा, कोई समूह एक ही नारा-एक ही नाम 'जय श्रीराम', 'जय श्रीराम' का घोष करते हुए चल रहा है। जिसको देखो, चलते ही जा रहा है। मार्ग लंबा है, कठोर परिश्रम से पैदल चल रहे हैं लोग। इस परिस्थिति में भी मुख-मुद्रा प्रसन्न है, अद्भुत उमंग है, उत्साह है, शारीरिक-मानसिक सक्रियता के साथ आध्यात्मिक चैतन्यता है।

गंगाजी में आस्था की डुबकियाँ लगाने के बाद तो मानो तन-मन-आत्मा स्वर्गिक आनंद से परिपूर्ण हो गई हो। व्यक्ति अभिभूत हो गया हो। कष्टसाध्य यात्रा का सारा कष्ट त्रिवेणी की जलधारा में तिरोहित हो गया हो।

बाल्यावस्था निश्छल, निष्कपट, सरल, सहज, सकारात्मक होती है। महाकुंभ में अपने पिता और पितामह के कंधे पर बैठे बालक-बालिकाएँ अपने में ही मग्न हैं। कोई कंधे पर बैठे-बैठे अपने में मग्न होकर पिपिहरी बजा रहा है तो कोई पितातुल्य व्यक्ति के कंधे पर बैठे-बैठे दोनों हाथों से बैठाने वाले का मस्तक पकड़े-पकड़े आते-जाते चलते-फिरते जनसमुदाय को बड़े ही कौतूहल से विस्मित होकर निहार रहा है। कोई अपनी माँ के कंधे से लिपटा पीछे से ही शिविरों के भव्य तोरणद्वारों को निहार रहा तो किसी की दृष्टि मार्ग के किनारे खिलौनों की दुकानों पर है।

कुछ बड़े बच्चे अपने वयस्क स्वजनों का हाथ पकड़े चल रहे हैं। कहीं-कहीं उनके स्वजन और उनका समूह रुकता है तो वहीं अपने खिलौनों के साथ खेलने की जुगत में लग जाते हैं और जब समूह अपने गंतव्य की ओर अग्रसर

होता है तो पुनः अपने स्वजन का हाथ पकड़े आगे बढ़ चलते हैं।

महाकुंभ में आए इन बालकों के बालसुलभ मन-मस्तिष्क में क्या-क्या कल्पनाएँ चल रहीं, यह भी एक अंदाजा या यह कहें कि कल्पना का ही विषय है और उसको बालसुलभ मन से ही किसी वयस्क को चिंतन-मनन करना पड़ता है। उन बालकों को क्या कल्पना है कि कितना चलकर हम क्या करने जा रहे, इससे क्या होने वाला या फिर यह कुंभ क्या है। यहाँ स्नान करने से क्या होगा, यहाँ इतने लोग क्यों एकत्र हुए हैं? इसका विश्लेषण अभी वह बालसुलभ मन-मस्तिष्क एवं चेतना नहीं कर सकती, अपितु जब वे वयस्क और बुजुर्ग हो जाएँगे तो उनके स्मृति-पटल रूपी कोश से इसके तत्त्व अवश्य समग्रता में मुखरित होंगे।

महाकुंभ : आर्त पुकार

प्रयागराज महाकुंभ का त्रिवेणी से लेकर गंगा-यमुनाजी का संपूर्ण तट स्नानार्थियों से खचाखच भरा हुआ है। श्रद्धालुओं का विशाल अति सघन जनसमूह घाटों पर अपने स्वजनों और परिजनों के साथ आस्था की डुबकी लगाने की जुगत में हैं। वस्त्र इत्यादि उतारकर समूह का कोई एक व्यक्ति वस्त्र एवं वस्तुओं की रखवाली कर रहा है, बाकी अन्य समूह के सदस्य स्नान कर रहे हैं। जनता इतनी उमड़ पड़ी है कि वस्त्र निकालकर गंगाजी के जल तक जाने और आने को भी दुष्कर प्रयास करने पड़ रहे हैं। इसी क्रम में वस्त्र कहीं और उतारे हैं, नहाने के बाद पहुँच कहीं और जा रहे हैं।

महाकुंभ प्रशासन द्वारा स्थापित ध्वनिविस्तारक यंत्रों से अपनों (स्वजनों) के भूले-भटके बिछड़े स्वजनों के नाम की घोषणाएँ हो रही हैं। कभी-कभी कर्मचारी सूचना देते-देते उन व्यक्तियों को देखता है, जो कि अपने स्वजनों से बिछड़कर अत्यंत व्याकुल हैं तो सीधे माइक उन्हीं को पकड़ा देता है कि लो, आप अपने अनुसार जो बोलना चाहते हो, स्वयं अतिशीघ्र बोलो। साथ में यह भी निर्देश देता है कि 'खोजा-पाया लकड़ी का टावर' अवश्य बताएँ। या अन्य जो उसकी सुविधानुसार हो वह बताएँ।

जब बिछड़े हुए व्यक्ति के हाथ में माइक आता तो उसकी आर्त पुकार संपूर्ण महाकुंभ में गूँज उठती है। कोई स्त्री बोलती है, अपना नाम लेकर अपने पति को पुकारती है और जोर-जोर से व्यग्र होकर कहती है, 'हम तोहार पत्नी हम ईहवां बानी, जल्दी आ जा।' कोई व्यक्ति करुण स्वर में अपने परिजनों को पुकारता है और अपनी सूचना संक्षिप्त में संप्रेषित करता है। कोई नवयुवक अपने साथियों को व्यग्रता से पुकारकर सूचना देता है कि फलां स्थान पर पहुँचो, मैं भी पहुँच रहा हूँ। कोई अपनी क्षेत्रीय भाषा में अपने साथियों को पुकारता है तो कोई रुदन करते हुए कहता है कि 'कहाँ होऊँ हो हम ईहवां बानी, आ के ले जा हमके, तो कोई एक ही साँस में अपने चार-पाँच स्वजनों का नाम लेकर लकड़ी वाले टावर के पास आने के लिए कहता है। इन सभी सवालों में यदि कुछ समानता है तो वह है आर्त पुकार। सभी आर्त-भाव से जोर-जोर से पुकार रहे हैं। यहाँ ऋषि-परंपरा और शास्त्र कहते हैं कि यही आर्त पुकार ईश्वर को प्राप्त करने के लिए भी होने से ईश्वर भी मिल जाता है। यह पुकार हृदय की अंतरात्मा की गहराइयों से मुखरित होता है। रोम-रोम गरज उठता है इस पुकार में। भावनाओं के प्रवाह का उद्वेग अपने चरम में होता है उस आर्त पुकार में। अरे! इस पुकार और व्याकुलता से तो ईश्वर भी मिल जाता है, इन बिछड़े हुए व्यक्तियों के परिजन अवश्य मिलेंगे भले ही देर सबेर हो जाए।

व्यवस्था एवं तकनीकी के इस युग में अब कुंभ में सदा-सदा के लिए बिछड़ना एक इतिहास बन गया है। कुछ समय बाद सब सभी से पुन: मिल ही जाते हैं।

31 जनवरी की तुलना में 1 फरवरी को श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि है। ऐसा प्रतीत होता है कि 3 फरवरी तक तीर्थयात्रियों की अच्छी खासी भीड़ रहेगी। झूँसी की ओर संगम घाट तथा गंगाजी के घाटों पर रात्रि के 11 बजे भी तीर्थयात्री स्नान करते दिख जाते हैं। मार्गों पर आने वालों का जन-प्रवाह ठीक-ठाक संख्या में है। सामान्यत: यह प्रवाह रात्रि के दो बजे के समय तीव्र हो जाता है।

पंडालों में कीर्तन-भजन, नाम-जप सतत चल रहा है। कुछ पंडालों में लीलाओं का मंचन भी होता दिखाई दे रहा है। अधिकांश शिविरों के सभा पंडालों

में लोग भरे हुए हैं और सो रहे हैं।

संगम नोज पर तो भीड़ दिन में थी ही, रात्रि में भी कड़ाके की ठंड और कोहरे के मध्य लोग निरंतर स्नान कर रहे हैं। ऐसा जब से कुंभ प्रारंभ हुआ है, तब से देखा गया है अपितु संख्या घटती-बढ़ती रही है। उसमें 27, 28, 29 तथा 30 जनवरी को विशेष मानते हुए अपवादस्वरूप हो सकते हैं। इन दिवसों में तीर्थयात्री महासमुद्र की तरह उमड़ पड़े थे। आठ से दस करोड़ की संख्या, जिधर दृष्टि पड़ती, उधर जन-ज्वार दिखाई पड़ता। इसका वर्णन मात्र से ही रोंगटे खड़े हो जा रहे हैं और रोमांच उत्पन्न हुआ जा रहा है।

जीवंत प्रयागराज का महाकुंभ क्षेत्र

कुंभ क्षेत्र चौबीसों घंटे जीवंत, जाग्रत् और सक्रिय है। अभी रात्रि के 11 बजे भी इतनी चहल-पहल है कि मानो किसी महानगर के सायं का आठ बजा हो। एक पंडाल में भजन चल रहा है। उस परिसर में खड़ा प्रत्येक व्यक्ति भक्ति के भजनों पर थिरक रहा है, चाहे वह दस वर्ष का बच्चा हो या साठ वर्षीय बुजुर्ग; चाहे वहाँ स्त्री हो या पुरुष, सब भक्ति के रस में रमे हैं। परिसर रंग-बिरंगे कई कुंतल महँगे पुष्पों से सजा है। ऐसी सजावट विरले ही देखने को मिलती है। ऐसे कई स्थानों पर भजन-कीर्तन चल रहा है और लोग उसमें आनंद से झूमते हुए भक्ति के उत्साह-उमंग और हर्ष-उल्लास में भाव-विभोर है। इसका वर्णन शब्दों में करना अत्यंत कठिन है।

मार्गों पर लोग हाथ जोड़कर 'सीताराम' का अभिवादन करते हुए तीर्थयात्रियों से प्रसाद ग्रहण करने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। अधिकांश श्रद्धालु और तीर्थयात्री भोजन (प्रसाद) ग्रहण कर ही चुके हैं, लेकिन कोई इक्का-दुक्का भोजन ग्रहण करने के लिए स्वीकार करता है तो आग्रह करने वाले महानुभाव इतने प्रसन्न हो जाते, मानो उनको जमाने की सारी खुशियाँ मिल गई हों। ऐसे अनेक स्थानों पर शिविरों के द्वारों पर और मार्गों पर भी इसी भाव से लोग प्रसाद बाँट रहे हैं। और खास बात यह है कि लोग यह नहीं देख रहे कि क्या बँट रहा है। जिसको पाना है, वह जो कुछ भी मिल रहा है, उसको श्रद्धा से

प्राप्त कर धन्यवाद देकर अपने गंतव्य की ओर अग्रसर हो जाता है।

कछार पार्किंग से ही लोहे की प्लेट डालकर गंगाजी के तट के किनारे-किनारे मार्ग बनाया गया है। कुछ दूर चलने के बाद महाकुंभ क्षेत्र में प्रवेश का मार्ग और मोड़ मिलते गए। प्रयागराज नगर और महाकुंभ क्षेत्र के बीच कुछ दूर तक लिंटरलॉकिंग टाइल्स के द्वारा निर्मित मार्ग है, जिस पर बलदाऊजी का मंदिर और नागवासुकी मंदिर इत्यादि स्थित हैं। इसी मार्ग पर कई स्थानों पर महाकुंभ नगरी में प्रवेश और निकास के मार्ग भी बने हैं। तीर्थयात्री अपनी सुविधा के अनुसार मार्ग का चयन करते हैं। यदि सीधे जाया जाए तो दारागंज होते हुए संगम तक यह मार्ग पहुँच जाता है। कछार पार्किंग से मोटरसाइकिल तथा अन्य दो पहिया वाहनों के प्रवेश की अनुमति है, लेकिन अभी भी चार पहिया वाहनों का प्रवेश वर्जित है। कुछ दूर आने पर सभी दो पहिया वाहन भी दूसरे मार्ग पर डायवर्ट कर दिए जाते हैं।

नागवासुकी मार्ग पर ही अक्षय पात्र संस्था एवं रामभद्राचार्यजी का शिविर है। रात्रि के 11 बजकर 15 मिनट पर दोनों शिविरों के द्वार बंद हैं या फिर प्रहरी द्वार के मध्य बैठकर पहरा दे रहे। कुछ दूर जाने पर बाएँ ओर डेढ़-दो सौ लोग एक स्थान पर बैठे और कुछ खड़े दिखाई दिए। अंदर प्रवेश कर देखा तो ज्ञात हुआ कि अन्न-क्षेत्र है। पंक्ति में लोग दस मिनट से बैठे थे, लेकिन उनके समक्ष थालियाँ नहीं रखी गई हैं। कुछ महिलाएँ कौतूहल से आपस में वार्त्ता कर रही थीं कि देर से लोग बैठे हैं, लेकिन भोजन परोसा नहीं जा रहा है। तभी एक व्यक्ति अन्न-क्षेत्र के संचालकों से वार्त्ता कर आए और बाहर खड़ी अपनी परिचित महिला संभवत: पत्नी से कहा कि सब्जी बन रही है, अभी दस मिनट में प्रारंभ हो जाएगा। इस अन्न-क्षेत्र का परिसर अधिकतम एक एकड़ का होगा, जिसमें एक-एक भाग भोजन कराने का स्थान तथा दूसरे भाग में पाकशाला बनी है। और एक कोने में लोगों के बैठने का स्थान है, जहाँ सौ जन सहजता से बैठ सकते हैं। मूकदर्शक बनकर देख ही रहा था कि एक पच्चीस-तीस वर्ष की युवती पंद्रह-बीस लोगों के समूह का मार्गदर्शन करती हुई आगे-आगे आई और बैठने वाले स्थान के द्वार पर जाकर कहा कि यहाँ अपना सामान एवं बैग

इत्यादि रखकर बैठकर आराम कीजिए। इसी समूह की एक महिला से पूछा कि कहाँ से आ रहे हैं तो इनमें से एक लगभग साठ वर्षीय माताजी ने चेहरे पर अपनी मंद मुसकान बिखेरते हुए मधुर स्वर में उत्तर दिया—झारखंड से।

भंडारे की पाकशाला की ओर जाकर देखा तो बहुत बड़े-बड़े पाँच लकड़ी से जलने वाले चूल्हे बने थे। मसाला और हल्दी पीसने वाली मशीन के साथ-साथ आटा गूँधने की मशीन भी लगी थी। अन्य चार चूल्हे तो बुझे हुए थे, लेकिन एक चूल्हा जल रहा था। एक व्यक्ति अत्यंत श्रद्धामिश्रित व्याकुलता से बड़े से पलटे से जल्दी-जल्दी सब्जी चला रहा था और बार-बार पलटे से एक दो कटे हुए आलू को हाथ से दबा-दबाकर देख रहा था कि पका है या नहीं। अतिशीघ्र सब्जी पकाने और पकने की व्यग्रता उसके हाव-भाव में स्पष्ट दिख रही है और थोड़ी गरदन और दृष्टि उठाकर भोजन की पंगत में बैठे हुए तीर्थयात्रियों को देखे जा रहे थे। संभवत: उनके मन-मस्तिष्क में यही विचार चल रहा होगा कि अतिशीघ्र सब्जी पाकर श्रद्धालुओं को परोसा जाए। अद्‍भुत श्रद्धा है सेवा की भोजन (प्रसाद) प्रदान करने की। यह सब देखकर कोई भी अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकता है। कभी-कभी तो गला रुँध जाता और नेत्रों से अश्रुधारा स्वत: प्रवाहित होने लगती। यह हृदय मानता ही नहीं है और मस्तिष्क पर भारी पड़ जाता है। भावुक लोगों का यही एक दुर्गुण है, जो मस्तिष्क से कम हृदय से अधिक काम लेते हैं और यही उनकी शक्ति भी है। या यह कह सकते हैं कि हृदय तो सदा-सदा मस्तिष्क पर भारी रहा है। उन्हीं को ईश्वर मिला है, जिन्होंने हृदय के अंतरतम गहराइयों में उतरकर ईश्वर को पुकारा और वह दौड़े चले आए। गोपियाँ व उद्धव संवाद, शबरी और महर्षि मातंग, सुतीक्ष्ण और शरभंग, विदुरजी की पत्नी सुलभा, मीराबाई जैसे असंख्य उदाहरण हैं, जहाँ हृदय की पुकार से ही ईश्वर प्राप्त तथा प्रसन्न हुआ है।

□

दस नाम नागा संन्यासी परंपरा

—डॉ. पद्मजा सिंह*

दशनाम संन्यासियों के संबंध में एक विस्तृत एवं प्रामाणिक उल्लेख श्री विद्यारण्य पंच दशीकार द्वारा संपादित ग्रंथ 'श्री विद्यारण्य तंत्र' में हुई है। इस परंपरा में इकहत्तर प्रमुख आचार्य बताए गए, कालांतर में चलकर आचार्य शंकर के चौदह के शिष्य और सम्मिलित हो गए।

प्रमुख आचार्यों एवं विद्वानों ने प्रमाणित किया है कि परमहंस संन्यासी, जिनका वर्णन श्रुति-स्मृतियों में प्रमुखता से हुआ है, आज की जन सामान्य प्रचलित बोलचाल एवं प्रचलित भाषा में नागा संन्यासी एक ही हैं। उपनिषदों में परमहंसों के लक्षणों का विवरण विस्तृत रूप से मिलता है। इसके उत्तम उदाहरण श्रीशुकदेवजी है। आदि शंकर के गुरु गोविंद पदाचार्य भी इसी दिगंबर परंपरा में आते हैं। यह आचार्य शंकर के भाष्य एवं लिखित पुस्तकों से सिद्ध होती है, जिसमें उल्लेख मिलता है कि जब आचार्य शंकर नर्मदाजी के तट पर ओंकारेश्वर में ओम पर्वत पर नव तरुण युवक आचार्य शंकर का प्रथम साक्षात्कार एवं दर्शन अपने गुरु गोविंद पदाचार्य का होता है तो दिगंबर थे। नागा संन्यासियों का विवरण सिकंदर के दरबारी यूनानी लेखकों के साथ-साथ जी.एस. गुरे ने अपनी पुस्तकों में किया है। नागा संन्यासियों के उपास्य भगवान् शंकर भी स्वयं दिगंबर है। विद्वानों ने निष्कर्ष निकाला है कि दिगंबर एवं नागा संन्यासियों तथा परमहंसों को वस्त्र त्याग करना या

* असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय , गोरखपुर

न करना ऐच्छिक बना दिया। कालांतर में दशनाम ग्रंथ में उल्लेख मिलता है कि महाराज पृथ्वीराज चौहान ने और महाराज जय चंद्र दोनों ने नागा संन्यासियों के संगठनों को व्यवस्थित किया था। श्री पृथ्वी गिरी और श्री हरि गिरि भी नागा संन्यासियों के विषय में निष्कर्ष निकलते हुए लिखते हैं कि भारत पर संकटकाल में विदेशी आक्रांताओं से संघर्ष एवं युद्ध में नागा संन्यासी प्राचीन काल से ही समाज और शासकों के साथ सतत सहयोग दिया और इसके उदाहरण भी हमें प्राप्त होते, जब सिकंदर का भारत पर आक्रमण हुआ था।

दस नाम संन्यासियों का संगठन

आचार्य शंकर ने संपूर्ण भारतवर्ष को प्रत्येक दिशा में पुनर्गठित और संगठित किया। इसमें संन्यासियों और नागा संन्यासियों के समूहों को व्यवस्थित सांगठनिक स्वरूप प्रदान करते हुए उनके आध्यात्मिक के साथ-साथ सामरिक सार्थकता के महत्त्वपूर्ण आयाम को संगठित किया। जैसे आजकल की आधुनिक सेना है, उसी प्रकार इन संगठनों की भी रचना आचार्य शंकर ने किया, जिसको हम आधुनिक सेना की भाषा में स्थित रचना और सामरिक रचना कहते हैं। आधुनिक सेना की स्थिर रचना में कमान, एरिया, सब एरिया एवं स्टेशन आते हैं तथा सामरिक रचना में कोर, डिविजन, ब्रिगेड एवं बटालियन होते हैं। उसी प्रकार आचार्य शंकर ने दस नाम संन्यासियों के संगठन की एकता को अविच्छिन्न बनाए रखने के लिए स्थिर एवं सामरिक छोटी-बड़ी इकाइयों की रचना कर उसको धरातल पर उतरकर व्यावहारिक बनाया, वही रचना आज भी बहुतायत व्यवस्थाओं में प्रचलित और मान्य है।

दशनाम नागा संन्यासियों के स्थिर रचना में अमानाय, पद, मढ़ी एवं मठ है। सामरिक रचना में अखाड़ा, दावा, मढ़ी एवं धूनी कहा गया।

शांतिकाल में स्थिर रचना समाज को संगठित तथा रचना को सुंदर एवं व्यवस्थित बनाने का प्रभावी कार्य करती थी, इसमें संन्यासियों एवं

नागा संन्यासियों के चयन तथा प्रशिक्षण का कार्य भी महत्त्वपूर्ण रहता था; लेकिन जब विधर्मियों का आक्रमण, विशेषकर मुसलिम आक्रमण के समय प्रबल आक्रमण का प्रबल प्रतिकार करने के लिए सामरिक रचना सक्रिय हो जाती थी।

वर्तमान में प्रचलित शब्द अखाड़ा 'अखंड' का रूपांतरण है। 'अखंड' शब्द सामान्य बोल चाल की उपयोग में अखाड़ा कहा जाने लगा। मल्ल विद्या और शस्त्र संचालन तथा प्रशिक्षण के केंद्रों आज भी अखाड़ा कहा जाता है अपितु पूर्व में ऐसे ही प्रशिक्षण केंद्रों से संन्यासी, विशेषकर नागा संन्यासी हिंदू युवाओं को ग्राम नगर अंचल स्तर पर नियमित प्रशिक्षण दिया करते थे, ताकि विधर्मियों के आक्रमण के समय ये प्रशिक्षित युवा हिंदू समाज के मठ मंदिरों शिक्षण संस्थाओं रहा बहू-बेटियों-स्त्रियों की रक्षा हेतु प्रभावी संघर्ष कर सकें।

यदि हम अखाड़ों की स्थापना और उनके काल क्रम पर विचार करते हैं तो लिखित प्रमाणों एवं जनश्रुतियों से हमें प्रामाणिक तथा तथ्यपरक सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। 'दस नाम नागा संन्यासी एवं श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी' पुस्तक में अखाड़ों की स्थापना तथा इतिहास का उल्लेख प्रमाणों के आधार पर किया गया है। उपर्युक्त पुस्तक में लिखा है कि प्रथम अखाड़ा आह्वान की स्थापना के लगभग सौ वर्ष के पश्चात् दसनाम संन्यासियों की संख्या बहुत बढ़ गई, उनको एक ही केंद्र से व्यवस्थित और नियंत्रित करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। इसलिए एक अखाड़ा और स्थापित किया गया और वैसी ही व्यवस्था स्वतंत्र रूप से द्वितीय अखाड़े 'अटल' की भी सुनिश्चित की गई। कालांतर में नागा संन्यासियों तथा वैष्णव साधुओं की संख्या में वृद्धि होते-होते अखाड़ों की संख्या भी बढ़ती गई, जो अब चौदह हो गई है।

अटल अखाड़े के बाद महानिर्वाणी अखाड़े का गठन किया गया। महानिर्वाणी के पश्चात् नागा संन्यासियों के आनंद, निरंजनी एवं जूना, ये तीन अखाड़े और स्थापित हुए।

नागा शैव संन्यासियों के कुल सात अखाड़े हैं तथा वैष्णवों के तीन और

दो उदासीन के एवं एक निर्मल सिखों का, कुल मिलाकर चौदह अखाड़े अभी अस्तित्व में हैं।

मुख्यत: नागा संन्यासियों के अखाड़ों का इतिहास देखा जाए तो हम पाते हैं कि मूल तत्त्व एक ही है, लेकिन कुछ परंपराएँ एवं इष्ट आदि भिन्न हैं, जिनका संक्षिप्त उल्लेख निम्नलिखित है—

1. **श्री आह्वान अखाड़ा :** श्री आह्वान अखाड़े की स्थापना संवत् 703 विक्रम संवत् मार्गशीर्ष दिन रविवार को गोंडवाना में की गई थी। इसके इष्टदेव भैरव अर्थात् सिद्ध गणपति हैं। इनके संस्थापकों में श्री मरीचि गिरी, दीनानाथ गिरी, रत्न गिरी, दलपत गिरी, भव हरण गिरी, उदय पुरी, गणेश पुरी, चंदन वन, ओंकार वन, रत्न वन, हीरा भारती, गणपति भारती, हरिद्वार भारती इत्यादि महात्माओं ने प्रमुख भूमिका निभाई थी।
2. **श्री अटल अखाड़ा :** श्री अटल अखाड़े की स्थापना विक्रम संवत् 703 मार्गशीर्ष को रविवार के दिन गोंडवाना में हुई। यहाँ उल्लेखनीय यह है कि श्री आह्वान और श्री अटल दोनों अखाड़ों की स्थापना एक ही दिवस में की गई। श्री अटल अखाड़े के इष्ट देव बुद्धि के अधिष्ठाता श्री गजानन गणेशजी हैं। यह कहा जा सकता है कि दोनों ने अपने-अपने क्षेत्र और कार्य निर्धारित कर लिये, ताकि व्यवस्थित और संगठित तथा प्रभावी संघर्ष किया जा सके। श्री अटल अखाड़े की स्थापना श्री वनखंडी भारती, सागर भारती, शिवचरण भारती, अयोध्या पुरी, त्रिभुवन पुरी, छोटे रणजीत पुरी, श्रवण गिरी, दयाल गिरी, महेश गिरी, हिमाचल वन तथा प्रति वन आदि महात्माओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।
3. **श्री महानिर्वाणी अखाड़ा :** श्री महानिर्वाणी अखाड़ा की स्थापना विक्रम संवत् 805 मार्गशीर्ष सुदी 10 दिन गुरुवार को छत्तीसगढ़ के गढ़ कुंडा के मैदान में श्री सिद्धेश्वर मंदिर के प्रांगण में की गई। श्री महानिर्वाणी के प्रमुख संस्थापकों में श्री रूप गिरी सिद्ध, उत्तम

गिरी सिद्ध, राम स्वरूप सिद्ध, शंकर पुरी मौनी, दिगंबर भवानी पुरी ऊर्ध्वबाहु, देव वन मौनी, ओंकार भारती तथा पूर्णानंद भारती इत्यादि प्रमुख हैं। इन सभी महात्माओं ने अपनी तपस्या के तपोबल से भगवान् पशुपति, देवी दुर्गा, भैरव, सिद्ध गणपति आराधना कर श्री कपिल मुनि के आदेश से महानिर्वाणी की स्थापना का विधिविधान से इसकी परंपराएँ निर्धारित कीं, जो आज भी अखंड रूप से संचालित हो रही हैं।

महानिर्वाणी अखाड़ा की स्थापना के संबंध में काशी के एक स्थान से प्राप्त पोथी में संक्षिप्त, परंतु प्रामाणिक उल्लेख मिलता है। इस पोथी में यह उल्लेख मिलता है कि श्री शंभू गिरी सहित अन्य सात संतों ने हिमालय में स्थित नेपाल में श्री पशुपति नाथजी की प्रचंड आराधना किया, जिससे इनको पशुपतिनाथजी का स्वप्न में आदेश मिला कि सिरहाने एक कंगन रखा है, उसको लेकर गंगासागर जाओ और कपिल महामुनि की तपस्या करो। गंगासागर पहुँचकर तीन वर्ष तक कठिन तप करने के बाद भगवान् कपिल मुनि ने दर्शन देते हुए इनको अखाड़ा स्थापित करने का निर्देश दिया।

श्री महानिर्वाणी के उपर्युक्त आठों सिद्ध तथा अन्य महात्माओं ने श्री गुरु कपिल मुनि के निर्देश पर अलौकिक पवित्रता से युक्त कंगन का नियमित रूप से विधिपूर्वक पूजन करना प्रारंभ कर दिया। जो आज तक निर्विघ्न चली आ रही है। प्रयागराज कुंभ में आह्वान, अटल अखाड़े के साथ-साथ प्रयागवाल के तीर्थ पुरोहितों एवं कुंभ के तीर्थयात्रियों ने संतों का स्वागत करते हुए महानिर्वाणी अखाड़ा की स्थापना करने का आग्रह किया और प्रथम बार महाकुंभ में महानिर्वाणी की धर्मध्वजा स्थापित की गई। आह्वान एवं अटल तथा प्रागराज के निवासियों द्वारा महानिर्वाणी अखाड़ा को सनातन धर्म की रक्षा के लिए नेतृत्व ग्रहण करने का आग्रह किया। इसके साथ ही यह तय किया गया कि सनातन धर्म की रक्षा के लिए स्थापित

आद्यशक्ति भगवती दुर्गा के प्रतीक सूर्य प्रकाश एवं भैरव प्रकाश नामक भालों को, जो अब तक आह्वान एवं अटल के पास थे, महानिर्वाणीजी सँभालेंगे। आज भी ये दोनों भाले महानिर्वाणी अखाड़ा के पास हैं, जिनको विधि-विधान से कुंभ में पूजन करने के बाद स्थापित किया जाता है और जिस दिवस अमृत स्नान होता है, उस दिन स्नान के समय यह भाले सबसे आगे-आगे नागाओं के द्वारा लेकर चले जाते हैं। महानिर्वाणी अखाड़ा के आठ श्री महंत होते हैं। आठ उप महंत होते हैं, बत्तीस मढ़ी अध्यक्ष होते हैं। श्री महंतों के कार्यों में सहयोग देने के लिए आठ कार्यकारिणी सदस्य भी नियुक्त किए जाते हैं। व्यवस्था एवं संचालन के लिए आठ स्थानपति/थानापति नियुक्त किए गए। ये सभी परंपराएँ आज भी निर्बाध गति से संचालित हो रही हैं।

4. **श्री आनंद अखाड़ा :** श्री आनंद अखाड़ा की स्थापना विक्रम संवत् 912 जेष्ठ सुदी चतुर्थी को बरार देश में की गई। श्री आनंद अखाड़ा के संस्थापकों में श्री कथा गिरी, हरिहर गिरी, रामेश्वर गिरी, देवदत्त भारती, शिव श्याम पुरी, श्रवण पुरी तथा हेम वन जी महत्त्वपूर्ण हैं। श्री आनंद अखाड़ा के उपास्य देव श्री सूर्यनारायण हैं।
5. **श्री निरंजनी अखाड़ा :** श्री निरंजनी अखाड़ा की स्थापना विक्रम संवत् 970 मिती वदी 7 दिन सोमवार को कच्छ देश के मांडवी नामक स्थान में सर्वश्री अत्री गिरी मौनी, सरयू नाथ गिरी, पुरुषोत्तम गिरी, हरिशंकर पुरी, रणछोड़ भारती, जगजीवन भारती, अर्जुन भारती, जगन्नाथ पुरी, स्वभाव पूरी, कैलाश पुरी, खड्ग नाथ पुरी, क्षेम वन अग्निहोत्री, उदय वन तथा भीम वन इत्यादि ने मिलकर की। श्री निरंजनी अखाड़ा के उपास्य देव देवताओं के सेनापति व सतीनंदन श्री कार्तिकेयजी हैं।
6. **अग्नि अखाड़ा :** श्री अग्नि अखाड़ा के उपास्य देव सर्व संहारक अग्नि एवं गायत्री हैं। अग्नि अखाड़ा में ब्रह्मचारी रहते हैं।

7. **जूना अखाड़ा :** जूना अखाड़ा की स्थापना विक्रम संवत् 1202 मिती कार्तिक सुदी 10 मंगलवार को उत्तराखंड के कर्णप्रयाग में श्री सुंदर गिरी, दलपत गिरी, लक्ष्मण गिरी, रघुनाथ गिरी, वैकुंठ गिरी, शंकर पुरी अवधूत, वेणी पुरी अवधूत, दया वन, रघुनाथ वन, प्रयाग भारती तथा नीलकंठ भारती आदि ने की थी। जूना अखाड़ा के देव दत्तात्रेय हैं।

इन सभी अखाड़ों की अपनी परंपराएँ हैं। नागा साधुओं में भस्मी का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, इसलिए सभी साधु भस्मी का गोला रखते हैं। सभी अखाड़ों के भस्मी के गोले का अपना निश्चित आकार तय किया गया है। आह्वान का गोला चौखूँटा, कोने पर कुछ गोलाई लिये हुए कुछ ऊँचा होता है। महानिर्वाणी के भस्मी गोले का आकार चतुष्कोण, अटल का आठ पहलू, निरंजनी का गोल, आनंद का शिवलिंग आकार, जूना का गोल, अपितु निरंजनी का गोला थोड़ा छोटा और जूना का गोला थोड़ा बड़ा होता है। इस भस्मी गोले को अखाड़ों के साधु 'शंभू' बोलते हैं।

इस सभी अखाड़ों का अपना अभिप्राय एवं उद्देश्य, संगठन संरचना, संपत्ति एवं धन संचय का विधान तथा प्रबंधन और निषेध एवं संविधान होता है।

□

महाकुंभ

—माधव कृष्ण*

भारतीय मनीषियों ने ज्ञान और प्रकाश को सर्वोच्च स्थान दिया है, लेकिन लगातार बदल रहे समय, परिस्थितियों में ज्ञान प्रासंगिक नहीं रह जाता। उसमें जड़ता आ जाती है। न्यूटन के जड़त्व के नियम के अनुसार, गति की स्थिति में परिवर्तन का विरोध करने की यह प्रवृत्ति जड़ता है। प्रत्येक वस्तु तब तक स्थिर या एक सीधी रेखा में एक समान गति में रहेगी, जब तक कि उसे किसी बाहरी बल की कार्रवाई से अपनी स्थिति बदलने के लिए मजबूर नहीं किया जाता है। जड़ता कट्टरता, मतांधता और अंधविश्वास को जन्म देती है। ठहरा हुआ पानी भी सड़ने लगता है। जैसे नदी अपने स्रोत से जुड़ी रहकर गतिशील रहती है और अपनी गंदगी को दूर करती है, उसी प्रकार हम भी परंपराओं से जुड़े रहकर आधुनिक दृष्टिबोध के साथ अपना निर्मलीकरण करते हैं।

भारतीय संस्कृति ने ज्ञान की गतिशीलता और प्रासंगिकता के लिए नियमित अर्ध कुंभ, कुंभ और महाकुंभ मेलों की परंपरा रखी। यही उस नियम का 'बाहरी बल' है। इन मेलों का ऐतिहासिक मूल महानतम दार्शनिक आदिशंकर द्वारा स्थापित विद्वान् संन्यासियों की संस्था में है, जो नियमित रूप

* निदेशक, उपनिषद् मिशन ट्रस्ट प्रवक्ता, मानव धर्म प्रसार, श्री गंगा आश्रम भूतपूर्व सहायक उपाध्यक्ष, सिटीबैंक सिंगापुर, एन.आई.टी. (बी.टेक.), आई.आई.एम. अहमदाबाद, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर (एम.बी.ए.)

से विभिन्न सिद्धांतों की विवेचना और वाद-विवाद के लिए गठित की गई थी। इन पर विमर्श होने के बाद स्वीकृत सिद्धांत सभी संप्रदायों द्वारा स्वीकार किए जाते थे। ज्ञान, भक्ति, वैराग्य पर किसी विशेष वर्ग का अधिकार न रहे और यह सबके लिए सुलभ रहे, इसलिए इन मेलों को सार्वजनिक स्थान पर संगम के किनारे आयोजित किया जाता है, जहाँ रहकर कोई भी व्यक्ति ज्ञानसभा का लाभ उठा सकता है।

संगम का अर्थ ही है—सम्मिलन। जैसे अपनी विभिन्नताओं के बाद भी गंगा, यमुना और सरस्वती एकरूप होकर नहाने वालों को लाभ पहुँचाती हैं, उसी प्रकार अपनी सांस्कृतिक और वैयक्तिक विभिन्नताओं के बाद भी प्रत्येक मनुष्य आध्यात्मिक रूप से एक है। ऋग्वेद के मंत्र 10/191/3 के अनुसार, "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते।" हम सब एक साथ चलें, एक साथ बोलें, हमारे मन एक हों, जिस प्रकार पहले के विद्वान/देवता अपने नियत कार्य के लिए एक होते थे, उसी प्रकार हम भी साथ में मिलते रहें। एक होकर रहने में ही सबका हित है। हम जब अपने ज्ञान के साथ अपनी कुटिया में बैठे रहते हैं, तब ज्ञान की व्यावहारिक उपयोगिता सिद्ध नहीं होती है। इसलिए ज्ञान को लेकर जगद्गुरु श्रीकृष्ण की भाँति जीवन-युद्ध के कुरुक्षेत्र में उतरना पड़ता है। जिस आध्यात्मिकता से मनुष्य मात्र की प्रत्येक समस्या का समाधान नहीं मिल सकता, वह आध्यात्मिकता व्यर्थ वायवीय चिंतन से अधिक कुछ नहीं है।

महाकुंभ में कुंभ का अर्थ है—कलश या घड़ा। यह कलश हमारे शरीर का प्रतीक है। संत रामानंद के महान् शिष्य ने भी शरीर के लिए इस रूपक का प्रयोग किया है : जल में कुंभ कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी। फूटा कुंभ जल जल हि समाया, यह तथ कह्यो ज्ञानी। कामना, क्रोध और लोभ के वशीभूत होने के कारण इस कुंभ में विकार, दुर्गुण जैसे विष भरते जाते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार अमृत की कुछ बूँदें संगम में गिर

गई थीं। महाकुंभ में स्नान करने से शारीरिक अशुद्धियाँ दूर होती हैं, विभिन्न संतों की अमृतमयी वाणी और उनके साहचर्य से मानसिक शुद्धि होती है। इस प्रकार हमारे कुंभ या शरीर में पुनः अमृत भर जाता है। 'जस की तस धर दीन्ही चदरिया' के लिए आवश्यक है, आत्मा पर जमती जा रही धूल को साफ करना और यही महाकुंभ का उद्‌देश्य है।

महाकुंभ के जीवित कैनवास पर पारंपरिक संगीतो, दर्शन, धर्म, उल्लास, अनुष्ठानों, प्रार्थनाओं, दान इत्यादि के मानवीय रंगों से सत्य की शाश्वत खोज के चित्र उकेरे जाते हैं। भौगोलिक, वैयक्तिक, धार्मिक, भाषाई और सांस्कृतिक सीमाएँ लाँघकर आने वाले करोड़ों लोगों के 'मैं कुछ हूँ' का भाव महाकुंभ में विगलित हो जाता है। मैं कुछ हूँ या फिर देखने वाला किसी दृश्य से एकात्मता स्थापित कर ले, इसे ही महर्षि पतंजलि ने अपने योगदर्शन में 'अस्मिता' नामक क्लेश बताया है। इस क्लेश के कारण ही हमने स्वयं को विशुद्ध आत्मा या मनुष्य मानने के स्थान पर किसी विशेष जाति या धर्म या शरीर या लिंग या भाषा या राष्ट्र या विचारधारा का मान लिया। इस प्रकार हम अपने को विशेष और दूसरों से अलग मानकर उनसे द्वेष या राग करने लगे। ऐसे क्लेश दूर करने का एकमात्र उपाय है : क्रियायोग अर्थात् तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान की त्रयी। पवित्र नदियों की त्रयी पर यह क्रियायोग बड़ी सहजता से मिल जाता है। महाकुंभ में करोड़ों लोगों के बीच अपने कुछ होने का भान ही नहीं रहता।

मनुष्यता, जिसे हम सनातन धर्म कहते हैं, की विभिन्न धाराओं की एकसूत्रता का केंद्र महाकुंभ है। अलग-अलग मतों, इष्टों में विभाजित अखाड़ों में एक अखाड़ा गुरुनानक देवजी के पुत्र चंद्रदेवजी का उदासीन अखाड़ा भी है। यह तथ्य भारतभूमि पर पनपने वाले सभी धर्मों-संप्रदायों की एकता का शंखनाद करता है। जाति, वर्ण, वर्ग और धार्मिक उपेक्षाएँ संगम की पवित्र जलधारा में बह जाती हैं। तीन नदियों की एक धारा दर्जनों घाटों से बहती है और उसमें सैकड़ों जातियों के करोड़ों मनुष्य अपनी अहमन्यता

छोड़कर नहाते हैं। अस्तित्व के सनातन प्रवाह में महाकुंभ का जीवंत महोत्सव हमसे दुराग्रह, जड़ता और संकीर्णता त्यागकर ज्ञान–भक्ति–वैराग्य का अमरत्व लेने के लिए प्रेरित करता है। यह अमृत ही हमें सदा चलने वाले देवासुर संग्राम में आसुरी शक्तियों को परास्त करने के लिए आवश्यक ऊर्जा और शक्ति देता है। महाकुंभ हमें आत्मावलोकन का अवसर देता है। हम सब एक हैं और महाकुंभ इसका जीवंत दस्तावेज है।

□□□